राजभाषा हिंदी
के नवोन्मेषी आयाम

नई शिक्षा नीति-2020 के लिए उपयुक्त पुस्तक

राजभाषा हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी पक्षों का अन्वेषण

राहुल खटे

समर्पण

यह पुस्तक मेरे गुरुजनों,
मेरे माता-पिता, जीवनसाथी
और मित्रों को सपर्पित है,
जिन्होंने मुझे जीवन के
अच्छे-बुरे क्षणों में
मेरा साथ दिया
और मुझे
निरंतर प्रेरणा देते रहें।

भूमिका

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के साहित्यिक, भाषाई, तकनीकी और वैज्ञानिक पहलुओं का अन्वेषण करना है। राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आने वाली तकनीकी समस्याओं के समाधानों की खोज करना इस पुस्तक का मुख्य लक्ष्य है। शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी और भारतीय भाषाओं को कैसे शामिल किया जाए, इसके रचनात्मक उपायों पर विचार करना इस पुस्तक की विशेषताएं हैं। इन बिंदुओं को ध्यान में रखकर संबंधित लेख लिखे गए हैं ताकि, आने वाली पीढ़ी को समस्याओं का समाधान मिल सके। केवल समस्याओं का बखान करने से बात नहीं बनती है, बल्कि उनके समाधान के रास्ते हमें स्वयं खोजने पड़ेंगे, उन्हीं रास्तों को खोजने का यह प्रयास है। ‘राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम’ इस पुस्तक की यही विशेषता हैं, जिसमें ‘समस्या से ज्यादा समाधान पर ध्यान’ केंद्रित किया गया है। संबंधित लेख मैंने अपने जीवन के अनुभव और हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग में आने वाली समस्याओं को कैसे दूर किया जा सकता हैं, इसे लक्ष्य बना कर लिखे हैं। दरअसल यह सभी शोध आलेख हैं, जिसे मैं शोध प्रबंध (P.hd) में शामिल करना चाहता था। इस पुस्तक के माध्यम से यह कार्य करने की सफल को कोशिश की गई हैं।

यह पुस्तक भारतीय भाषाओं और तकनीकी के बीच एक सामंजस्य बिठाने का प्रयास किया हैं। इस पुस्तक में मैंने हिंदी के तकनीकी नवीनतम पहलुओं पर प्रकाश डाला हैं, जो कि आधुनिक वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी के तकनीकी स्वरुप को प्रदर्शित करेगा और इसके प्रयोग को बढ़ाएगा। इससे हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं की विस्तार से जानकारी दी हैं, जैसे कि ऑन स्क्रिन किबोर्ड, गुगल वॉइस टाइपिंग, भाषिणि और अन्य उपलब्ध उपकरण आदि, जो शिक्षा और कार्यालीन कार्य दोनों में सहायक हो सकते हैं।

इस पुस्तक में अन्य तकनीकी सुविधाओं के बारे में भी जानकारी दी गई हैं, इसके 'विज्ञान विशेष' में 'भारतीय विज्ञान की परंपरा राष्ट्रीय विज्ञान के परिप्रेष्य' आयोजित विशेष सेमिनार की जानकारी दी गई हैं, जो कि सभी विद्यार्थियों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। इसमें 'डाटा मेल' भारतीय भाषाओं में ई-मेल सुविधा उपलब्ध कराने के ऐप

के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई हैं, जिससे भारतीय भाषाओं में ई-मेल आईडी निर्माण करने की विधि और प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया गया हैं। साथ ही साथ माइक्रोसॉफ्ट-10 भारतीय फोनेटिक कीबोर्ड की जानकारी दी गई हैं, जिसमें भारतीय भाषाओं में काम करने में सुविधा होगी।

'स्वयंप्रभा' आर्टिकल में पोर्टल में अपने घर पर ही टीवी के उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में कैसे किया जा सकता हैं, इस विषय पर विचार-विमर्श किया गया है, जो न केवल विद्यार्थियों के लिए बल्कि पाठकों के लिए भी काफी हितकारी होगा। साथ ही गूगल और माइक्रोसॉफ्ट के सभी उपयोगी ऐप की जानकारी विस्तार से दी गई हैं, जिसमें हिंदी और भारतीय भाषाओं में ई-मेल आईडी बनाना शामिल हैं। यह पुस्तक तकनीकी विशेषताओं से भरपूर हैं।

यह पुस्तक भारत की शिक्षा नीति एवं राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। 'क्या हम सर्वश्रेष्ठ भारतीय हैं?' इसमें भारतीय प्राचीन ज्ञान एवं विज्ञान की विस्तार से चर्चा की गई हैं। भाषा की भाषिक एकात्मकता को 'भाषा संगम' लेख वर्णित करता हैं। भारत की भाषा नीति और राजनीति नीति लेख भाषा की व्यवहारगत समस्याएं और उनके समाधान को दृष्टिगत करता हैं। 'भाषा संगम' 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के माध्यम से भारतीय भाषाओं की एकता को प्रस्तावित करने का सफल प्रयास हैं।

माइक्रोसॉफ्ट एप्लीकेशन के प्रयोग माध्यम से कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को और भी गति मिलेगी। हिंदी में विज्ञान की उपलब्धता और पाठ्यक्रम में नई शिक्षा नीति से संबंधित उद्देश्यों को शामिल किया गया हैं। किसानों की आत्महत्या के कारणों और समाधान को व्याख्यायित करने वाले लेख भी शामिल किया गया हैं। चौरासी लाख योनियों या डार्विन का विकासवाद; सही क्या? लेख में डार्विन विकासवादी सिद्धांत और दशावतार की मान्यताओं के बीच सामंजस्य बिठाने का प्रयास किया गया हैं। वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्रों के शब्दों के प्रयोग में पाए जाने वाले शब्दों का भारतीय मूल को खोजने का एक प्रयास किया हैं।

कुल मिलाकर यह पुस्तक भारतीय भाषाओं के प्रयोग को जन-सामान्य के लिए उपयोगी बनाती हैं। यह पुस्तक भाषा, साहित्य, कला, शिक्षा, पत्रकारिता और अनुसंधान के सभी क्षेत्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी यह मेरी आशा हैं।

राहुल खटे

लेखक

आत्मनिर्भर भारत को साकार करती पुस्तक

राहुल खटे जी जैसे लेखक निरंतर अपनी शब्द ऊर्जा से राजभाषा हिंदी की अलख समाज में जगाए रखने में प्रयासरत रहते हैं। उनकी इस नई पुस्तक राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम को राजभाषा हिंदी के अद्यतन स्वरूप के महत्वपूर्ण दस्तावेज की संज्ञा दी जा सकती हैं। इस पुस्तक में उन्होंने अपने कुछ चुनिंदा आलेखों के माध्यम से विज्ञान, तकनीकी और साहित्य में हिंदी के नवोन्मेषी आयामों का विस्तार से विमर्श किया हैं।

पुस्तक में राहुल जी ने अपनी व्यक्तिगत अनुभवों के साथ हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति में प्रौद्योगिकी और देश के तकनीकी शब्दावली आयोग के महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला हैं। दशावतारों तथा 84 लाख योनियों का विकासवाद से संबंध जैसे रोचक विषयों पर देश की वैज्ञानिक परंपराओं से लेकर विविध भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन की प्रासंगिकता, आवश्यकता, हिंदी में विज्ञान-तकनीकी साहित्य की उपलब्धता और नए वैज्ञानिक पाठ्यक्रमों के दृष्टिकोण से उसकी अनिवार्यता पर गहन चिंतन से लबरेज आलेख पुस्तक को समाजोपयोगी बनाते हैं। रामचरितमानस में विज्ञान के दर्शन कराता एक लेख पाठकों को बरबस ही अपनी ओर आकर्षित करेगा।

राजभाषा सहित देश की समस्त संवैधानिक भाषाओं के डिजिटल स्वरूपों की विस्तार से व्याख्या करते हुए पुस्तक में एक जगह राहुल खटे लिखते हैं कि 'नए उपकरण न केवल कंप्यूटिंग को समावेशी बनाने में मदद करेंगे, बल्कि उनसे भारतीय भाषाओं में टंकण की गति और सटीकता में भी कम से कम 20 प्रतिशत सुधार होने की उम्मीद हैं।' निःसंदेह ऐसी आशाएं भाषाओं के बदलते मशीनी स्वरूपों द्वारा जन-जन के लिए अधिक सहज एवं सरल रूपों में उपलब्ध हो सकेंगी। वे एक लेख में माइक्रोसॉफ्ट की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा करते हैं।

पुस्तक में स्वयंप्रभा नामक राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी योजना का भी उल्लेख किया गया हैं, जो डिजिटलीकृत भाषाओं, कक्षाओं और डिजिटल पुस्तकालय द्वारा भारतीय समाज के प्रत्येक वर्ग तक शिक्षा के प्रसार का अद्भुत और सफल माध्यम साबित हो रहा हैं। वहीं एक लेख में टेलीविजन के माध्यम से देश में साक्षरता, कृषि, रोजगार संबंधी सूचनाओं को ग्रामीणों तक पहुंचाने में भाषाओं के योगदान को स्पष्ट किया गया हैं।

ई-मेल के बढ़ते प्रयोगों को देखते हुए अब देवनागरी लिपि में भी ईमेल-आईडी बनाए जा सकने की विस्तृत जानकारी देता, एक लेख भी इस पुस्तक में शामिल हैं। इससे निश्चित रूप से पाठकों को अपने ईमेल आईडी हिंदी में बना पाने में सहायता मिलेगी। वहीं राजभाषा को नवोन्मेषी आयाम प्रदान करने वाले दो और पहलुओं भारत की शिक्षा और राजभाषा नीतियों की भी व्याख्याएं की गई हैं। भारत को एक और श्रेष्ठ देश बनाने में भाषाओं की अहम भूमिका का सराहनीय अन्वेषण भी पुस्तक में देखा जा सकता हैं। यह पुस्तक 'आत्मनिर्भर भारत' के सपने को साकार करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

राहुल खटे जी को हार्दिक शुभकामनाएं और आभार कि देश में आजादी के अमृत महोत्सव की इस बेला में सभी हिंदी प्रेमी पाठकों को भाषा के नवोन्मेषी स्वरूप को समझने और जानने के लिए इस पुस्तक का सृजन किया हैं। मुझे पूर्ण विश्वास हैं कि यह पुस्तक बेहद उपयोगी साबित होगी।

मंगलकामनाओं सहित,

शुभ्रता मिश्रा

विज्ञान लेखिका, गोवा

मंतव्य

आजादी के अमृत महोत्सव के सुअवसर पर राष्ट्र व राष्ट्रभाषा हिंदी की आस्मिता को सर्वोपरि मान, हिंदीत्तर भाषी प्रदेश महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले में कार्यरत कर्मठ राजभाषा प्रबंधक श्री राहुल खटे का सराहनीय कार्य है - 'राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम'।

उनकी यह नई पुस्तक निजी अनुभव व अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति की पावन ज्ञान गंगा के अद्यतन मोतियों का संकलन हैं। यत्र-तत्र, सर्वत्र भारतीय भाषाओं के साथ राजभाषा को टैक्नॉलोजी, आगामी कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस), सरकारी संगठन, बैंकों, सार्वजनिक उपक्रमों भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में कार्य हेतु निःसंदेह एक मील का पत्थर साबित होगी।

आज देश ज्ञान-विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विस्मयकारी गति से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हो रहा हैं, ऐसे पावन पर्व में 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल' उक्ति को चरितार्थ कर, आधुनिकीकरण की भ्रमपूर्ण व्याख्याओं से दिशाहीन नई पीढ़ी को मातृभाषा का परिचय घर और अपने परिवेश से ही कराकर, हम सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, सांस्कृतिक अथवा साहित्यिक जैसे क्षेत्रों में भारत के भविष्य से सकारात्मक परिणामों की आशा कर सकते हैं।

पुस्तक के लेखक श्री राहुल खटे जी ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को अधिक उन्नत बनाने के विभिन्न प्रयासों की ओर आशावादी दृष्टिकोण से हमारा ध्यान आकृट किया हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रति लगन, निष्ठा और आत्मीयता से सेवा करने वाले श्री राहुल खटे जी को उनकी नई पुस्तक 'राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम' के प्रकाशानार्थ हार्दिक अभिनंदन।

डॉ. संजय श्रीरामजी धोटे
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
यशवंत महाविद्यालय, वर्धा

तकनीक से समृद्ध हिन्दी : मंतव्य

हिंदी अब तकनीक से समृद्ध हो चुकी हैं। तकनीक से जुड़े ज्यादातर आयामों और प्रारूपों को हिंदी आत्मसात कर चुकी हैं। इससे पता चलता हैं कि हिंदी की नवीनतम प्रौद्योगिकी को ग्राह्य करने की क्षमता विलक्षण हैं। तकनीक के इन्हीं नवोन्मेषी आयामों का अभिलेख हैं।

श्री राहुल खटे की पुस्तक 'राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम' यह पुस्तक यह बताती हैं कि हिंदी में विभिन्न विषयक काम करने के लिए कौन-कौन से सॉफ्टवेयर विकसित कर लिए गए हैं। इनसे जुड़ने की लिंक क्या है और इन्हें प्रयोग में कैसे लाते हैं। इनसे जब हम परिचित हो जाते हैं, तो सहज ही इस आत्मविश्वास से भर जाते हैं कि हिंदी में हम न केवल साहित्य लेखन, पत्राचार अपितु वे सब व्यावसायिक कार्य भी कर सकते हैं, जो हमें आजीविका के लिए रोजगार देने वाले हैं। भाषा कोई भी हो, जब हमें रोजगार देने लगती हैं, तो उसे सीखने की ललक स्वाभाविक रूप से मन-मस्तिष्क में उत्पन्न हो जाती हैं। मजे की बात यह हैं कि ये सभी सॉफ्टवेयर नि:शुल्क अंतर्जाल पर उपलब्ध हैं अर्थात् नया सीखने के लिए जेब में हाथ डालने की जरूरत नहीं हैं।

वर्तमान समय तकनीक का यानी 'टेक्नोयुग' है और इस युग में ब्रह्मांड से जुड़ने का माध्यम, मसलन मोबाइल हमारी मुट्ठी में हैं। अब इस ब्रह्मांड में किस ग्रह अर्थात् किस गंतव्य पर जाना हैं, उसका रास्ता सॉफ्टवेयर आसानी से सुझा देते हैं। बुद्धि के पर्याय ये सॉफ्टवेयर मार्गदर्शक की भूमिका में एक योग्य शिक्षक की भांति मोबाइल के रूप में हमारे साथ हैं। लेकिन इस तकनीक को ठीक से समझने और उसे क्रियान्वित करने की लगभग संपूर्ण जानकारी इस पुस्तक में लिपिबद्ध हैं। यह पुस्तक आपको बताती है कि हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीक ने कौन-कौन सी व्यावहारिक उपलब्धियां हासिल कर ली हैं। कंप्यूटर को ऑपरेट करने के लिए माइक्रोसॉफ्ट ने किन-किन भारतीय भाषाओं में की-बोर्ड यानि कुंजीपटल से टंकन करने से गति बढ़ना स्वभाविक हैं। भारत सरकार ने ई-शिक्षा को बढ़ावा देने की

दृष्टि से 'स्वयंप्रभा' सॉफ्टवेयर के माध्यम से डिजिटल ज्ञान का पिटारा खोल दिया। देवनागरी लिपि में यदि आपको अपना ई–पता बनाना है तो उसे कैसे बनाएं, यह सरल विधि इस पुस्तक से आप जान लेंगे। भारत की भाषा-नीति और भाषाओं के परस्पर संगम से 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' बना देने की चिंता व सुझाव भी इस पुस्तक में हैं।

अब आजीविका से जुड़ा कोई भी कार्य क्षेत्र विशेष से जुड़ा होकर क्षेत्र विशेष में ही सिमटा नहीं रह गया हैं। इसकी व्यापकता वैश्विक हुई है। अतएव किसी भी भाषा में उपलब्ध तकनीक तभी महत्वपूर्ण हैं, जब हम संचार के सभी माध्यमों से लेकर ई-शिक्षा, ई-व्यापार, ई-बैंकिंग, ई-कृषि, ई-यातायात आदि-इत्यादि की सुविधाएं प्राप्त करने के लिए भाषाई तकनीक को प्रयोग में लाकर इच्छित कार्य संपन्न कर सकें। इस हेतु कौन-सी अर्जी (एप्लीकेशन) किस-किस एप के माध्यम से संपादित की जा सकेगी यह जानकारी इस पुस्तक के अध्याय 'माइक्रोसॉफ्ट के उपयोगी एप्लीकेशन' में से हैं।

आमतौर से तकनीक से जुड़ी पुस्तकों में साहित्य और प्राचीन भारत में तकनीक होने की उपलब्धता को दर्शानें से भारतीय लेखक बचते हैं। परंतु इस हीनताबोध से राहुल खटे सर्वथा मुक्त हैं। अतएव वे पूरी ईमानदारी से हिंदी में विज्ञान लेखन और लेखकों की चर्चा करतें है, वहीं हिंदू मिथक माने जाने वाले दशावतारों के जैविक विकास के क्रम में वैज्ञानिकता सिद्ध करने की बात भी स्पष्ट करते हैं। ये अध्याय शायद उन्होंने इसलिए उद्धृत किए हैं, जिससे आम पाठक और विद्यार्थी इस हीनता बोध से मुक्त रहें कि भारत विज्ञान के ज्ञान से अछूता था? अतएव वे अध्याय पढ़ते हुए हमें यह बोध होता हैं कि हमारी ज्ञान-परंपरा ही ज्ञान की वह धारा है, जो बहकर दुनिया में पहुंची और ज्ञान के विचार इसी वैचारिकता से साक्षात्कार कर दुनिया ने ग्रहण किए। पुस्तक की भाषा अत्यंत सरल और प्रवाहमयी हैं। निश्चित ही यह पुस्तक सरकारी कार्यालयों और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रमोद भार्गव

वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार
'शब्दार्थ' 49ए, श्रीराम कालोनी,
शिवपुरी (मध्य प्रदेश)

शुभकामनाएं

19वीं सदी से जब हमने 20वीं सदी में कदम रखा तो हम बैलगाड़ी युग से विज्ञान युग में पहुंचे। इस विज्ञान युग का उत्तरकाल तकनीकी क्षेत्र में नव-नूतन प्रयोग एवं अन्वेषण करता हुआ दिखाई देता है। मनुष्य की आवश्यकता ने विज्ञान और तकनीकी खोज को और भी प्रोत्साहित किया। यही कारण है कि 20वीं सदी के उत्तर तकनीकी काल के बाद 21वीं सदी में हमने नव तकनीकी युग में पदार्पण किया। हमने लेखन, वाचन, दृश्य आवाज, वाणी लेखन, लेखन वाणी जीवित लेखन, ऑनलाइन शब्दकोश, साहित्य को ऑनलाइन सामाजिक माध्यम, मनोरंजन के विभिन्न माध्यम न जाने कितने ही क्षेत्रों में प्रगति कर ली है।

ऐसे ही नव-नवीन खोजों को अपने लेखों में शामिल कर उसे पुस्तक रूप में आकार दिया जाना एक सुखद बात है। हमने देखा हैं कि पाठक पुस्तकों से अक्सर दूर होता हुआ नजर आता है। किंतु यहीं पाठक नूतन एवं नए विषयों को आज भी पढ़ना पसंद करता है। आज ऐसे ही सामग्री से युक्त पुस्तकों की नितांत आवश्यकता हैं। यह पुस्तक इन मापदंडों पर खरी उतरती है। वर्तनी शुद्धिकरण के बहाने हिंदी राजभाषा अधिकारी भारतीय स्टेट बैंक के राहुल खटे जी की आगामी पुस्तक पढ़ने का सु-अवसर मिला। आपकी यह पुस्तक अध्ययन एवं विद्वत्तापूर्ण निर्मित किए गए नूतन, मौलिक, सृजनात्मक विभिन्न लेखों का संकलन है। यहां आध्यात्मिक विज्ञान और तकनीकी विज्ञान का समन्वय देखा जा सकता है।

मैं उनके इस कार्य की सराहना करते हुए उन्हें इस पुस्तक के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

डॉ. सुनील गुलाबसिंह जाधव

हिंदी साहित्यकार, नांदेड-महाराष्ट्र

अनुक्रम

भारत की शिक्षा नीति

और

राजभाषा नीति

जैसा कि सभी जानते हैं कि भारत 15 अगस्त, 1947 को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद हुआ। यह सभी समझते हैं कि उसी दिन स्वतंत्र हुए। लेकिन यह एक बहुत बड़ा भ्रम था। महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के सामने बिना किसी शर्त के पूर्ण स्वतंत्रता की मांग रखी थी। लेकिन भारत के ही कुछ स्वार्थी लोगों ने अंग्रेजों की राष्ट्र-विरोधी शर्तों को सशर्त स्वीकार कर लिया। अंग्रेजों को पता था कि यह देश अपनी भाषा के बल पर आगे और प्रगति कर सकता है। इसी को रोकने के लिए अंग्रेजों ने कुछ अंग्रेजी प्रिय भारतीयों के साथ मिलकर भारतीय शिक्षा पद्धति में संस्कृत को स्थान न देने जैसे राष्ट्र विरोधी शर्ते भी शामिल की। अब प्रश्न यह उठता हैं कि ऐसी स्थिति उत्पन्न क्यों हुई? समस्या जितनी गंभीर होती हैं, उसके कारण भी बहुत शोधगम्य होते हैं। इसकी शुरुआत भी आजादी के पहले से होती हैं। मैकाले नामक अंग्रेज के ही वह जहरीले बीज हैं, जो अब फलीभूत हो रहे हैं। दरअसल, अंग्रेजों ने भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का सर्वेक्षण करने के बाद, जो शिक्षा नीति भारत को गुलाम बनाए रखने के लिए बनाई थी, वही नीति स्वतंत्रता के बाद भी कुछ लोगों द्वारा जारी रखी गई, जिसका परिणाम हैं कि आज हमारी शिक्षा व्यवस्था रोजगार की गारंटी नहीं देती। शिक्षित होने के बावजूद नैतिकता की कोई गारंटी नहीं हैं तथा स्थिति तो और भी बदतर तब हो जाती हैं, जब पढ़े-लिखें शिक्षा प्राप्त लोगों में इन सभी स्थितियों के बारे में उदासीनता पाई जाती हैं। उनमें न भारतीय संस्कृति के प्रति आदर हैं और न ही उन्हें इसकी परवाह हैं।

उच्च शिक्षा प्राप्त आधुनिक पीढ़ी के मन में भारतीय इतिहास के बारे में गौरव की भावना नहीं हैं, क्योंकि उनके पाठ्यक्रम में हमने वहीं परोसा हैं, जिसका परिणाम यह निकला कि वे अपने आप को सर्वश्रेष्ठ भारतीय समझने के बजाय, अपने आप को कुंठित एवं दबे-कुचले महसूस करते हैं। इसका कारण कोई और नहीं उनका अपना पाठ्यक्रम हैं, जिसमें ज्ञान-विज्ञान का संपूर्ण स्रोत पश्चिमी विद्वान हैं। उन्हें भारतीय वैज्ञानिकों का नाम भी पता नहीं होता हैं। उनके लिए भारत तो केवल जमीन का टुकड़ा मात्र हैं। ऐसा हो भी क्यों न? अंग्रेजों की खुराफाती दिमाग जाते-जाते भी हमें भेद-भाव और अज्ञान की शिक्षा विरासत में दे गए।

किसी ने सच ही कहा हैं कि कोई भी देश अपने भविष्य का निर्माण नहीं कर सकता, जो अपने अतीत को भूल जाता हैं, इतिहास उसे भूला देता हैं। पश्चिमी शिक्षा हमें डार्विन का विकासवाद सिखाती हैं, लेकिन आत्मा के अस्तित्व पर हमें आज भी संदेह हैं। हमने वैश्वीकरण को तो अपनाया हैं, लेकिन 'वसुधैव कुटुंबकम्' का नारा भूल गए हैं। आर्यभट्ट नामक उपग्रह हमने अंतरिक्ष में स्थापित किया हैं, लेकिन हमारे बच्चों के पाठ्यक्रम में आर्यभट्ट नामक उपग्रह हमने अंतरिक्ष में स्थापित किया है, लेकिन हमारे बच्चों के पाठ्यक्रम में आर्यभट्ट के बारे में एक भी पाठ नहीं हैं। सुश्रुत हॉस्पिटल की नेमप्लेट लगी हैं, लेकिन सुश्रृत महाशय कौन हैं, हमें नहीं पता। जिस संस्कृत की वैज्ञानिकता पर स्वयं नासा शोध कर रही हैं, वह हमारे देश की शिक्षा में हो अथवा न हो, इस पर विवाद है। ऐसे कई सारे उदहारण हैं, जो केवल भ्रम के कारण पैदा किए गए हैं।

अब सवाल उठता हैं कि इन सब में निजात कैसे पाया जाए? इसका एक आसान सा उपाय हैं, शिक्षा नीति में भाषा को उचित सम्मान देना। भारतीय भाषाओं को शिक्षा की प्रायः सभी विधाओं में गौण माना गया हैं। विज्ञान की दौड़ में हम यह भूल गए हैं कि प्रकृति का भी अपना एक विज्ञान हैं, जिसे हमारे मनीषियों/ऋषियों ने जाना था। प्रकृति की पूजा करने के पीछे इसी प्राकृतिक विज्ञान को समझना था। भारत के सभी उत्सव/त्योहार प्रकृति के परिवर्तनों से जुड़े हैं। प्राचीन ग्रंथों में वर्णित सिद्धांतों पर आज भी शोध की आवश्यकता हैं। इसमें भाषा के अध्ययन की विशेष भूमिका हैं। संस्कृत, जिसे कुछ लोग मृत मानते हैं, भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में उसके आज भी शब्द तत्सम/तद्भव और अपभ्रंश रूप में जीवित हैं। बायनरी सिस्टम, जिससे कंप्यूटर की प्रणाली चलती हैं, उसे हमारे पिंगल ऋषि ने सर्वप्रथम दुनिया के सामने रखा (विश्वास करना भी कठिन हैं) आर्यभट्ट के गणित सिद्धांत आज भी

गणित विषय का भूषण बने हुए हैं। डार्विन के विकासवाद को यदि पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत के साथ जोड़कर देखा जाए, तो पुनर्जन्म के सिद्धांतों में भी विकासवाद की छाप दिखाई पड़ती हैं। 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य जन्म की प्राप्ति का सिद्धांत इसी विकासवाद की ओर इशारा करता हैं। अपने पूर्वजों को बंदर मानने से बेहतर हैं कि हम ऋषियों को अपना पूर्वज माने। गोत्र प्रणाली हमारे पूर्वजों के नामों की तरफ ही इशारा करती हैं कि हम उस ऋषि के कुल में उत्पन्न हुए हैं। दशावतारों की कहानी भी मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर विकासवाद की कड़िया ही लगती हैं। मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंह, परशुराम, वामन, राम तथा कृष्ण/बलराम का स्वरूप जीव सृष्टि के उत्पत्ति से लेकर आज तक के विकसित मानव का ही तो वर्णन हैं। केवल अलंकारिता और चमत्कारों को थोड़ा अलग रखें, तो अवतारों का क्रम मनुष्य विकास की अवस्थाओं की ओर संकेत करता हैं। भारतीय आयुर्वेद और योग की महिमा से आधुनिक विश्व की तरफ इशारा करती हैं, कुछ अवतार जल से जीवन के प्रारंभ होने के वैज्ञानिक तथ्य की तरफ इशारा करती हैं, कुछ अवतार उभयचर जीव तो पूर्णतः जलचर से विकास होकर उभयचर बनने की तरफ संकेत देता हैं। वराह अवतार पूर्णतः जमीन पर जीने वाले जीवों के विकास की ही कहानी हैं। नृसिंह प्राणि सद्दश मनुष्य के विकास का ही एक चरण हैं, वामन रूप छोटे बच्चे के रूप में विकास का ही एक रुप हैं। परशुराम आक्रामकता और युद्धों को दिखाता हैं जबकि उसके बाद पुरुषोत्तम राम का रुप पूर्ण मानव का प्रतीक हैं, जो न केवल पूर्ण शारीरिक रुप से बल्कि बौद्धिक रूप से भी मनुष्य के विकास को इंगित करता हैं। कृष्णावतार, पशुपालक (गोपालक) मनुष्य का रूप हैं और उनके भाई बलराम के कंधों पर दिखाई देने वाला हल कृषिव्यवस्था का ही प्रतीक हैं। यह क्रम मनुष्य के विकास के ही विविध चरण हैं। जिसे अलंकारिता और अतिश्योक्तियुक्त वर्णन ने काल्पनिक बना दिया, जो कि वास्तविक नहीं हैं।

दरअसल, पाश्चात्य विद्वानों के भारतीय साहित्य में घुसपैठ और उनके गहन तथा आलंकारिक अर्थ को न समझने के कारण भ्रम की स्थिति उत्पन्न हुई हैं।

अंग्रेजों के आगमन और उनका भारतीय सामाजिक व्यवस्था अत्यधिक हस्तक्षेप के कारण भारत की सामाजिक और अर्थव्यवस्था के साथ-साथ देश की शिक्षा व्यवस्था को जो क्षति पहुंची हैं, उसको दूर करने के लिए शिक्षा व्यवस्था में ऐसे परिवर्तनों की आवश्यकता महसूस हो रही हैं, जिसे ध्यान में रखकर नई शिक्षा नीति की पहल की गई।

150 वर्षों की गुलामी और उसके बाद अपनाई गई शिक्षा व्यवस्था का ही यह परिणाम हैं। लूट की भावना से आए अंग्रेजों के आगमन और जाते-जाते फूट डालने की भावना का बीजारोपण और उससे फलीभूत मानसिकता का असर ही तो हम देख रहे हैं। इन सब में अंग्रेजी माध्यम के जलसिंचन ने व्यवस्था के वटवृक्ष को इतना घनीभूत कर दिया हैं कि अब ऐसा लगने लगा हैं कि 'अब न होगा इस निशा का फिर सवेरा।' किंतु प्राचि की मुस्कान फिर-फिर भी तो हैं, स्नेह का आव्हान फिर-फिर और नीड का निर्माण फिर-फिर भी तो करना हैं, जिसे हमें ही करना होगा। इस स्थिति से उबरने में थोड़ा और समय लगेगा। समाज के सभी स्तरों में इस विषय के प्रति जागरूकता की आवश्यकता हैं, विशेष रूप से शिक्षा व्यवस्था में।

प्रायः देखा जाता हैं कि सरकारी नौकरी में आने के बाद कर्मचारियों को हमारी राजभाषा हिंदी सिखाने के प्रयास होते हैं, जो कुछ हद तक कामयाब भी हैं लेकिन एक बार घड़ा पकने के बाद उसे आकार देना व्यर्थ होता हैं। हमारी पूरी शिक्षा व्यवस्था पहले अंग्रेजीयत का पाठ पढ़ाती है और बाद में हम उन्हें हिंदी का पाठ पढ़ाते हैं। इसका एक आसान सा उपाय यह हैं कि शिक्षा व्यवस्था में एक ऐसी व्यवस्था हो, जो सभी समस्याओं का समाधान कर पाए। हिंदी भाषा के माध्यम से शिक्षा ही का असरदार उपाय दिखाई देता हैं। इससे दोहरा फायदा होने की संभावना हैं। एक तो पाठ्यक्रमों को यदि हिंदी में उपलब्ध कराया गया, तो शिक्षा, वैद्यक, कृषि, वाणिज्य, कंप्यूटर, विधि तकनीकी आदि विषय, जो काफी जटिल माने जाते है, आसानी से समझ में आ सकते है, वही दूसरी तरफ इन्हें हिंदी माध्यम से पढ़ाने के कारण इसमें लगने वाले समय में भी बचत हो सकती हैं। जैसे- जिस पाठ्यक्रम को चार या छः वर्ष लगते हैं उसे दो से चार वर्षों में ही पूरा किया जा सकता हैं। साथ ही अंग्रेजी को समझने में लगने वाली माथापच्ची से भी निजात मिल जाएगी। केवल देश में कार्य करने और विदेश में कार्य करने की इच्छा रखने वाले इस प्रकार का वर्गीकरण किया जाए, वे विद्यार्थी जो विदेशों में अथवा अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त नहीं करना चाहते हैं, उन्हें अंग्रेजी के बोझ से बचाया जा सकता हैं। जो विद्यार्थी केवल अच्छे अवसरों के लिए विदेशों में जाते है, ऐसे 1 से 5 प्रतिशत के लिए उन 95 से 99 प्रतिशत विद्यार्थी के सिर से अंग्रेजी के भूत का बोझ भी दूर किया जा सकता हैं।

हमारें देश के ग्रामीण क्षेत्रों के कुछ मेधावी विद्यार्थी तो केवल इसलिए पढ़ाई छोड़ देते हैं, क्योंकि वे अंग्रेजी से तंग आ गए हैं। विषय में उनकी रुचि तो होती हैं, लेकिन केवल आकलन न होने के कारण कई बच्चों के पढ़ाई छोड़ने के मामले सामने आते हैं।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में यदि कृषि शास्त्र की पढ़ाई हिंदी में उपलब्ध हो, तो उसका फायदा लाखों किसानों के बच्चों को होगा, दूसरा उपाय यह भी हैं- कार्यकालीन हिंदी अथवा प्रयोजनमूलक हिंदी को अनिवार्य किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी विद्यालय और महाविद्यालयीन स्तर पर ही भारत की भाषा नीति से परिचित हो जाए। उन्हें हिंदी में सरकारी कामकाज में प्रयोग में आने वाली शब्दावली, वाक्यांश, नोटिंग-ड्राफ्टिंग, कंप्यूटर पर हिंदी में प्रारूप लिखने, ई-मेल भेजना, सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग आदि का अभ्यास करवाया गया, तो इससे सरकारी नौकरी प्राप्त करते ही हिंदी में कार्य करने में आसानी होगी। इस पर शिक्षा विभाग को भी विचार करना चाहिए।

इन सभी बातों पर गौर करें तो राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की आवश्यकता सरकारी कार्यालयों के स्थान पर भारत की शिक्षा व्यवस्था में होना परमावश्यक हैं, क्योंकि शिक्षा नीति ही वह स्थान हैं जहां देश की अन्य नीतियों की नींव रखी जाती हैं।

जिस प्रकार किसी बड़ी इमारत की नींव से ही उसकी मजबूती तय होती हैं, उसी प्रकार देश की व्यवस्था की नींव उसकी शिक्षा व्यवस्था ही हैं। उसे यदि निज अर्थात् हमारी स्वयं की भाषा में प्रदान किया गया तो निश्चित ही सभी क्षेत्रों की उन्नति निश्चित हैं। इसलिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने कहा हैं:-

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के शूल॥"

भाषा संगम :

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार 'संघ का यह कर्त्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें जिससे वह भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी में और आठवीं अनसूची में शामिल 22 भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को अपनाते हुए आवश्यकता पढ़ने पर मुख्यतः संस्कृत से और अन्य 22 भाषाओं से शब्द ग्रहण करेंगे।'

भाषा संगम भारत सरकार द्वारा भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच एकात्मकता प्रस्थापित करने और विद्यार्थियों को मातृभाषा के साथ-साथ अन्य प्रांतीय भाषाओं की मूलभूत जानकारी देने के उद्देश्य सामने रखा गया एक नवीनतम कार्यक्रम हैं। इसकी शुरुआत वर्ष 2018 से हुई हैं, जिसके अंतर्गत स्कूलों के विद्यार्थियों को भारत के संविधान में दर्ज 22 भाषाओं की जानकारी देने का उद्देश्य सामने रखा गया हैं। केंद्रीय मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय की ओर से 'एक भारत - श्रेष्ठ भारत' के तहत स्कूली भाषा संगम कार्यक्रम शुरू किया गया हैं।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार इस कार्यक्रम के अंतर्गत एक भाषा के 5 वाक्यों का पोस्टर्स बनाकर कक्षाओं की दीवारों पर लगाया जाता हैं। इसके अतिरिक्त छात्रों को इन वाक्यों से परिवार के लोगों को भी अवगत कराया जाता हैं। जिससे छात्रों को यह वाक्य याद हो जाएं और राष्ट्रीय स्तर पर किसी भी अन्य भाषी राज्य में सामान्य रूप से वार्तालाप कर सकें। इससे भारत की 'अनेकता में एकता' की भावना को बढ़ावा मिलेगा और अन्य राज्यों की भाषा समझने में आसानी भी होगी, इसी से राज्यों एकात्मकता की भावना को भी बल मिलेगा।

प्रायः राज्य के प्रभावी राजनीतिक दल अपने स्वार्थ और वोटों की राजनीति के लिए भारत की भाषिक एकात्मकता के लिए गंभीर खतरा बने हैं। वे अपने वोटों की स्वार्थपूर्ण राजनीति के लिए भाषाई वैमनस्य भी बढ़ाते हैं। इस भावना का बच्चों के बालमन पर विपरीत परिणाम होता हैं और वे अपनी मातृभाषा के अतिरिक्त भाषा के लोगों को हीन भाव से देखना शुरू करते हैं। इस पर प्रभावी उपाय यही

हो सकता हैं कि विद्यार्थियों को बचपन से अनेक भाषाओं का ज्ञान करा दिया जाए, जिससे उनमें अन्य भाषा के प्रति ज्ञान और आदर की भावना का प्रस्फुटन हो सकें।

भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के अधिकतर शब्द संस्कृत से बने हैं, जिसके कारण इसमें प्रांतीय भिन्नता के साथ-साथ एक विशेष एकारूपता भी देखने में आती हैं। जैसे नमस्कार, प्रणाम, संस्कृति, तीर्थ, जल, भोजन, प्रिय, प्रेम, नाम, देव, मनुष्य आदि शब्द समान रूप से बोले जाते हैं, केवल लिखने की शैली और लिपि भिन्न होने के कारण शब्द अलग-अलग प्रतीत होते हैं। यदि भारत की सभी भाषाओं को एक ही लिपि देवनागरी में लिखा जाएगा तो, इनके बीच का भेद स्पष्टतः नष्ट होता दिखाई देता हैं देवनागरी लिपि और द्रविड/ब्राह्मी लिपि के लिखने की शैली के भेद को यदि ठीक से समझा जाए तो दोनों लिपियों की एकरूपता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती हैं। उत्तर भारत और दक्षिण भारत भाषाओं के लगभग साठ प्रतिशत शब्द समान हैं। वाक्य रचना में भी काफी समानता पाई जाती हैं। केवल व्यक्त करने की शैली जैसे शब्द का अंतिम अक्षर दीर्घ उच्चारण करने के कारण भिन्न प्रतीत होता हैं। लेकिन शब्द की मूल आत्मा वहीं हैं, जिसमें भारत बसता हैं। कबीर ने अपने दोहे में कहा हैः-

'चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस पर वाणी।'

भाषा के विकास क्रम में हम देखते हैं कि संस्कृत- प्राकृत- पालि से होकर आधुनिक भाषाओं ने अपनी रूप धारण किया हैं। प्राकृत, पालि, महाराष्ट्री, शौरसेनी, मगधी, पैशाची एवं अपभ्रंश आदि भाषाएं भी सहयात्री रहीं। इनमें परस्पर आदान-प्रदान होता रहा हैं। इनके साथ संस्कृत भी प्रयुक्त होती रही। इन भाषाएं में से पालि बौद्धधर्म के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त हुई। भारत के प्रचार-प्रसार का मुख्य साधन धर्म प्रसार और धर्म प्रवर्तक तथा धर्म प्रबोधनकार रहे हैं। वे अपने उपदेशों के प्रसार के लिए सदैव जनभाषा को वरीयता देते रहे हैं। संत नामदेव, कबीर, रैदास,

तुलसी दास, मीराबाई और संतकवियों ने सदैव जनभाषा के माध्यम से ही अपनी बात कही और जन-जन तक पहुँचाई।

बौद्ध साहित्य में संस्कृत के प्रयोग के अनेक उदाहरण मिलते हैं, उदाहरण के लिए 'ललित विस्तार' और 'सद्धर्म पुंडरीक' इत्यादि गंथों का नाम लिया जा सकता हैं। बौद्ध त्रिपिटक के धम्मपद की भाषा प्रधानतः पालि और अंतः संस्कृत हैं। बौद्ध साहित्य में पालि और संस्कृत की तरह अपभ्रंश भाषा भी प्रयुक्त हुई। अपभ्रंश में लिखे हुए बौद्धों के सामितीय मत का एक त्रिपिटक है। संस्कृत का 'धर्म' शब्द 'पालि' में जाकर 'धम्म'

बन गया लेकिन अपनी धर्म की आत्मा को नहीं छोड़ पाया। स्पष्ट हैं कि भाषाओं के मध्य संगमन को 'भाषा की भारतीय अवधारणा' ने सर्वदा महत्व दिया। यह अवधारणा भाषाओं के विकास में सहायक बनी और सर्वसंवादी साहित्य के सृजन की प्रेरणा की।

भाषाओं के विकास की सहयात्रा की भांति साहित्यिक रचनाओं में भी संस्कृत और प्राकृत अथवा अपभ्रंश के प्रयोग एक साथ हुए। रहीम की रचना 'खेटकौतुकम्' में संस्कृत के साथ हिंदी का "शरद निशिथे-चांद की रोशनाई। सघन वननिकुंजे-स्याम बंसी बजाई।"

"रतिपति सुत निंद्रा - साइया छोड़ भागी।
शिरसि भूयः क्या बाला आन लागी।"
संस्कृत की रंगत वाली साहित्यिक भाषा गुजराती के
पुराने कवियों की रचनाओं में भी मिलती हैं-
पीन पयोधर ओपतां जाणे कंचन कुंभा बलिहारी
भुजदंडनी भाज्यां दैत्यानां दंभा। – (भालण, 1439–1539)

संस्कृत और प्राकृत अथवा अपभ्रंश की सहयात्रा
नाथों-संतो की वाणी में भी देखी जा सकती हैं-
"सारसारं गहन गंभीर गगन उछलिया नादं।
मानिक माया फेरि लुंकाया झूठा बाद-बिबाद॥"

– (गोरख बानी)

तुलसी की लोकप्रिय रचनाओं की भाषा में भी अनेक स्थलों पर इसी प्रकार शब्द योजना हैं –

"भयाम तामरस दाम भारीरं। जटा मुकुट परिधन मुनि चीरं॥"
विद्यापति की रचनाओं में संस्कृत कवि जयदेव
जैसी शब्द योजना देखी जा सकती हैं।
'कुसुमित कानन कालिन्द तीर।
तहं चलि आयल गोकुल वीर॥'

इस तरह की शब्द योजना असमिया के महाकवि शंकरदेव की रचनाओं में भी हैं - परमात्म हरि विज्ञान मूरति निराकर निरामय। नित्य निरंजन आनंद स्वरूप देहिन्द्रिय नाही काया॥ शंकरदेव की 'ब्रजावली' में 'मान मेरि राम सॉरॉनहि लागु' इसी बात को तुलसी ने अवधि में कुछ इस तरह कहा हैं: 'मन मेरे राम चरणहि लागु।'

बंकिम चंद्र की सुप्रसिद्ध रचना वन्दे मातरम् ‘सूजलां’ में बोले ‘तुमी अबले’ का बांग्ला प्रयोग इसी तरह का हैं। ऐसी रचनाओं की भाषा को अंतर्भाषिक चरित्र के कारण स्थानिक पहचान और अखिल भारतीय स्वीकृति मिली।

संस्कृत और हिंदी के मध्य सेतु की भांति कार्य करने वाली अपभ्रंश भाषा उत्तर भारत में छठी शताब्दी से लेकर सत्रहवीं शताब्दी तक प्रचलित रही। इससे हिंदी, गुजराती, मराठी, बांग्ला इत्यादि भाषाओं का विकास हुआ। इसलिए इन भाषाओं के शब्दों में क्रमिक विकास दिखाई देता हैं। जैसा- संस्कृत शब्द 'अद्य' का प्राकृत या अपभ्रंश उच्चारण– 'अज्ज' हैं और हिंदी में 'आज'। लोकभाषाओं और आधुनिक भारतीय भाषाओं में उच्चारण और प्रत्यय भेद के साथ अनेक रूपों में समान शब्दों का प्रयोग होता हैं। इसी आधार पर संत कवियों की रचनाओं क्षेत्रीय भाषाओं के उच्चारण में यात्रा करती है।

आधुनिक भारतीय भाषाएं में जैसा अंतर दिखता हैं, लोक भाषाओं में नहीं हैं, ये एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। अवधी से पूरब चलें तो क्रमशः भोजपुरी, बज्जिका, मैथिली, बंगला, असमिया आदि में अंतर और एकत्व की छटाएं दिखेंगी, इसी प्रकार अवधी से दक्षिण चले तो कुछ परिवर्तन के साथ बुंदेली, बघेली से छत्तीसगढ़ी जुड़ी हुई मिलेगी। छत्तीसगढ़ की एक भाषा रुप कलिंगा ओड़िशा से जुड़ा हुआ हैं, दूसरा बस्तर का भाषा रूप हाल्वी तेलगु के निकट पहुंचता हैं।

भाषाओं के संगठन से आर्य और द्रविड भाषाओं के बीच बनाए गए परिवार भेद की दीवारें टूटती हैं। आर्य और द्रविड़ भाषाओं में शब्द के तत्सम रूपों से ही नहीं, अपितु तद्भव रूपों से भी एकत्व देखा जा सकता हैं। संस्कृत शब्द 'अन्य' का द्रविड उच्चारण 'अन्नि', 'इह' का 'ई', 'अत्र' का 'इकड', इधर (हिंदी), मराठी में 'इकड़े', 'तत्र' का 'अकड़', 'उधर (हि), मराठी में (तिकड़े), मनुष्य का 'मनजुडु', 'गौ' का औ इत्यादि। वर्णों के उच्चारण में भेद और विशेष प्रत्यय प्रयोग से भाषाओं में अंतर आना स्वाभाविक हैं, जैसे- 'आव' (आना) का द्रविड़ में संक्षिप्त उच्चारण है- 'वा'। द्रविड भाषाओं में प्रत्यय का अंतर होता हैं जैसे ‘दैवम्'–दययमु, 'नीर’- नीलू, अंतः- अन्दु (अंदर)। संस्कृत शब्द अन्तःपुर से द्रविड अंतप्पु, शर्करा से चेक्कर और हिंदी में शक्कर, मराठी में 'साखर' इत्यादि बनते हैं, इनमें प्राकृत की तरह विसर्ग या रेफ के बदले अगला वर्ण संयुक्त हो जाता हैं, जैसे 'धर्म' का प्राकृत की तरह 'धम्म', 'कर्म' का 'कम्म' इत्यादि। वस्तुतः भारत में एक ही भाषा परिवार हैं जिसकी बनावट में एक तंतु लोकभाषाओं के विविध तद्भव शब्द रूपों की हैं और दूसरी तंतु तत्सम शब्द रूपों की। यही कारण है कि निरुक्त सभी प्रकार के शब्दों का

निर्वाचन करता हैं और व्याकरण व्युत्पत्ति। यह शास्त्रीय दृष्टि भारतीय भाषाओं में एकता स्थापित करती हैं। पाणिनी व्याकरण के ज्ञाता मानते हैं कि भारतीय भाषाओं का एक व्याकरण बनाया जा सकता हैं। इन तथ्यों से ऐतिहासिक भाषा विज्ञान की यह धारणा व्यर्थ हो जाती हैं कि द्रविड भाषा परिवार फिनलैंड से आया हैं।

आखिल भारतीय भक्ति आंदोलन का साहित्य और संतों की भाषा, संवेदना और ज्ञान किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहे, अपितु स्थानिक पहचान के साथ विचरण करते रहे। संतो ने भाषा से अधिक ज्ञान को महत्त्व दिया। तेलुगू के संत कवि वेमन कहते हैं- 'घड़े'- को 'कुंभ', 'पहाड़' को 'पर्वत', 'नमक' को 'लवण' कहने पर भी भाव एक ही रहता हैं, वैसे ही भाषाएं अलग-अलग हो सकती हैं। परंतु परमतत्व एक ही हैं- कुडकुंभ मन्न, नप्पु लवण मन्न, नोकटि गादे। भाष लिट्ले वेरु, परतत्व मोक्कटे। वेमन और कबीर के अन्य कथनों में अद्भुत समानता हैं। वेमन का कथन हैं— 'जल में भी डुबकी मारने वाला व्यक्ति निर्मल आत्मावाला नहीं हो जाता, पानी का मुर्गा तो सदा पानी में ही रहता हैं- "नील्लु मुनुगुवाडु निर्मलात्मुडु, नीरु कोडि नील्लनु मुन्गदा।" कबीर का कथन हैं- "नहाए धोवाए क्या भया, जो मन मैल न जाय। मीन सदा जल में बसे, धोए बास न जाय।"

संत साहित्य का समन्वयकारी स्वभाव लेकर हिंदी भी आगे बढ़ी, वह किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रही। आज भी हिंदी की आंचलिक पत्रकारिता क्षेत्रीय भाषाओं का प्रभाव लेकर चलती हैं। अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं के प्रभाव क्षेत्र में हिंदी के विविध रुप से विकसित हुए हैं। एक ओर विज्ञापन, धारावाहिक, फिल्म, आंचलिक पुट की साहित्यिक कृतियों में हिंदी के स्थानिक रुप में दिखाई देते हैं वहीं दूसरी ओर उसके वैश्विक रूप भी विकसित हो रहे हैं। वैश्वीकरण के दौर में आज विश्व भर की भाषाएं संचार माध्यमों के एक मंच पर खड़ी हो रही हैं, साथ ही भाषाओं की स्थानिक पहचान भी अनिवार्य हो गई। इस दौर में भाषा की औपनिवेशिक धारणा स्वतः खंडित हो रही हैं।

उत्तराधुनिक भाषा चिंतन में विविध भाषाओं के एकत्व का श्रेय मनुष्य मस्तिष्क की जैविक संरचना को दिया जा रहा हैं, माना जा रहा है कि भाषा के सार्वभौमिक नियम बनाए जा सकते हैं, मनुष्य के मस्तिष्क में जिस प्रकार की संरचना होती हैं वैसी ही संरचनाओं का निर्माण समाज में भी होता हैं। भाषा के नियम से संस्कृति का अध्ययन हो सकता हैं, संस्कृति की समझ का विश्लेषण हो सकता हैं। ऐसा ही योगवसिष्ठ का कथन हैं- 'जगत मन का कल्प है - मनः कल्पित जगता।' मन में सक्रिय होकर भाषा ही मनुष्य और समाज के मध्य सेतु बनती हैं। उत्तराधुनिक

विमर्श में मानुषी मस्तिष्क के ज्ञानोत्पादन की प्रक्रिया के साथ भाषा की शक्ति को संयुक्त माना जा रहा हैं। भर्तहरि का यही कथन है- 'अनुविद्धमिवज्ञानं सर्वं शब्देन भासते' (114, बाह्यकांड वाक्यपदीयम्) शब्द में ही ज्ञान अनुविद्ध हैं, शब्द से ही सब कुछ भासमान होता हैं। ज्ञान और शब्द के संबंध की भांति शब्द से मनुष्य के मस्तिष्क का भी अभिन्न संबंध है। मस्तिष्क से उसी शब्द का अन्तरंग संबंध होता हैं, जो मनुष्य को उसके परिवेश से मिला हो, उस शब्द के वर्णों का संयोजन सरल हो, उसके उच्चारण में लयात्मकता हो। ज्ञान के सृजन में इसी प्रकार के शब्द मनुष्य मस्तिष्क के अनुकूल होते हैं और ऐसे शब्द परिवेश की भाषा में ही प्राप्त होते हैं।

अपने परिवेश की भाषा के प्रभाव में ही मनुष्य मानक भाषा और अन्य भाषाएं बोलता हैं। कहा जा सकता हैं कि प्रत्येक व्यक्ति बहुभाषिक होता हैं। किसी एक भाषा तक सीमित रहने से ज्ञान भी एक ही भाषा तक सीमित रहेगा। विस्तृत ज्ञान के लिए किसी एक भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं का ज्ञान भी होना चाहिए। भाषा की भारतीय अवधारणा भाषा के एकल अस्तित्व को स्वीकार नहीं करती। लोकप्रिय साहित्यिक रचना के लिए भी लोक व्याप्त भाषाओं के शब्द का उपयोग होता रहा हैं। संत महाकवि गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस की रचना में अपने समय की सभी भाषाओं के शब्द रखे। भाषा संबंधी उनकी धारणा यह थी - 'जहां बेद अस कारन राखा। भजन प्रभाव भांति बहुभाखा।।' अर्थात् जब भी ज्ञान प्राप्त करना लक्ष्य हो, तब ज्ञान प्राप्ति का साधन भी बहु भाषिक हो जाता हैं।

शिक्षा के लिए भाषा को उदार रखते हुए ज्ञान को ही प्रधानता देनी चाहिए। भाषा ज्ञान का माध्यम हैं, ज्ञान के अधिगमन में भाषा की बाधा उचित नहीं। प्रारंभिक शिक्षा की माध्यम भाषा अनिवार्यतः विद्यार्थी के अनुरूप होनी चाहिए। इस तथ्य को आधुनिक शिक्षा के पूर्व भी कहा गया है- संस्कृतप्राकृतवाक्यैः शिष्यमनुरुपतः। देशभाषाद्युपदिशप बोधयेत्स गुरुः स्मृतः।। संस्कृत, प्राकृत अथवा शिष्य के अनुरूप 'देश भाषा' में पढ़ाकर बोध देने वाला गुरु ही स्मरणीय होता हैं। जैसे साहित्य सृजन में संस्कृत के साथ प्राकृत का प्रयोग हुआ, वैसे ही विद्यार्थियों के अनुरूप उनके परिवेश की देश भाषा को शिक्षा की माध्यम भाषा बनाई जा सकती हैं।

शिक्षा की माध्यम भाषा के रूप में आज यदि देशभाषा पर विचार किया जाए तो हमें लोक अनुभवों से समृद्ध हिंदी और अन्य भाषाओं को एक साथ रखना होगा। भाषा की शैक्षिक गतिविधियों के लिए अपभ्रंश, प्राकृत और संस्कृति से परिचय भी अपेक्षित होगा। हिंदी साहित्य पढ़ने-पढ़ाने के लिए ब्रजभाषा, अवधी, मैथिली इत्यादि भाषाओं

का ज्ञान अनिवार्य हैं। आधुनिक हिंदी साहित्य की कहानी और उपन्यास के आंचलिक प्रसंगो में ही लोकभाषाओं के प्रयोग नहीं होते, अपितु कविता में भी प्रयोग होते हैं। उदाहरण के लिए 'सर्वेश्वर दयाल सक्सेना' की कविता 'मेघ आए' की पंक्तियां देखी जा सकती हैं- 'बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की/बरस बाद सुध चीन्हीं /बोली अकुलाई लता ओट ले किवार की।' देशी परिवेश और संवेदना की इस कविता में जुहार, बरस, लीन्हीं और किवार शब्द ऐसी लोकभाषा से किए गए हैं जिसकी प्रतिनिधि भाषा हिंदी हैं।

भाषा संगम का मुख्य उद्देश्य विविध भाषाओं के मध्य संवाद स्थापित करना, भारतीय भाषाओं की एकात्मता के आधार पर शिक्षा की माध्यम भाषा निर्धारित और संपोषित करना हैं। शिक्षा का माध्यम भाषा के इस प्रकार उदार बनाया जा सके कि विद्यार्थी के अनुरूप उसकी समझ की भाषा तक पहुँचने में सहयोग मिले, शिक्षा में ज्ञान को प्रथम स्थान दिया जाए, भावा व्यवधान न बने। शिक्षा की माध्यम भाषा में देशी भाषाओं की भूमिका हो और यह कहना उपयोगी लगे कि

'देसिल बयना सब जन मीट्ठा।'
ते तैसन जपहु अवहट्टा। (मैथिली)

इसी बात को तेलुगु से इस तरह कहा गया है- 'देश भाषलन्दु तेलुगु लेस्सा'।

भाषा संगम में सभी स्कूलों को इस कार्यक्रम की फोटोग्राफी के साथ विडियोग्राफी की जाती है और उसे आरएमएसए की वेबसाइट पर अपलोड करना होगा। इस कार्य क्रम में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले स्कूलों को केंद्र सरकार द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता हैं। भाषा संगम एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत भारत की संविधान सूची में शामिल 22 भाषाएं जैसे असमिया, बंगाली, बोड़ो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू को शामिल किया गया हैं।

भाषा संगम कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में भारतीय भाषाओं के प्रति प्रेम और आदर की भावना को प्रसारित किया जा सकता हैं। किसी भी देश में भाषाओं प्रसार का प्रभावी माध्यम शिक्षा-दीक्षा ही होती हैं। यदि हम भारत में भाषाई सौहार्द कायम रखना चाहते हैं तो उसकी शुरुआत बचपन से ही करना भी एक कारगर उपाय सिद्ध हो सकता हैं। भाषा संगम से निश्चित ही भारत की भाषिक विविधता को एकात्मकता प्रस्थापित होगी। इसी से एक भारत, श्रेष्ठ भारत के सपने को पूरा किया जा सकता हैं।

साभार – राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अवि संधान परिषद, नई दिल्ली

हिंदी में विज्ञान-तकनीकी साहित्य की उपलब्धता और पाठ्यक्रम

प्रायः समझा जाता है कि, विज्ञान और तकनीकी की पढ़ाई केवल अंग्रेजी में ही संभव हैं। ऐसी धारणा होना स्वभाविक भी है क्योंकि हमारी शिक्षा प्रणाली में यही पढ़ाया जा हैं कि विज्ञान की पढ़ाई केवल अंग्रेजी में ही हो सकती हैं। विज्ञान और हिंदी के सभी विद्वान यही बताते हुए पाए जाते हैं कि विज्ञान की परिभाषा केवल अंग्रेजी में ही करना संभव हैं। बड़े-बड़े पुरस्कार प्राप्त हिंदी के विद्वान हिंदी का महिमा मंडन करते नहीं थकते, लेकिन जब अपने बच्चों को स्कूल में दाखिला देने का समय आता हैं तो वे अंग्रेजी के स्कूलों को ही प्रधानता देते हैं। दूसरी तरफ विज्ञान के विद्वान जब भी विज्ञान की बात करेंगे तो उनके जबान पर अंग्रेजी ही हावी रहेगी। एक और तर्क दिया जाता हैं कि विज्ञान का उगम ही पश्चिम ही अंग्रेजी भाषा में हुआ हैं, इसलिए उसे विज्ञान केवल अंग्रेजी में ही पढ़ाना उचित हैं। इसमें विज्ञान - विषय की पर्याप्त मात्रा में सामग्री न होने का भी कुतर्क दिया जाता हैं।

विकिपीडिया पर प्रकाशित एक लेख के अनुसार हिंदी के 3500 लेखक हैं जो विज्ञान के विभिन्न विषयों पर लिखते हैं और ऐसे पुस्तकों की संख्या 8000 के आसपास जो विज्ञान के विषयों पर लिखी गई हैं। चंद्रकांत राजू की पुस्तक "क्या विज्ञान का जन्म पश्चिम में हुआ हैं?" पुस्तक में स्पष्ट रूप से बताया गया हैं कि किस प्रकार भारतीय प्राचीन विज्ञान के सूत्र जो पहले संस्कृत में थे, किस प्रकार अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुदीत कर उसे अपने नाम से प्रसारित किया गया हैं।

अब हम इस विषय पर विचार करेंगे कि भारत में वर्तमान समय में क्या विज्ञान की पढ़ाई हिंदी में करवाना तो संभव हैं यह कुछ पालक जानते हुए भी अधिकतर पालक अपने बच्चों को अंग्रेजी मीडियम स्कूलों में इसलिए भेजते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि जब आगे की पढ़ाई अंग्रेजी में ही करनी हैं, तो बचपन से ही उन्हें अंग्रेजी की आदत क्यों न डाल दें। लेकिन पालकों को यह नहीं पता होता कि उनके बच्चें

यदि बचपन में मातृभाषा और हिंदी में विज्ञान और गणित जैसे कठिन विषय पढ़ेंगे तो उनकी समझ बढ़ेगी और जटिल संकल्पनाओं को वे और बेहतर ढंग से समझ पाएंगे।

लेकिन माध्यमिक, उच्च और महाविद्यालयीन तथा विश्व विद्यालयीन स्तर की तकनीकी और विज्ञान की पुस्तकें और पढ़ाई हिंदी में उपलब्ध है तो फिर स्कूल और बचपन में ही अंग्रेजी का बोझ लादने की आवश्यकता क्या हैं। बच्चों के बस्तें और दिमाग पर बोझ बढ़ाने में अच्छा है उन्हें मातृभाषा और हिंदी में लिखी गई विज्ञान की पुस्तकें पढ़वाई जाए, इससे उनकी विज्ञान संबंधी सोच स्पष्ट होगी और उनके कोमल मन और बुद्धि पर विदेशी भाषा का बोझ भी नहीं बढ़ेगा।

माध्यमिक शिक्षा के बाद सारी पढ़ाई अंग्रेजी में होने की वजह से भारतीय विद्यार्थी हीन भावना के शिकार भी होते हैं, साथ में उनकी विज्ञान की कोई सोच विकसित नहीं हो पाती या सीधे शब्दों में कहें तो बच्चे अंग्रेजी से सीधे तौर पर सहज नहीं हो पाते हैं, जिससे कि उनके विचारों में मौलिकता की कमी हो जाती हैं। माध्यमिक स्तर के बाद विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडिकल और प्रोफेशनल कोर्सेस की भाषा हिंदी में होनी चाहिए तभी विज्ञान का सही मायनों में प्रसार होगा। हिंदी में विज्ञान को शैक्षणिक स्तर के साथ-साथ रोजगार की भाषा भी बनाना होगा। कहने का मतलब यह हैं कि अगर कोई छात्र हिंदी माध्यम से विज्ञान या इंजीनियरिंग आदि की पढ़ाई करें तो उसे बाजार भी सपोर्ट करें, जिससे कि उसे नौकरी मिल सके। उसके साथ रोजगार के मामले में भेदभाव नहीं होना चाहिए। सरकार को इसके लिए एक व्यवस्था विकसित करनी होगी तभी हिंदी विज्ञान की भाषा बन पाएगा। इसी तरह हिंदी में विज्ञान संचार को रोजगारपरक बनाते हुए बढ़ावा देना होगा।

इसका एक और फायदा यह है कि महाविद्यालयीन और विश्वविद्यालय स्तर की पढ़ाई को जो सामान्यतः 4 से 5 वर्षों की होती है, उसे घटाकर 2 से 3 वर्षों का किया जा सकता हैं और अंग्रेजी समझने में लगने समय और मेहनत से बचा जा सकता हैं। भारत सरकार के राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने में भी इससे गति मिलेगी। युवापीढ़ी हिंदी में तकनीकी और विज्ञान के विषयों को पढ़ेंगे तो उन्हें केंद्र सरकार के कार्यालयों में रोजगार प्राप्त करने पर अलग से हिंदी प्रशिक्षण योजना के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ की कक्षाओं को चलाने की भी आवश्यकता नहीं होगी और उन्हें सीधे 'पारंगत' पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जा सकता हैं। इसके अतिरिक्त यदि स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर कार्यालयीन स्तर पर कार्यालयीन हिंदी भाषा को और भी गति मिलेगी।

प्रायः देखा गया हैं कि सरकारी कार्यालयों में भर्ती होने वाले अधिकतर लोग अपने तकनीकी और विज्ञान के विषयों को अंग्रेजी में पढ़कर आते हैं, इसलिए उन्हें अपना कार्य हिंदी में करने में कठिनाई होती हैं, जिसके लिए ऐसे कर्मचारियों के लिए अलग से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना पड़ता हैं, जो सिर्फ हिंदी में कार्यकालीन कार्य में प्रवीण बनाने के लिए होता हैं। भारत के कुछ राज्यों में विज्ञान विषयों को हिंदी में पढ़ने और पढ़ाने से अच्छे परिणाम सामने आने लगे हैं। अधिकतर स्पर्धा परीक्षाओं में अव्वल आने वाले विद्यार्थी हिंदी माध्यमों से अच्छे अंक प्राप्त करते दिखाई दे रहे हैं। खासकर जटिल विषयों को अपनी भाषा में पढ़ने से विषय को समझने में आसानी होती हैं।

स्कूल के विज्ञान के साथ-साथ माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, महाविद्यालयीन स्नातक और स्नातकोत्तर के विज्ञान और तकनीकी संबंधी विषयों की पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध हैं, जिसकी जानकारी अधिकतर लोगों को नहीं हैं। जैसे विज्ञान की सभी शाखाओं, तकनीकी, अभियांत्रिकी, पॉलिटेक्नीक, आईटीआई, सीए, सीएस, सीएमए, कंप्यूटर, आयकर (टैक्स), स्पर्धा परिक्षाओं की तैयारी से संबंधित पुस्तकें, धर्म, विधि शास्त्र, मेडिकल, नर्सिंग, औषधि निर्माण (फार्मेसी), बी फार्मेसी की पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध हैं। राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा आदि राज्यों में विज्ञान विषयों का हिंदी में आसानी से पढ़ाया और समझाया जा सकता हैं। इससे स्पर्धा परीक्षा और अन्य परीक्षाओं में भी अव्वल स्थान प्राप्त किया जा सकता हैं। (MSCIT) जैसे कंप्यूटर कोर्सेज में यदि भाषा संबंधी एक अध्याय जोड़ दिया जाए तो कंप्यूटर में प्रशिक्षण प्राप्त करते समय ही हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर पर कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जा सकता हैं।

वर्तमान समय में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर महाविद्यालयीन स्नातकोत्तर, स्नातक विश्वविद्यालयीन स्तर की विभिन्न विषयों की पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध हैं, जिनकी जानकारी हम प्राप्त करेंगे। विज्ञान शाखा से ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के बाद बीएससी, बी कॉम, बी.सी.ए, इलेक्ट्रॉनिक्स, इलेक्ट्रिक्ल, इंजीनियरिंग, नर्सिंग तथा एलएलबी (विधि) की पढ़ाई हिंदी में की जा सकती हैं। लेकिन इसमें एक समस्या यह हैं कि जो लोग पहले से ही इन विषयों को अंग्रेजी में पढ़कर कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में भी पढ़ा रहे हैं, उन्हें इन विषयों को पहले हिंदी में पढ़ना होगा तभी वे अपने विद्यार्थियों का हिंदी में पढ़ा पाएंगे। इसके लिए डी.एड.बी.एड तथा

एम.एड के पाठ्यक्रमों में भी पहले इन विषयों को हिंदी में पढ़ने का पर्याय उपलब्ध कराना होगा इसके लिए भारत सरकार के उच्च शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा विभाग द्वारा विशेष ध्यान देने की आवश्यकता हैं। इन सभी परिवर्तनों से हमारे देश की वैज्ञानिक चेतना में जागृति बढ़ेगी और केवल अंग्रेजी के बोझ के नीचे दबे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने में भी सहायता मिलेगी।

इन विषयों में अर्थशास्त्र (Economics), पर्यावरण (Environment), कंप्यूटर (Computer), लेखांकन (Accountancy), आयकर (Income Tax), अंकेषण (audit) वाणिज्य (Commerce), प्रबंधन (Management) ग्रामीण विकास (Rural Development), विपणन (Marketing), मानव संसाधन (Human Resource) प्राणी विज्ञान (Zoology), जीव विज्ञान (Biology), प्रतिरक्षा विज्ञान (Resistance Science), सूक्ष्म जीवशास्त्र (Micro Biology), जैव प्रौद्योगिकी (Bio-technology), वनस्पति शास्त्र (Botany), पारिस्थितिक पर्यावरण विज्ञान (Environment Science), अनुप्रयुक्त प्राणीशास्त्र (Applied Zoology), जैव सांख्यिकी (Bio-statics), प्रकाशिकी (Optic), सांख्यिकिय और उष्मा-गतिकि, भौतिकी (Physics), गणित भौतिकी (Mathematics Physics), प्रारंभिक क्वांटम यांत्रिकी, स्पेकट्रोस्कॉपी (Spectroscopy), प्रायोगिक भौतिक अवकल समीकरण (Experimental Physics), संख्यात्मक विश्लेषण (Statistics Analysis), निर्देशापांक ज्यामिति (Directive Geometry), द्विमीव सदिशकलन, समिश्र विश्लेषण, गति विज्ञान (Speed Science), कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन (Organic and inorganic Chemistry) भौतिक रसायन (physics Chemistry), प्रायोगिक रसायन (Practical Chemistry) शोध पद्धति (Research methodology) प्रायोगिक वनस्पति कोश (Experimental botany), भ्रूण विज्ञान (Embryology), आण्विक जैविकी और जैव प्रौद्योगिकी (Atomic Biology and bio-technology), पारिस्थितिकी और वनस्पति विज्ञान (Ecology and Botany) भ्रौणिकी (Embryology) पर्यावरणीय जैविकी (Environmental Botany), अनुप्रयुक्त प्राणीशास्त्र और व्यवहारिकी (Applied Zoology and Behavior Science), जैव सांख्यिकी (Bio statics), प्रायोगिक प्राणीविज्ञान (Practical zoology), कॉर्डेटा (Cordite), नाभिकीय भौतिकी (Nuclear physics), ठोस अवस्था भौतिकी (Solid state physics), विद्युत चुंबकत्व

(Electric Magnetic), विद्युत चुंबकिकी (Electric Magnetic Science) पर्यावरण अध्ययन (Environmental Study), शैवाल, लाइकेन एवं बायोफाइटा (Lichen and Biforate), सूक्ष्म जैविकी (Microbiology), प्राणी विविधता एवं जैव विकास (Diversity of animals and evolution), कवक एवं पादप रोग विज्ञान परिवर्धक जैविकी (Developmental Biology) पादक कार्यिकी और जैव रसायन (Plant Psychology) कोशिका विज्ञान अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन, पादप शरीर क्रिया विज्ञान और जैव रसायन (Plant Physiology and Biochemistry) शैवाल, शैवक एवं ब्रायोफाइटा, टेरिओडोफायटा, जिम्नोस्पर्म और पेलियोबॉटनी (Pteridophyte, Gymnosperm and Paleobotany) समिश्र विश्लेषण (Complex Analysis) अमूर्त बीजगणित (Abstract Algebra), अवकलन गणित, समाकलन गणित, रेखकीय सिद्धांत, विविक्त गणित, इष्टमितिकरण सिद्धांत, त्रिविम निर्देशांक ज्यामिति, व्यवसायिक सांख्यिकी, उद्यमिता और लघु व्यापार प्रबंधन, निगमीय और वित्तीय लेखांकरण, भारतीय बैंकिंग, वित्तीय व्यवस्था, व्यापारिक विधि, सामान्य प्रबंधन, विपणन प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन, उच्चतर प्रबंधन, लेखांकन, व्यावसियिक वातावरण, विपणन शोध प्रबंधन, प्रबंधन, व्यावसायिक बजटन, परियोजना नियोजन एवं बजटरी नियंत्रण, भारत की संवैधानिक विधि, विधिक भाषा इत्यादि।

बीएससी के लिए उपयोगी प्राणि कार्यिकी एवं जैव रसायन, प्रतिरक्षा विज्ञान, सूक्ष्म जीवविज्ञान एंव जैव प्रौद्योगिकी, प्रायोजित प्राणी विज्ञान, कॉडेटा (संरचना एवं कार्य), पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण जैविक, बीएससी पार्ट 3 के लिए अनुप्रयुक्त प्राणीशास्त्र व्यावहारिकी एवं जैवसांख्यिकी, तृतीय वर्ष के लिए प्रायोगिक प्राणिविज्ञान, प्रकाशिकी (भौतिकी) सांख्यिकीय और उष्मा गतिकी भौतिकी (बी एस सी द्वितीय वर्ष के लिए) बी.एस.सी (तृतीय वर्ष के लिए) प्रारंभिक क्वॉटम और स्पेक्ट्रोस्कॉपी, वास्तविक विश्लेषण, अवलकन समीकरण (डिफ्रशियल इक्वीश्न्स), निदेर्शांक ज्यामिती, द्वीमीव, सदीश कलन, समिश्र मिश्रण, गति विज्ञान, कार्बनिक और अकार्बनिक रसायन, इत्यादि उपलब्ध हैं।

अर्थशास्त्र में व्यावसायिक सांख्यिकी, व्यावसायिक अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान की पुस्तके भी उपलब्ध हैं। अब पॉलिटेक्निक की पुस्तकों के बारें में जानेंगे। पॉलिटेक्निक के द्वितीय और तृतीय वर्ष की पुस्तकें: प्रथम वर्ष के लिए बेसिक इलेक्ट्रॉनिक्स, बेसिक इलेक्ट्रिकल इंजिनीयरिंग, इलेक्ट्रिकल मैनेजमेंट और

इन्स्ट्रूमेंशन, इलेक्ट्रिकल सर्किट थ्योरी, इनेक्ट्रिकल मशीन, पावर सिस्टम, माइक्रो प्रोसेसर और सी प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रिकल वर्कशॉप, इंटर प्रोन्यूरशिप एंड मैनेजमेंट, प्रशासनिक विधि। इन पुस्तकों के माध्यम से आसानी से इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग की पढ़ाई पूरी की जा सकती हैं।

सामान्य अर्थशास्त्र, लेखांकण के मूल तत्व, परिणामात्मक अभिरुचि, व्यापारिक विधि, नीतिशास्त्र और संरचना, व्यापारिक विधि, नीतिशास्त्र और संचार, अंकेषण और आश्वासन इत्यादि पुस्तकें उपलब्ध हैं, जिन्हें राजस्थान विश्वविद्यालय में समाविष्ट किया गया हैं।

प्रायः देखा जाता हैं कि विधि संबंधी पुस्तकें हिंदी में न मिलने के कारण हमारी न्याय व्यवस्था से आवाज उठाती हैं कि हिंदी को न्यायालयों में प्रयोग में नहीं लाया जा सकता हैं। लेकिन हिंदी में भी एलएलबी की पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो इस प्रकार हैं- विधिशास्त्र एंव विधि के सिद्धांत, अपराध विधि, संपत्ति अंतरण अधिनियम एवं सुखाधिकार, कंपनी विधि, अंतर्राष्ट्रीय विधि और मानवाधिकार, श्रम कानून (विधि), प्राशासनिक विधि, आयकर अधिनियम, बीमा विधि इत्यादि जिनकी सहायता से विद्यार्थी हिंदी में कानून की पढ़ाई की जा सकती हैं। इससे आगे चलकर यही लोग न्यायालयों में हिंदी में अपनी बात रख सकते हैं। इसमें संविदा विधि, दुष्कृत्य विधि (मोटर वाहन अधिनियम और उपभोक्ता), हिंदु लॉ, मुस्लिम विधि, भारत की संवैधानिक विधि, विधिक भाषा लेखन और सामान्य अंग्रेजी, भारत का विधिक और संवैधानिक इतिहास, लोकहित बाद और विधिक सहायता और पैरा लीगल सर्विसेज आदि।

इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान और पशुचिकित्सा जैसे विषयों को हिंदी में पढ़ाने से भी उसका सीधा फायदा पाठकों को होगा क्योंकि यह दोनों विषयों देश की मिट्टी से जुड़े हैं। कृषि विज्ञान को हिंदी में पढ़ाए जाने से देश की कृषि व्यवस्था को इसका लाभ ही होगा। जिसकी पुस्तकें भी हिंदी में उपलब्ध हैं। कंप्यूटर की पढ़ाई में सी-प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स और शॉपन प्रैक्टिस, सर्किट एनालिसिस, इलेक्ट्रॉनिक्स मेजरमेंट एंड इन्स्ट्रुमेंटेशन, इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसेस एवं सकिर्टस, डिजीटल इलेक्ट्रॉनिक्स, वेब प्रोपेगेशन एवं इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स इंस्ट्रुमेंटेन आदि तकीनीकी विषयों का समावेश हैं।

भारत सरकार के केंद्रीय विश्वविद्यालय जैसे महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी

विश्वविद्यालय, वर्धा और अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय, भोपाल ने ऐसे कुछ पाठ्यक्रमों को हिंदी में पढ़ाने का शुभारंभ भी किया हैं जिसमें प्रबंधन, इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी, कंप्यूटर साइंस, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, मनोविज्ञान, मीडिया, फिल्म अध्ययन, भौतिकी, गणित, सूचना प्रौद्योगिकी एवं भाषा-अभियांत्रिकी आदि विषय सम्मिलित हैं। इसके अतिरिक्त भाषा संबंधी कुछ पाठ्यक्रमों का भी समावेश हैं, जैसे पी.एचडी, स्पेनिश, एम फिल (कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स), एम फिल (कंप्यूटेशनल भाषा विज्ञान), अनुषंगी अनुशासनः अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान कंप्यूटर साइंस, इनफॉरमेंशन टेक्नोलॉजी, भौतिक विज्ञान, गणित का भी समावेश हैं इनसे कई रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होते हैं जैसे कंप्यूटेशनल भाषा विज्ञान के विद्यार्थी देश-विदेश के विभिन्न संस्थानों में, विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर एवं शोध अनुषंगी (रिसर्च एसोशिएट) विभिन्न प्रौद्योगिकी संस्थानों जैसे आई.आई.टी, आई.टी.आई अथवा विभिन्न शोध संस्थान जैसे सी-डैक अथवा विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों में भाषा संसाधन विशेषज्ञ या कंप्यूटेशनल भाषाविज्ञानी के रूप में नियुक्ति प्राप्त कर सकते हैं। देश–विदेश के विभिन्न विश्वद्यालयों में भी शोध एवं अध्यापन के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं इसके अतिरिक्त एम.फिल. चायनीज, एम.फिल. स्पेनिश, एम.फिल. हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी), एम.ए. कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स पाठ्यक्रमों से भी रोजगार के द्वार खुल गए हैं, जिसके अंतर्गत कंप्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स के सैद्धांतिक एवं अनुप्रयुक्त क्षेत्र यथा कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा, प्राकृतिक भाषा संसाधन आदि का अध्ययन किया जाता हैं। मास्टर ऑफ इन्फॉरमेटिक्स एंड लैंग्वेज इंजीनियरिंग इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत भाषा से जुड़े सूचना एवं अभियांत्रिकी क्षेत्र का अध्ययन किया जाता हैं। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा को लेकर नई अवधारणा का विकास करना हैं। इस पाठ्यक्रम में भाषा-अभियांत्रिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी से संबद्ध विविध प्रयोगात्मक क्षेत्रों के अध्ययन पर बल दिया जाता हैं। कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (भाषा प्रौद्योगिकी) भाषा प्रौद्योगिकीय अध्ययन विकास एवं शोध के लिए बौद्धिक संसाधनों का उत्पादन एवं प्रतिक्षण प्रदान करना हैं। इसके अतिरिक्त चीनी भाषा में एडवांस्ड डिप्लोमा-डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी उपलब्ध हैं। यह एकीकृत पाठ्यक्रम हैं जो दो वर्षीय पाठ्यक्रम हैं जो चार छमाही में पूर्ण होता हैं। स्पेनिश भाषा में डिप्लोमा, यह एक वर्षीय पाठ्यक्रम हैं, जो दो छमाही में पूर्ण होता है तथा एडवांस्ड डिप्लोमा दो साल में पूरा होता हैं। जापानी भाषा में डिप्लोमा यह एक वर्षीय पाठ्यक्रम हैं, जो दो छमाही में पूर्ण होता हैं। मलयालम भाषा में

डिप्लोमा, उर्दू भाषा में डिप्लोमा, डिप्लोमा इन कंप्यूटर एप्लीकेशन, यह एक वर्षीय अंशकालिक पाठ्यक्रम हैं, जो दो छमाही में पूर्ण होता हैं। इसके अतिरिक्त संस्कृत भाषा में डिप्लोमा, स्पेनिश भाषा में सर्टिफिकेट, चीनी भाषा में सर्टिफिकेट, फ्रेंच भाषा में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम, जापानी भाषा में सर्टिफिकेट, बांग्ला भाषियों के लिए सरल हिंदी शिक्षण में सर्टिफिकेट इत्यादि पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं।

ज्ञान विज्ञान के सभी क्षेत्रों में शिक्षण, प्रशिक्षण एवं शोध को हिंदी माध्यम से बढ़ाने हेतू 19 दिसंबर, 2021 को मध्यप्रदेश शासन ने अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल की स्थापना की हैं। इस विश्वविद्यालय का उद्देश्य ऐसी युवा पीढ़ी का निर्माण करना हैं जो समग्र व्यक्तित्व विकास के साथ रोजगार कौशल हिंदी माध्यम से करना है। विश्वविद्यालय ऐसी शैक्षणिक व्यवस्था का सृजन करना चाहता हैं, जो भारतीय ज्ञान तथा आधुनिक ज्ञान में समन्वय करते हुए छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों में ऐसी सोच विकसित कर सके जो भारत केंद्रित होकर संपूर्ण सृष्टि के कल्याण को प्राथमिकता दे। इस विश्वविद्यालय का शिलान्यास 6 जून, 2013 को भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणब मुखर्जी के कर कमलों से ग्राम मुगलिया कोट की 50 एकड़ भूमि पर किया गया हैं। शिक्षा सत्र 2012-13 में 60 विद्यार्थियों से प्रारंभ होकर इस विश्वविद्यालय में सत्र 2017-18 में लगभग 442 विद्यार्थियों ने अध्ययन हेतू प्रवेश लिया हैं। अब तक 18 संकायों में 231 से अधिक पाठ्यक्रमों में आधुनिक ज्ञान के साथ उस विषय में भारतीय योगदान की जानकारी भी दी जाती हैं तथा संबंधित विषय में मूल्य आधारित व्यावसायिकता के साथ स्वरोजगार की अवधारणा के संवर्धन पर जोर दिया जाता है। अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय, भोपाल में चिकित्सा अभियांत्रिकी विधि, कृषि, प्रबंधन आदि में हिंदी माध्यम से शिक्षण-प्रशिक्षण एवं शोध का कार्य कर रहा है।

अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय ने चिकित्सा के अतिरिक्त सभी पाठ्यक्रम किसी न किसी स्तर पर हिंदी माध्यम से प्रारंभ कर दिए हैं। विश्वविद्यालय के अभियांत्रिकी संस्थानों ने वर्ष 2016-17 से अभियांत्रिकी (बी.ई) चार वर्षीय पाठ्यक्रम नागर (सिविल), वैद्युत (इलेक्ट्रिकल) एवं यात्रिकी (मैकेनिकल) शाखाओं में हिंदी माध्यम से प्रारंभ कर दिया हैं। सत्र 2017-18 से स्नातक चिकित्सा (एम.बी. बी.एस) पाठ्यक्रम हिंदी माध्यम से प्रारंभ कर दिया गया है।

विश्वविद्यालय ने गत चार वर्षों में विशेष अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की हैं तथा कुछ केंद्रों में तो उल्लेखनीय कार्य चल रहा है। भारत विद्या

अध्ययन एवं अनुसंधान केंद्र तथा गर्भ संस्कार तपोवन केंद्र विश्वविद्यालय के प्रमुख आकर्षण हैं।

जिनके बच्चे अंग्रेजी भार से पीड़ित होने के कारण शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए तथा जो अंग्रेजी माध्यम के कारण डॉक्टर, अभियंता (इंजीनियर) प्रशासक, प्रबंधक आदि बनने का सपना साकार नहीं कर पाए थे, वे विश्वविद्यालय से जुड़कर अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकते हैं। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लिए उम्र की बाधा नहीं हैं। विश्वविद्यालय में विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र, पत्रोपाधि, स्नातकोत्तर, विद्यानिधि, विद्यावारिधि एवं विद्या वाचस्पति पाठ्यक्रमों में अध्ययन एवं शोध की भी व्यवस्था है।

संत गाडगेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में अनुवाद हिंदी, प्रयोजनमूलक हिंदी जैसे व्यावसायाभिमुख पाठ्यक्रमों के कारण हिंदी के व्यावहारिक और आधुनिक रूप का प्रचार-प्रसार हो रहा है। इस विश्वविद्यालय की विशेषता यह हैं कि इस विश्वविद्यालय में एम.ए (अनुवाद हिंदी) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पूर्णकालिक 2 वर्ष का है, जिससे विद्यार्थियों को हिंदी के प्यावहारिक पक्ष को जानने समझने का व्याप्त समय मिलता है। हिंदी को साहित्यिक रूप के साथ-साथ हिंदी प्रयोजनमूलक रूप को पढ़ने का अवसर यह विश्वविद्यालय उपलब्ध कराता है।

संदर्भ :

www.onlinebookmart.com; https://hindivishwa.org

भारतीय भाषा में विज्ञान लेखन :

दशा और दिशा

विज्ञान प्रचार-प्रसार, वैश्विक हिंदी सम्मेलन, हिंदुस्तानी भाषा अकादमी के संयुक्त तत्वाधान में हिंदी में वैज्ञानिक लेखन पर एक वैश्विक वेबीनार का आयोजन किया गया। इस वेबीनार में विज्ञान के जाने माने हस्ताक्षर श्री देवेंद्र मेवाड़ी जी ने विज्ञान को लेकर कुछ कहा उस में बहुत सी बातें सभी के लिए एकदम नई थी।

उनका यह कहना था कि जिस प्रकार एक वैज्ञानिक, वैज्ञानिक होते हुए भी ललित साहित्य लिख सकता हैं ठीक उसी प्रकार कोई साहित्यकार चिंतक लेखक तर्कशील बुद्धि पर तथ्यों का प्रयोग करते हुए विज्ञान लेखन कर सकता हैं।

उन्होंने देश कई बड़े साहित्यकारों के द्वारा विज्ञान लेखन में सक्रिय प्रमोद भार्गवजी, वरिष्ठ पत्रकार ने बताया कि वे वैज्ञानिक नहीं है लेकिन विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर उनके लिए देशभर के विभिन्न समाचार पत्रों में निरंतर प्रकाशित होते हैं, उन्होंने ऐसे विषयों पर पुस्तकें भी लिखी है।

सोशल मीडिया पर विज्ञान प्रचार-प्रसार के अंतर्गत विविध सामग्री प्रस्तुत कर रहे श्री राहुल खटे जी द्वारा इस वेबीनार के आयोजन में प्रमुख भूमिका रही। इस आयोजन में विभिन्न क्षेत्रों के अनेक महत्त्वपूर्ण लोग उपस्थित रहे।

डॉ. एम एल गुप्ता 'आदित्य' ने बताया कि वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई के माध्यम से किस प्रकार वैज्ञानिक साहित्य की जानकारी विद्यार्थियों और विश्वविद्यालयों तक पहुँचाई जा सकती हैं। हिंदुस्तानी भाषा अकादमी, नई दिल्ली अध्यक्ष के श्री सुधाकर पाठक ने उनकी संस्था के माध्यम से हिंदी के शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए किए जा रहे देशव्यापी प्रयासों की जानकारी दी, साथ ही संस्था के माध्यम से गठित भारतीय भाषाओं के संगठन शिक्षक प्रकोष्ट के विषय में भी बताया, जिसमें लगभग 600 शिक्षक जुड़े हुए है। उन्होंने जानकारी दी कि अकादमी एक त्रैमासिक पत्रिका 'हिंदुस्तानी भाषा भारती' का नियमित प्रकाशित कर रही है। जिसका प्रत्येक

अंक किसी एक भारतीय भाषा का विशेषक होता है। पत्रिका में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लेख प्रकाशित होते हैं।

अपनी तरह के इस विशिष्ट आयोजन को देशभर से महत्वपूर्ण प्रतिसाद मिला।

वेबिनार का वीडियो लिंक डॉक देवेंद्र मेवी जी से वार्ता की लिंक –

https://youtube/5Meo4xPJMmkSAMSUNG;

श्री प्रमोद भार्गव, वरिष्ठ पत्रकार से वार्ता की लिंक –

https://m.facebook.com/story.php?story_fbid=1712361382250400&id=1000042664099

ईडियट बॉक्स और
किसानों की आत्महत्याएं

उपरोक्त शीर्षक में दिए गए शब्दों में आपको कोई संबंध दिखाई देता हैं? आप कहेंगे बिल्कुल नहीं। लेकिन इन दोनों शब्दों का आपस में गहरा संबंध हैं, यदि यह कहा जाए कि पहला शब्द ही दूसरे शब्द के लिए काफी हद तक जिम्मेदार हैं तो कुछ गलत नहीं होगा, आप थोड़ा 1980 और 1990 का दशक याद कीजिए और यह ढूंढनें कि कोशिश कीजिए कि वर्ष 1980 या 1990 में कितने किसानों ने आत्महत्याएं की थी, जवाब मिलेगा कुछ नहीं या फिर नगण्य किसानों के आत्महत्याओं का ही होना सामने आएगा, ऐसा क्या था और क्या नहीं था इस दौर में जो किसानों को आत्महत्याओं को प्रभावित कर रहा है। मेरे विचार से उस दौर में टीवी नहीं था जो किसानों की खेती को प्रभावित कर रहा था।

आज कल हम देखते हैं कि अधिकतर युवाओं ने नौकरी पाने की चाहत में अपने परंपरागत किसानी से अपना मुंह मोड़ लिया हैं, उन्हें लगता हैं कि पढ़-लिखकर नौकरी प्राप्त कर लेना ही उनका पढ़ाई का अंतिम उद्देश्य हैं और यदि पढ़-लिखकर नौकरी नहीं लगती हैं, तो इसमें उनका कोई दोष नहीं हैं, हमारे भारत में एक समय ऐसा था जब किसानी को उत्तम माना जाता था, मध्यम व्यापार था और नौकरी को निकृष्ठ माना जाता था, लेकिन अंग्रेज आए और उन्होंने भारतीयों को नौकर बनाना शुरू किया और अधिकतर पढ़े-लिखें लोगों ने भी नौकरी करना उत्कृष्ट मानना शुरू किया, क्योंकि खेती-किसानी में होने वाले अनियमित उत्पादन और अनिश्चितता से जुझना पड़ता था, लेकिन अब दौर बदल गया हैं, आजकल हम देखते हैं कि अधिकतर पढ़े लिखें डिग्रीधारी लोग भी अपने आप को साक्षर बेरोजगार कहलाते हैं और बेरोजगारी भत्ता ही पाते है, जिन्हें वे मिल जाता हैं, वह अपने आपको खुशनसीब समझते हैं और जिन्हें नहीं मिल पाता, वे अपना मन कचोटते रहते हैं और अपनी डिग्री तथा शिक्षा को कोसते नजर आते हैं, बच्चें स्कूली पढ़ाई तक सोचते हैं, उन्हें क्या बनना

है, लेकिन वह देखते हैं कि विज्ञान, कंप्यूटर, वाणिज्य, इंजीनियरिंग और मेडिकल के क्षेत्रों के लिए बहुत अधिक स्पर्धा है और इन क्षेत्रों में रोजगार के अधिक अवसर है वे भी इसी घुड़दौड़ में शामिल हो जाते हैं। दसवीं तक विद्यार्थियों को यह पता ही नहीं होता हैं कि किस फिल्ड में जाना है, जो साठ से अस्सी प्रतिशत प्राप्त करते हैं, वे विज्ञान और वाणिज्य की शाखा की ओर मुड़ते हैं, और शेष 40 से 60 प्रतिशत प्राप्त करने वाले कला शाखा की ओर मुड़ जाते हैं, शेष 40 प्रतिशत और उससे कम वालों की भविष्य की कोई योजना नहीं होती। उसमें से अधिकतर 'व्यवसाय क्षण' लेते हैं या फिर जो भी काम मिले उसे करना शुरू कर देते हैं, आज यदि आप एक सर्वेक्षण करें, जिसमें बेरोजगार लोगों में पढ़े-लिखें लोगों का प्रतिशत निकाले तो वह सर्वाधिक मिलेगा, जबकि जो लोग मात्र पाँचवीं या दसवीं तक जैसे-तैसे कर पढ़े थे, वे सभी लोग मेहनत-मजदूरी या फिर खेती-किसानी करके अपना पेट भर लेते हैं।

जो जितना अधिक पढ़ता है उसे रोजगार के लिए और अधिक कश्मकश करनी पड़ती हैं, क्योंकि वह अपनी शिक्षा को ध्यान में रखकर आरामदायक और अधिक से अधिक आमदनी वाली नौकरी प्राप्त करना चाहता हैं, कुल मिलाकर समस्या उन लोगों से साथ ज्यादा हैं, जो अधिक पड़ते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि और मनोदशा एक समान नहीं होती हैं, किसे किस काम में रुची होगी इसीपर उसका भविष्य निर्भर होता हैं, पड़ोसी का बेटा इंजीनियरी में एडमिशन लेता हैं, इसलिए मेरा बेटा भी इंजीनियरिंग ही करेगा यह सिखाने वाली हमारी टीवी संस्कृति हैं, 'मामा के बेटे ने इंजीनियरी की है इसलिए मेरा भी बेटा करें और चाचा के बेटी ने डॉक्टरी में दाखिला लिया हैं, इसलिए मेरा बेटा भी वही करेगा' इस भावना ने हमारा सत्यनाश कर दिया हैं।

अधिकतर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को रुझान विज्ञान शाखा की ओर अधिक होता हैं, यह सब करते समय वे यह भूल जाते हैं कि उन्होंने बचपन में अपने आप को क्या बनने का सपना देखा था, इसके कारण वे लोग मन मारकर वह काम करते है, जिसमें उनकी रुचि कम होती हैं। ऐसे में वे काम तो करते है, लेकिन पूरे मनोयोग से नहीं करते।

'थ्री इडियट' फिल्म का एक इडियट हमें यह सिखाता हैं कि काम वह करो जिसमें आपकी रुचि हो, लता मंगेशकर यदि दूसरे के कहने पर क्रिकेट खेलने लगती तो आज वे 'गान कोकिला' नहीं कहलाती और सचिन तेंदुलकर गाना गाते रहते तो

‘मास्टर-ब्लास्टर' नहीं बनते और ‘क्रिकेट के भगवान’ नहीं कहलाते आदि, लेकिन उस फिल्म के माध्यम से दिए गए संदेश को हम नहीं समझ पाए और थिएटर से ढ़ाई तीन घंटो का मनोरंजन करके वापस लौट आए और जहन में सिर्फ बारिश में भीगती हुई, साड़ी में लिपटी हुई नायिका का बरसात वाला गाना याद रह गया, यही होता हैं मीडिया और फिल्मों का असर, क्योंकि हम अभी भी दूरदर्शन और फिल्मों को केवल मनोरंजन का साधन समझ रह गए, उसी टीवी पर कई ज्ञानवर्धक कार्यक्रम शुरू हुए, कई विज्ञान से संबंधित कार्यक्रम भी चल पड़े उन पर हमने ध्यान नहीं दिया। टीवी हमारे जीवन की सबसे बड़ी बीमारी 'टीवी' में कब तबदील हो गई हमें पता ही नहीं चला, इन सब बातों को देखते हुए मैंने एक दोहा बनाया हैं:

टीवी हमारी मां है, केबल हमारा बाप।
कलियुग का सबसे बड़ा यही तो है पाप।

अर्थात्, हम वही सीख रहे है जो हमारी टीवी माता हमें सीखा रही हैं, वहीं संस्कार हम पर हो रहे हैं, जैसे कार्यक्रमों का प्रसारण केबल और सेट टॉप बॉक्स के द्वारा हो रहा हैं, और इसी का परिणाम हमारे समाज मन पर भी हो रहा हैं।

एक समय था जब गांवों और शहरों में लोग एक-दूसरे के घर जाया करते थे, एक दूसरे की खैरियत पूछते थे, जिससे सामाजिक संबंध और प्रगाढ़ होते थे और आज हम देखते हैं कि पड़ोसी के घर में जब झगड़ा होता हैं तो लोग खुशी मनाते हैं, ऐसा हो भी क्यों नहीं क्योंकि 'वोनर्स प्राइड, नेबर्स जेलसी' अर्थात् 'आपकी बढ़े शान और पड़ोसी की जले जान' सिखाने वाला विज्ञापन का ‘ब्रेन हैमरिंग' जो दिन-रात हमारे दिमाग कर किया गया है, वह अपना असर तो दिखाएगा ही।

आपने एक बिस्किट का विज्ञापन देखा होगा, जिसमें मंत्री महोदय भाषण दे रहे होते हैं, तभी आईपीएल का संगीत बजते ही मंत्री महोदय भाग कर क्रिकेट देखने चले जाते है। बात थोड़ी हास्यापद हैं, लेकिन काफी गंभीर भी है, क्योंकि जनता का विश्वास प्राप्त करने के बाद मंत्रियों क्रिकेट असोसिएशन का अध्यक्ष हैं, तो हम भी पीछे क्यों रहे, हमें भी क्रिकेट देखना ही चाहिए, मैंने ग्रामीण क्षेत्रों के लाखों युवाओं को देखा हैं जो अपनी-अपनी बीस-बीस, पचास-पचास ऐकड़ की खेती को छोड़कर लगातार छः-छः घंटो तक वन-डे मैच देखने के लिए टीवी के सामने बैठे रहते हैं। यह तो हो गई वन डे की बात, जब टेस्ट मैच होता हैं तो तीन दिन तो खेत में जाना ही भूल जाइए लोग तो यही सोचते हैं कि उनके नेता ही जब क्रिकेट में

इतना इंटरेस्ट लेते है तो वे क्यों न ले, चाहे उधर बीस एकड़ की खेती की ऐसी की तैसी क्यों न हो जाए।

यही वह कारण हैं, जिससे हमारा खेती-बाड़ी जैसे विषयों से ध्यान हट गया और आपने सुना होगा कि 'सावधानी हटी और दुर्घटना घटी दुर्घटना यह हो गई कि हमने खेती की ओर से अपना ध्यान कही ओर लगा लिया, किसी ने अपना ध्यान राजनीति में लगाया, तो कोई दोपहर में अपने फिल्मों के चक्कर में अपनी ही खेती की ऐसी की तैसी कर बैठा, खेती-किसानी एक मेहनत करना ही मेहनत का काम हैं इसमें जितनी ज्यादा मेहनत आप करेंगे, उतना ही फायदा किसानों को होता हैं, लेकिन आधुनिक मैकालियन अंग्रेजी प्रभावित शिक्षा पद्धति हमें सिखाती हैं कि मेहनत करना अनपढ़ गंवारों का काम हैं, बुद्धिमान तो केवल नौकरी और राजनीति करते हैं। यही सोच हमारे किसानों की आत्महत्या का बहुत बड़ा कारण है। जिम में जाकर डंबल उठाने से अच्छा है, हल चलाओ, अपने आप मसल बन जाएंगे। आखिर वहां जाकर भी तो पसीना ही बहाओगे और उसका कोई फायदा भी नहीं हैं।

अगर आप किसानी का थोड़ा भी ज्ञान रखते होगे तो आपको पता चलेगा कि कृषि विज्ञान दुनिया का सबसे बड़ा फायदेमंद विज्ञान है, जिससे जीवन में खुश हाली आती हैं आप कितना भी पढ़ लिख लीजिए, बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल कर लीजिए, खाएंगे तो अनाज ही, बिना खेती के अनाज मिलना संभव नहीं हवा में खेती होती नहीं, इसके लिए आपको जमीन पर ही आना होगा।

आजकल आप देखते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों के लोग जो खेती, किसानों से जुड़े है; फिल्मों में हिरोइन के साथ अययाशी करते, विलन के साथ मार-पीट करते हुए और बनियान निकालकर हिरोइन के साथ नाचते हिरो (असलियत में जीरो) को देखते हैं और उसी ढाई तीन घंटे के नकली हिरो को अपना आदर्श मानते हैं। वही ढाई-तीन घंटे का हिरो अपने वास्तविक जीवन में कितना जीरो होता है, यह भी सबने अपनी आंखों से देखा होगा, फुटपाथ पर सोए, व्यक्ति को नशे की हालत में गाड़ी के नीचे कुचल कर जाने वाला कभी हिरो हो सकता है? देश की सहिष्णुता को चोट पहुँचाने वाले कभी देश के हिरो नहीं हो सकते हैं? बिल्कुल नहीं, मगर ऐसी घटनाओं के तुरंत बाद एकाद फिल्म को हिरो को महान बनाने वाली फिल्म दिखा दो और प्रेषकों का ब्रेनवॉश कर दो हो गया, यही तो हमारे देश में हो रहा हैं।

खैर, हमारा किसान हमारी राह देख रहा हैं, इन सभी बातों को साथ-साथ टीवी पर दिखाई जाने वाली शहरों की चकाचौंध करने वाली फिल्मों के दृश्य किसानों के

मन में ग्लानी निर्माण करते हैं, उन्हें भी यही लगता हैं क्यों न खेती किसानी छोड़कर शहर में बसा जाए। महात्मा गांधी इन सभी बातों के विरोधी थे उनका कहना था कि असली भारत गांवों में बसता हैं, 'गांवो की ओर चलो' लेकिन औद्योगिकरण और विदेशी कंपनियों की शहरों में बढ़ोत्तरी के कारण देश के भूमिपुत्र अपनी जमीन को छोड़कर शहरों में नौकर बनने के लिए मजबूर हो गए और शहरों में आकर बस गए, शहरों में आकर शहरों में भ्रष्टाचार और भेदभाव वाली राजनेता से प्रभावित होकर अपराधी लोगों के संपर्क में आए और अपना चारित्रिक पतन करना शुरू कर दिया।

हालांकि टीवी पर कुछ कार्यक्रम ऐसे भी है जो किसानों को खेती संबंधी जानकारी देने की कोशिश करते हैं, लेकिन दिन-भर नकारात्मक प्रचार के बाद खेती संबंधी सकारात्मक सलाह सुनने में किसानों को भी रुचि नहीं रही।

पहले किसान खेती-बाड़ी के साथ पशुपालन किया करते थे और पशुपालन से खेती में अधिक फायदा भी होता था। धीरे-धीरे शहरों के बड़े-बड़े वाहनों को देखकर किसानों ने अपने जानवरों और परंपरागत वाहनों को बेचकर ट्रैक्टर आदि खरीदने शुरू किए, ट्रैक्टर से बहुत जल्द खेती की जा सकती हैं, लेकिन आपका ट्रैक्टर गोबर नहीं दे सकता, जो खेत की जमीन को और उपजाऊ बनाता हैं गरीब गाये को तो आपने कसाईयों को बेचना शुरू कर दिया, भारत में गाय को अंतिम दम तक पालने का रिवाज रहा हैं, पहले भारत में बेटी को दहेज में गाय दी जाती थी, ताकि उसके मायके में गाय से मिलने वाले दूध और अन्य पदार्थो से बच्चों और घर के अन्य लोगों का पोषण हो सके, धीरे-धीरे यह प्रथा भी बंद हो गई, गाय को बेचा नहीं जाता था बल्कि उसका दान किया जाता था और उसे बेचने के बजाय उसे अंतिम दम तक पालने का रिवाज था। क्योंकि वह अंतिम दिन तक गोबर और गोमुत्र देती थी, जो खेती के लिए अमृत समान था, उसे आपने कसाई को बेचा केवल कुछ पैसों के लिए, तो क्या होगा, एक दिन आपको भी कर्जदार हो कर्ज के बोझ से फांसी लगानी पड़ी।

टीवी पर दिखाए जाने वाली विज्ञापन जो अधिकतर विदेशी कंपनियों के उत्पादों के होते हैं, उनका उत्पादन, विपणन और बिक्री विदेशी कंपनियां करती हैं, जिससे वह करोड़ो का मुनाफा कमाती हैं, लेकिन इन वस्तुओं को बनाने वाला सीधा-सा किसान कभी भी किसी कंपनी का ब्रांड एम्बेसेडर नहीं बनता, जो लोग उनके द्वारा बनाए उत्पादों का विज्ञापन करते हैं, उन्हें किसानों से चिढ़ होती हैं।

आजकल कुछ जागरूक किसान अपनी खेती में नवनवीन प्रयोग करके खेती

की उर्वरता को बहाने की दिशा में सकारात्मक कदम उठा रहें हैं और अपनी खेती किसानी को पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त करने का काम भी कर रहें हैं, सरकार भी इस दिशा में सकारात्मक कदम उठा रही हैं, किसान चैनल के माध्यम से किसानों 24x7 खेती करने के नए-नए तरीके, वैज्ञानिक जानकारी और नई योजनाओं से परिचय करा रही हैं, इससे किसानों में वैज्ञानिक तरीके से खेती करने की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी हो रही हैं, यह एक सकारात्मकता कदम है। किसान चैनल पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रम बहुत ही नव-नवजीवन और वैज्ञानिकता से भरे होते हैं किसान आमतौर पर परंपरागत तरीके से खेती करता हैं, लेकिन वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर की गई खेती निश्चित ही लाभ पहुंचा सकती हैं, रासायनिक खाद से खेती करने से होने वाले दुष्परिणाम, खेतों में बची फसल को जलाने से होने वाला नुकसान इत्यादि की जानकारी किसान चैनल पर दिखाई जाती हैं। जिससे किसानों को लाभ हो रहा हैं।

कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त और विदेशों से लौटे भी खेती किसानी को वैज्ञानिक तरीके से करके अपना नाम देश ही नहीं बल्कि विदेशी में चमका रहे हैं। यदि खेत को युवा पीढ़ी वैज्ञानिकता से करें तो यह एक नई पहल हो सकती है, साथ ही खेती में होने वाले लाभ के साथ-साथ गांवों से शहरों की तरफ होने वाले पलायन को भी रोका जा सकता है।

कुल मिलाकर हमें जीवनदायी कृषि संस्कृति को समझना होगा और देश के किसानों को जय जवान के साथ जय विज्ञान का भी नारा लगाना होगा, तभी जय किसान का नारा सार्थक होगा।

भारत में चौबिस घंटे चलने वाला विज्ञान को संमर्पित एक विज्ञान चैनल होना चाहिए, जिसके माध्यम से देश में ज्ञान-विज्ञान के कार्यक्रमों को प्रसारित हो सकें।

स्वयं प्रभा :

घर बैठे टीवी के माध्यम से पढ़ाई

जिस समय भारत में टीवी आया था तब इसे केवल मनोरंजन का साधन माना गया था। भारत में रामायण और महाभारत को देखने के लिए भारत के अधिकतर लोगों ने घर में पहली बार ब्लैक एंड व्हाईट टीवी खरीदा था। बाद में उसने फिल्में, गीत और हास्य कार्यक्रमों को देखने का स्थान लिया। धीरे-धीरे इसी टीवी ने सामाजिक और आर्थिक विषयों पर कार्यक्रमों पर प्रसारण शुरू हुआ। बाद में कृषि से जुड़े कुछ कार्यक्रमों ने देश के किसानों को टीवी के प्रति आकर्षित किया। क्रिकेट जैसे खेलों के प्रसारण के कारण युवा वर्ग का यह पसंदीदा विषय बन गया। बाद में समाचारों और दिन-भर की घटनाओं और धारावाहिकों ने घर के प्रत्येक सदस्य के लिए टीवी परिवार का एक अविभाज्य अंग बन गया। कुछ दिनों के बाद इसमें कुछ शैक्षिक कार्यक्रम भी आने लगे। धीरे-धीरे टीवी हमारे घर का ही इलेक्ट्रॉनिक सदस्य बन गया, जिसके सामने बैठकर खाना खाना, एक रोज का काम हो गया। बच्चों को मोगली जैसे कार्यक्रम बहुत ही अच्छे लगते थे। बाद में इसी टीवी ने कई क्षेत्रों के कलाकारों को अपना मंच दिया। विज्ञापनों के कारण यही टीवी कमाई का एक साधन बन गया।

बच्चों को हम टीवी से दूर रखने का प्रयास भी करते हैं क्योंकि यही टीवी पढ़ाई में बाधक बनने और समय को बर्बाद करने का माध्यम समझा जाता है। इसके चलते वैज्ञानिकों ने इसे इडियट बॉक्स भी कहा था लेकिन समय के साथ हर वस्तु में परिवर्तन आने लगता हैं। अब इसी इडियट बॉक्स का स्थान ले लिया है। भारत सरकार ने देश में ई-शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए स्वयं, और राष्ट्रीय शैक्षिक संकलन की शुरुआत की हैं, जिसका नाम हैं- स्वयंप्रभा इस डिजिटल पहल का उद्देश्य वर्ष 2020 तक उच्च शिक्षा में दाखिले के अनुपात को साढ़े चौबीस से बढ़ाकर तीस करना हैं।

शिक्षा को समाज के हर वर्ग के लिए सुलभ और सुगम बनाने के लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने 'स्वयं प्रभा' नाम से 32 विशेष टीवी चैनलों की योजना बनाई है। ये चैनल दिन में करीब 4 घंटे अलग-अलग विषयों पर लाइव कार्यक्रम प्रसारित करेंगे। यह सभी चैनल किसी भी कंपनी के सेट-टॉप बॉक्स पर चैनल संख्या 2001 से 2023 पर देखे जा सकते हैं। सकी आधिकारिक साइट हैः https://

swayamprabha.gov.in/ स्वयंप्रभा साईट
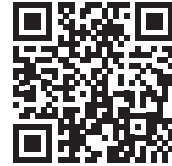
राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी योजना :

भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने दो डिजिटल शिक्षा पहलों - स्वयं और स्वयंप्रभा का शुभारंभ रविवार 9 जुलाई, 2017 को गुरु पूर्णिमा के अवसर पर किया था। इसी दिन देश भर में गुरु या शिक्षकों की पूजा की जाती हैं। आज टीवी ने इलेक्ट्रॉनिक गुरु का स्थान ले लिया हैं। डिजिटल टेक्नोलॉजी से अच्छे शिक्षक बड़ी संख्या में छात्रों को सीधे सिखाने के योग्य हैं। जो छात्र/छात्रा प्रत्यक्ष रुप से कक्षाओं में उपस्थित नहीं हो सकते हैं वह घर पर ही पढ़ाई कर सकेंगे। आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) समाधान एक इंटरैक्टिव लर्निंग का अनुभव प्रदान करते हैं, जिससे देश के दूरदराज के इलाकों के छात्रों को शीर्ष शिक्षकों के व्याख्यान से फायदा हो सकता है।

स्वयं और स्वयप्रभा के अतिरिक्त, मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने दो अन्य पहलों की शुरुआत की। यह दो पहल राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी (एनएडी) और राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (एनडीएल) हैं।

स्वयं कक्षाएं :

स्वयं एक विशाल ओपन ऑनलाइन कोर्सेज (एमओओसीएस) की पहल हैं। इसका अर्थ हैं कि स्वयं के तहत शैक्षणिक पाठ्यक्रम ऑनलाइन उपलब्ध कराए जाएंगे और डिजिटल कक्षाओं के माध्यम से छात्रों तक पहुंचा जा सकता है। इसमें देश का कोई भी व्यक्ति पंजीकरण कराकर शिक्षा ग्रहण कर सकता हैं। यदि कोई छात्र स्वयं की पहल के माध्यम से प्रमाणीकरण चाहता है, तो मामूली शुल्क पर प्रमाण-पत्र उपलब्ध कराया जाएगा। इस पहल के माध्यम से अभी अध्ययन सामग्री और कक्षा में हुए परीक्षण के वीडियो के निःशुल्क उपलब्ध कराया जाएगा। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मंत्री के अनुसार स्वयं योजना के तहत उच्च माध्यमिक विद्यालय स्तर से स्नातक स्तर तक का पाठ्यक्रम उपलब्ध होगा।

स्वयंप्रभा :

स्वयंप्रभा प्रत्यक्ष रुप से डायरेक्ट टू होम या डीटीएच (सीधे आपके घर) सुविधा है, इसका मतलब यह हैं कि कक्षा के व्याख्यान और अनुभव को 32 डिजिटल शैक्षिक टेलीविजन चैनलों के माध्यम से सीधे इच्छुक छात्रों तक उपलब्ध कराया जाएगा, जो अब भी शिक्षा मंत्रालय द्वारा चलाए जाएंगे। इस चैनलों को डिश एंटीना और टेलीविजन द्वारा कोई भी व्यक्ति देख सकता हैं। इन चैनलों पर नई शैक्षणिक सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी, जो प्रत्येक दिन कम से कम 4 घंटे प्रसारित होगी। किसी कारणवश जो छात्र एक समय इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने से चूक गए हैं उनके लिए इस कार्यक्रम को दोबारा प्रसारित किया जाएगा। स्वयं प्रभा योजना कक्षा दस के स्तर से लेकर आईआईटी तक के प्रारंभिक पाठ्यक्रमों को कवर करेगी। राष्ट्रपति मुखर्जी ने कहा, यह पहल ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता के बंटवारे की खाई को भरने में मदद करेगी।

हाईस्कूल स्तर के छात्र के लिए आईआईटी दिल्ली करेगा और इसके कॉर्डिनेटर प्रो. रवि सोनी होंगे। 23 से 26 और 32वें चैनल इग्नू के प्रबंधन में होंगे और उनका कॉर्डिनेटर प्रो. उमा कुंजाल को बनाया गया हैं। वहीं 27 और 28 नंबर के चैनलों को एनआईओएस देखेगी और इसके चेयरमैन प्रो. सीबी शर्मा ही कॉर्डिनेटर भी होंगे। 29 और 30 नंबर वाले चैनलों के प्रबंधन क्यूईईई देखेगी और आईआईटी मद्रास के प्रो अशोक झुनझुनवाला इसके कॉर्डिनेटर होंगे।

राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी (NAD) :

राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी योजना अभी भी शुरू की गई हैं। यह एक डिजिटल बैंक हैं, जिसका उपयोग शैक्षणिक संस्थानों द्वारा शैक्षिक डिग्री, प्रमाणपत्र और देश भर के उच्चतर शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रदान किए जाने वाले डिप्लोमा को सुरक्षित करने के लिए किया जा सकता हैं। इसमें इन प्रमाण-पत्रों को खोने का भी डर नहीं होगा। इस डिपॉजिटरी के उपयोग से छात्रों और प्रमाण पत्र धारकों के साथ शैक्षणिक संस्थानों तथा भावी नियोक्ताओं के द्वारा किए जाने वाले प्रमाण-पत्रों के सत्यापन और प्रमाणीकरण में तेजी और आसानी आएगी। इसके साथ ही फर्जी डिग्रियों और प्रमाण पत्रों के सत्यापन की समस्या से निजात मिल जाएगी।

एनडीए सरकार का यह विचार इस साल के शुरू में वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली

के बजट भाषण में शुरू हुआ था। राष्ट्रीय शैक्षणिक डिपॉजिटरी से शिक्षा मंत्रालय की फर्जी डिग्री और विश्व विद्यालयों के बारे में बढ़ती चिंताओं को हल करने की उम्मीद है, इस प्रकार कर्मचारियों, शैक्षिक संस्थानों और छात्रों को सहायता मिलेगी।

नेशनल डिजिटल लाईब्रेरी (एनडीएल) NDL :

नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी (एनडीएल) एक ऑनलाइन लाइब्रेरी हैं। यह देश में किसी को भी 70 लाख से ज्यादा किताबों तक पहुंचने में मदद करेगी। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी में किताबें स्कैन करके अपलोड की गई हैं। यह भारत की सबसे बड़ी ऑनलाइन लाइब्रेरी हैं इसमें काफी उपयोगी और मनोरंजक किताबें पढ़ी जा सकती हैं।

पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा चैनल :

पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा चैनल इस प्रकार हैं:- कला, विज्ञान, व्यापार, कला प्रदर्शन, सामाजिक विज्ञान, मानविकी विषयों, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी, कानून, दवा और कृषि हैं।

स्वयं प्रभा योजना की विशेषताएं :

1. कला, विज्ञान, वाणिज्य, कला प्रदर्शन, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के विषयों तथा इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, कानून, चिकित्सा, कृषि आदि के रुप में पाठ्यक्रम आधारित पाठ्यक्रम दिखाएं जाएंगे।
2. प्रारंभ में कार्यक्रम अंग्रेजी भाषा में दिखाए जा रहे हैं। लेकिन कुछ समय के बाद सरकार क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रमों का शुभारंभ किया जाएगा।

छात्रों को स्वयं प्रभा योजना से मदद :

1. तस्वीरें, वीडियो और विषय विशेषज्ञों के द्वारा इंटरेक्टिव अध्ययन दिया जाएगा।
2. सामग्री देखने के बाद, छात्रों को एक टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर के माध्यम से अपने संदेश स्पष्ट कर सकते हैं।
3. मंत्रालय ने विषय विशेषज्ञों की नियुक्ति की हैं। इन विशेषज्ञों के द्वारा

अध्ययन सामग्री का चयन किया जाएगा। विषय विशेषज्ञों की मदद से छात्र अपने सवालों के जवाब जान सकेंगे।

स्वयंप्रभा को जीएसएटी- 15 उपग्रह का उपयोग करके 24 घंटे और सातों दिन उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए समर्पित 32 डीटीएच चैनलों के समूह के रुप में माना जाता हैं। हर दिन कम से कम (4) घंटे के लिए नई सामग्री होगी जो दिन में 5 बार दोहराई जाएगी, जिससे छात्रों को उनकी सुविधा का समय चुनने की अनुमति मिल जाएगी। चैनल बिसाग गांधीनगर से अपलिंक किए गए हैं। सामग्री एनपीटीईएल, आईआईटी, यूजीसी, सीईसी, इग्नू, एनसीईआरटी, और एनआईओएस द्वारा प्रदान की जाती हैं। INFLIBNET केंद्र वेब पोर्टल को बनाए रखता हैं। इन सभी चैनलों के कार्यक्रमों को अपने मोबाइल पर भी युटयूब के माध्यम से देखा जा सकता हैं स्वयंप्रभा युटयूब लिंक https://youtube.com/swayamprabha/

डीटीएच चैनल में पाठयक्रमों और अंडर ग्रेजुएट स्तर पर पाठ्यक्रम, कला, विज्ञान, वाणिज्य नाट्य कला, सामाजिक विज्ञान और मानविकी, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, कानून (विधि), औषधी, कृषि इत्यादि जैसे विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रमों की प्रस्तुति के लिए विकसित किया जा रहा हैं।

1. स्कूल शिक्षा (कक्षा 9-12 स्तर) भारत के बच्चों के लिए प्रशिक्षण के साथ-साथ क्षण और सीखने के लिए मॉड्यूल के लिए मॉडयूल को बेहतर तरीके से समझने में मदद करते हैं और पेशेवर डिग्री कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए स्पर्धा परीक्षाओं की तैयारी में उनकी सहायता करते हैं।
2. पाठ्यक्रम-आधारित पाठ्यक्रम जो भारत और विदेशी में भारतीय नागरिकों के जीवनभर के शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।
3. 11वीं और 12वीं कक्षा के छात्रों के लिए स्पर्धा परीक्षाओं की तैयारी के लिए उपयोगी हैं। इससे भारत के उन दूर-दराज के गांवों तक आज एक कोई शिक्षक नहीं पहुंच सकता वहां भी स्वयंप्रभा पहुंचकर ज्ञान के प्रकाश से भारत को आलोकित करेगी।

माइक्रोसॉफ्ट के उपयोगी ऐप्लीकेशन

भारतीय भाषाओं के लिए स्थानीय यूनिकोड समर्थन प्रदान करने में माइक्रोसॉफ्ट वर्ष 2000 के बाद से मार्गदर्शक कि कर रहा हैं। भाषा अवरोध को तोड़ने के लिए माइक्रोसॉफ्ट ने दो दशक पहले भारतीय भाषाओं के साथ काम करना शुरू किया और भारतीय भाषाओं में कंप्यूटिंग को गति देने के लिए 1998 में भाषा को प्रोजेक्ट को शुरू किया था। माइक्रोसॉफ्ट के सभी उत्पादों में 22 संवैधानिक भाषाओं के रुप में मान्यता प्राप्त टेक्स्ट इनपुट में समर्थन करता हैं और 12 भाषाओं में विंडोज इंटरफेस का भी समर्थन करता हैं। माइक्रोसॉफ्ट का http://bhashaindia.com अथवा https://microsoft.com/en-in/bhashaindia/ भाषा समुदाय पोर्टल इंडिक कंटेंट्र और टूल्स का एक महत्वपूर्ण भंडार हैं।

भारत में क्षेत्रीय भाषा के इंटरनेट प्रयोगकर्ताओं की संख्या लगातार बढ़ा रही हैं। यह लोगों को समर्थ बनाने के लिए एक विशाल अवसर के रूप में डिजिटल समावेशिकरण को चिन्हांकित करता हैं।

क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं में और अधिक ऐप्स विकसित किए जाने के साथ, सैंकड़ों लाखों प्रयोगकर्ताओं को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा बैंकिंग, संचार, ई-कॉमर्स, मनोरंजन, कृषि, ई-प्रशासन और अन्य के बीच यात्रा में संसाधनों तक पहुंच प्राप्त होती हैं। यहां यह देखना होगा कि कैसे माइक्रोसॉफ्ट उत्पाद भारतीय भाषाओं के साथ काम करते हैं।

विंडोज 10 :

जब भारतीय भाषाओं के साथ काम करने की बात आती हैं तो सबसे प्रभावशाली और फीचर से भरा ऑपरेटिंग सिस्टम है। इसमें आप न केवल टेक्स्ट को आसानी इनपुट कर सकते है, बल्कि आप विंडोज यूजर इंटरफेस को अपनी पसंद की भाषा में भी परिवर्तित कर सकते हैं। आप अलग-अलग फॉन्टस का उपयोग भी कर सकते हैं, जो यूनिकोड मानकों का समर्थन करते हैं और यूनिकोड का समर्थन करने वाले किसी भी एप्लीकेशन में सहजता से में काम कर सकते हैं। इसमें माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर जैसे कई विंडोज ऐप्स हैं जो भारतीय भाषाओं के साथ काम करते हैं, संक्षेप में, विंडोज 10 भारतीय भाषा प्रयोगकर्ता को एक समान, सुविधाजनक अनुभव प्रदान करता हैं।

ऑफिस 365 :

ऑफिस सूट में विभिन्न प्लेटफॉर्म पर प्रयोगकर्ताओं को अपनी मूल भाषा में आसानी से सामग्री बनाने और उपयोग करने की अनुमति देता हैं। ऑफिस ऐप्स सभी भारतीय भाषाओं के साथ काम करते हैं और विंडोज 7 या बाद के संस्करण पर चल सकते हैं। ऑफिस ऐप्स विंडोज, एंड्राइड और आइओएस में बिना किसी बाधा के इंटरैक्शन को सहायता देता हैं।

माइक्रोसॉफ्ट लैंग्वेज एसेसरी पैक :

पैक, इसे निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता हैं। यह विंडोज और ऑफिस में भारतीय भाषाओं का समर्थन करता हैं। इस लैंग्वेज एसेसरी पैक में विंडोज में 300,000 शब्दों तक और ऑफिस में 600,000 शब्दों के लिए अनुवाद कार्य भी होता है। लैंग्वेज एसेसरी पैक यूजर इंटरफेस को इच्छानुसार भाषा में परिवर्तित करता हैं और क्षेत्रीय भाषा में इंस्ट्रक्शन्स और डॉयलॉग बॉक्सेस प्रदान करता हैं।

इनपुट मेथड एडिटर्स :

जबकि विंडोज स्टैंडर्ड इंडिक की-बोर्ड्स के लिए बिल्ट-इन समर्थन के साथ आता हैं, कुछ प्रयोगकर्ताओं अन्य मेथड्स जैसे ट्रांस्लिटेरेन के उपयोग से टेक्स्ट को इनपुट करना पसंद करते हैं। bhashaindia.com पर ऐसे प्रयोगकर्ताओं के लिए माइक्रोसॉफ्ट ने विभिन्न प्रकार के इनपुट मेथड एडिटर्स (IMEs) उपलब्ध कराये हैं। विंडोज 10 में यह अब इनबिल्ट आने लगे हैं।

बिंग

यह सर्च टूल नौ भारतीय भाषाओं का समर्थन करता हैं। भारतीय भाषा अनुभव डेस्कटॉप के साथ-साथ मोबाइल उपकरणों पर भी उपलब्ध हैं। बिंग ट्रांसलेटर भी कई भारतीय भाषाओं के साथ काम करता हैं।

स्काइप लाइट

एंड्रॉयड के लिए हमारे स्काइप ऐप का तेज और लाईट वर्जन के रूप में बनाया गया, जिसे नेटवर्क स्थितियों को चुनौती देने में अच्छा प्रदर्शन देने के दौरान भारत में लोगों जुड़े रहने में मदद करने के लिए बनाया गया। यह ऐप अंग्रेजी के अलावा बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मलयालम, मराठी, ओडिशा, पंजाबी, तमिल, तेलुगू और उर्दू 11 भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराया गया हैं।

काइजाला ऐप

'काय झाला?' मराठी का एक शब्द हैं, जिसका अर्थ होता हैं क्या हुआ? क्या चल रहा हैं? काइजाला एक मोबाइल ऐप हैं जो बड़े समूह संचार और कार्य प्रबंधन के लिए बनाया गया हैं, जो दूरस्थ स्थानों में 2G नेटवर्क के माध्यम से भी पहुंचने में भी सहायक हैं। यह ऐप क्षेत्रीय, एंड्रायड और आईओएस प्रयोगकर्ताओं के लिए हिंदी, बंगाली और तेलुगू भाषा में उपलब्ध हैं।

स्विफ्ट की

एंड्रायड और आइओएस प्रयोगकर्ताओं के लिए एक की-बोर्ड हैं जो आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शक्ति लाभ उठाते हैं। इससे ज्यादा से ज्यादा 24 भारतीय भाषाओं और मारवाड़ी, बोड़ो, संथाली और खासी सहित उपभाषाओं में टेक्स्ट इनपुट की अनुमति देता हैं। कीपैड्स में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस लाना भविष्यसूचक तेजी से लेखन के योग्य बनाता है। यह प्रयोगकर्ताओं को मिश्रित भाषाओं में लिखने की अनुमति भी देता है।

मशीन अनुवाद

कंपनी भारतीय भाषाओं के लिए रियल-टाइम भाषा अनुवाद में सुधार करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और डीप न्यूरल नेटवर्क्स (DNN) का लाभ उठाती हैं। इसने माइक्रोसॉफ्टब्राउजर्स, बिंग सर्च साथ ही माइक्रोसॉफ्ट आफिस 365 उत्पादों

पर किसी समय भरतीय भाषा अनुवाद करने में प्रयोगकर्ताओं की मदद की हैं। AI और DNN का प्रयोग माइक्रोसॉफ्ट ट्रांसलेटर ऐप में भारतीय भाषा अनुवाद के लिए विंडोज और एंड्रॉयड पर किया जाता हैं।

स्वे

स्वे नए विचारों, कहानियों, रिपोर्ट्स और प्रस्तुतियों को मल्टीमीडिया कंटेंट की मदद से क्षेत्रीय भाषाओं में व्यक्त करने के लिए उपयोगी ऐप है। यह ऐप्लीकेशन प्रयोगकर्ताओं को संबंधित छवियों, वीडियोस, ट्वीट्स और अन्य कंटेंट जो डिजाइन और ले आउट के बारें में चिंता किए बिना निर्माण में उपयोग की जा सकती हैं व ढूंढने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में खोजों का सुझाव देता हैं।

वन नोट

वन नोट, टू-डू सूचियों, भाषण और मीटिंग नोट्स, अवकाश योजनाएं या कुछ भी जो एक व्यक्ति आयोजित या याद रखना चाहता हैं, को प्रबंधित करने के लिए एक डिजिटल नोटबुक हैं। प्रयोगकर्ता एक क्षेत्रीय भाषा, रिकॉर्ड और शेयर में टाइपिंग और एडिटिंग भी कर सकते हैं। वन नोट, मैक (डंब), विंडोज फोन, आई फोन, आईपैड, एप्पल वॉच, एंड्रायड और एंड्रायड वियर डिवाइसिज के लिए निशुल्क उपलब्ध हैं।

इंडिक ईमेल एड्रेस

माइक्रोसॉफ्ट अपने ईमेल ऐप्स और सेवाओं में 15 भारतीय भाषाओं में ईमेल एड्रेसस का समर्थन करता है, जिसमें एंड्रॉइड और IOS पर आउटलुक ऐप्स शामिल हैं। यह भविष्य में उपयोगी सिद्ध होगे और जब अन्य भारतीय भाषाओं में डोमेन नाम उपलब्ध हो जाते हैं तब तक माइक्रोसॉफ्ट उन भाषाओं में स्वचालित रूप से ईमेल पतों का भी समर्थन करेगा। इसमें कोई संदेह नहीं हैं कि भारत जैसे देश में स्थानीयकरण, समाज के एक व्यापक खंड के लिए टेक्नोलॉजी तक पहुंचने में सक्षम होना कंप्यूटिंग की अगली लहर को चलाएगा, जिससे वर्तमान भाषा विभाजन को समाप्त करने में मदद मिलेगी।

माइक्रोसॉफ्ट के फोनेटिक इंडिक की-बोर्ड

माइक्रोसॉफ्ट ने विंडोज 10 के लिए फोनेटिक इंडिक कीबोर्ड लॉन्च किए हैं। यह कीबोर्ड 10 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। कंपनी का मानना है कि ये कीबोर्ड कम से कम 20 प्रतिशत टाइपिंग की गति में सुधार करेंगे। सिलिकॉन वैली के दिग्गज भारतीय बाजार के लिए अपनी सेवाओं को निजीकृत करने की दिशा में आक्रामक रूप से काम कर रहे हैं और माइक्रोसॉफ्ट अपनी भारत केंद्रित उपयोगिताओं का विस्तार करने वाली नवीनतम कंपनी हैं। सत्या नडेला की अगुवाई वाली कंपनी ने अब विंडोज 10 में 10 भारतीय भाषाओं के लिए स्मार्ट फोनेटिक कीबोर्ड जारी किए हैं। यह अपडेट ओएस के लिए मई 2019 के अपडेट (19H1) का एक हिस्सा हैं और इसका उद्देश्य सभी के लिए प्रौद्योगिकी को व्यक्तिगत और सुलभ बनाना है। माइक्रोसॉफ्ट का कहना है कि, अपडेटेड वर्चअल कीबोर्ड उपयोगकर्ता के व्यवहार पैटर्न और वरीयताओं से सीखता हैं, और तदनुसार भारतीय भाषाओं में व्यक्तिगत शब्द सुझाव प्रदान करता हैं। अद्यतन ध्वन्यात्मक कीबोर्ड हिंदी, बांग्ला, तमिल, मराठी, पंजाबी, गुजराती, ओडिया, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम भाषाओं में उपलब्ध हैं। ये कीबोर्ड भारतीयों को उनकी मूल / पसंदीदा भाषाओं में काम करने की अनुमति देगा।

नए उपकरण न केवल कंप्यूटिंग को समावेशी बनाने में मदद करेंगे, बल्कि उनसे भारतीय भाषाओं में टाइपिंग की गति और सटीकता में भी कम से कम 20 प्रतिशत सुधार होने की उम्मीद हैं इसके अलावा, वे कई क्षेत्रीय प्रतीकों (जैसे भारतीय अंको) को इनपुट करना आसान बनाते हैं। माइक्रोसॉफ्ट ने एक प्रेस नोट में कहा कि मौजूदा कीबोर्ड में पारंपरिक रूप से लिपिबद्ध अक्षरों का उपयोग करके

उपयोगकर्ताओं के लिए अनूदित इंडिक टेक्स्ट को इनपुट करना आसान हो गया हैं, माइक्रोसॉफ्ट ने एक प्रेस नोट में कहा। उदाहरण के लिए, यदि आप लैटिन वर्णों में Bharat टाइप करते हैं, तो फोनेटिक कीबोर्ड सेट लक्ष्य भाषा के आधार पर भारत (Hindi), बंगाली (Bengali), गुजराती (Gujrati), या पंजाबी (Punjabi) को अंतिम आउटपुट ट्रांसलेट करेगा अनुवाद के विपरीत, लिप्यांतरण स्वचालित रूप से पाठ को एक स्क्रिप्ट से दूसरी में परिवर्तित करता है। इस अद्यतन से पहले, इंडिक उपयोगकर्ताओं को कंपनी के इंडिक समुदाय की वेबसाइट 'Bhashaindia.com' या तीसरे पक्ष के टूल से माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल (ILIT) डाउनलोड करना आवश्यक था।

अपडेट किए गए की बोर्ड स्वचालित रूप से नवीनतम विंडोज 10 अपडेट 1903 के साथ उपलब्ध कराए गए हैं। जिन उपयोगकर्ताओं ने अपने ऑपरेटिंग सिस्टम को अपडेट नहीं किया हैं उन्हें इन की बोर्ड पर पहुंच प्राप्त के लिए इसे करना होगा। सिस्टम को अपडेट करने के लिए, Setting > Updates & Security > Windows Update* इस लिंक पर जाएं। एक बार ऑपरेटिंग सिस्टम अपडेट हो जाने के बाद, उपयोगकर्ता लैंग्वेज सेटिंग्स में जाकर फोनेटिक की बोर्ड को सक्रिय कर सकते हैं। कर सकते हैं। https://news.microsoft.com/en-in/smartphonetic-indic-keyboards-10-indian-languages- windows-10/

ऑन स्क्रीन
की-बोर्ड

कंप्यूटर और लैपटॉप में हिंदी और भारतीय भाषाओं के की-बोर्ड में काम करते समय एक समस्या पाई जाती हैं कि बाय डिफॉल्ट कीबोर्ड या तो अंग्रेजी में होता हैं या फिर फिजिकल भौतिक कीबोर्ड अंग्रेजी शब्दों और वर्णों को प्रदर्शित करता हैं जब कभी भारतीय भाषाओं में टाइप करना हो जैसे कि मराठी हिंदी और संस्कृत आदि में तो देवनागरी के वर्णमाला नहीं मिलती हैं, इसका एक सहज सरल और निशुल्क उपाय यह हैं कि कंप्यूटर के ऑनस्क्रीन की बोर्ड का हम प्रयोग करें, यह आपके कंप्यूटर में निशुल्क रूप से बाय डिफॉल्ट उपलब्ध होता हैं इसे सर्च करने के लिए सर्च में OSK (on screen keyboard) शब्द टाइप करने के बाद ऑनस्क्रीन कीबोर्ड का ऑन होगा, इसे ओपन करने के बाद और भाषा का चयन करने के बाद आप अपने मनचाही भाषा में टाइपिंग कर सकते हैं, इससे समय और मेहनत दोनों की बचत होती हैं। इसे आप (Shift + Alt) और अल्ट बटन के माध्यम से भाषाओं में भी परिवर्तित कर सकते हैं। यह कीबोर्ड विंडोज 7 विंडोज 8 और विंडोज 10 तथा विंडोज 11 का उपलब्ध होता हैं, इसे Shift और Alt बटन दबाकर दूसरी भाषाओं में परिवर्तित भी किया जा सकता हैं।

देवनागरी लिपि में भी बन सकती हैं ईमेल आईडी

आमतौर पर हम लोग gmail.com, yahoo.com, rediffmail.com, msn.com जैसे डोमेन पर जाकर अंग्रेजी में अपना ईमेल बनाते हैं। मोबाइल पर भी इसी तरह की ईमेल का प्रयोग करते हैं। भारत में यदि पूर्णतः हिंदी देवनागरी में ईमेल हम चाहते हैं तो यह मिल नहीं पाती हैं। लेकिन, भारत में आने से अब हिंदी में मुफ्त प्राप्त करने का अवसर मिल गया हैं। यदि आप अपने नाम की ईमेल प्राप्त करना चाहते हैं तो यह एप्लीकेशन (डाटामेल) गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड कर ले और अपनी ठमेल हिंदी में बना लें। आपको अपने नाम की मुफ्त ईमेल मिल जाएगी, आप इस माध्यम से मेरानाम@डाटामेल.भारत अथवा मेराभारत@डाटामेल.भारत, मेरीकंपनी@डाटामेल.भारत इस प्रकार बना सकते हैं।

जो लोग मुफ्त डोमेन हिंदी में जैसे मेरा नाम.भारत या मेरा देश भारत या मेरी कंपनी भारत चाहते हैं तथा मुफ्त डोमेन से अपनी साईट या ब्लॉग मुफ्त में होस्ट करना चाहते हैं वह उनके लिए साइट भी बना सकते हैं। उपरोक्त उदाहरण में, भारत डोमेन दिए गए हैं। यह abc.com, bbb.org.in, ccc.co.in की तरह ही हिंदी में बनाया गया डोमेन एक्सटेंशन हैं।

आप भी हिंदी में मुफ्त डोमेन, भारत पंजीकृत करवाकर तथा इस डोमेन पर मुफ्त साइट 5 मिनट में बना सकते हैं।

डोमेन रजिस्टर करने से लेकर मुफ्त ब्लॉग गूगल पर बनाने तथा उसे अपने मुफ्त, भारत डोमेन के साथ जोड़ने के लिए पूरी विधि ऊपर दी गई हैं। सम्पूर्ण प्रक्रिया को चित्रों सहित हिंदी में समझाया गया हैं जिससे आप 5 मिनट में अपना हिंदी डोमेन लेकर तुरंत अपनी साइट आरंभ कर सकते हैं।

राहुल खटे स्वयं हिंदी तर होते हुए भी हिंदी के लिए तकनीकी वैज्ञानिक शोध तथा संबंधित साहित्य का अध्ययन व प्रचार करते हैं तथा अपना ब्लॉग हिंदी में तैयार कर लिया हैं इसे भी देखें तथा उनसे भी संपर्क कर हिंदी में कार्य करने के लिए सहयोग प्राप्त कर सकते हैं। हिंदी देवनागरी के लिए यदि आपने भी कोई अभिनव कार्य किया हैं तो ऊपर दाएं भाग में हरे रंग का संपर्क संदेश करने का माध्यम हैं। आप भी संपर्क करें तथा हिंदी को राजभाषा से आगे राष्ट्रभाषा बनाने के इस यज्ञ में सहयोग करें। पारस्परिक सहयोग मैत्री सहभागिता से हिंदी को आगे बढ़ाने से ही यह कार्य होगा। देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता सर्वविदीत और सर्वग्राह्य है। भाषा के विकास की यात्रा में लिपि ने अपना स्थान बरकरार रखा हैं। तकनीकी विकास के साथ भाषाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही हैं। कंप्युटिंग की दुनिया में भारतीय लिपियों ने अपनी वैज्ञानिकता और अचूकता को बरकरार रखा हैं। शुरुआती दौर में कंप्युटिंग की दुनिया में अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं का बोलबाला रहा। लेकिन भाषा विकास के साथ-साथ भारतीय भाषाओं ने भी कंप्युटिंग की दुनिया में अपना स्थान बनाया। इस विकास की यात्रा में भारतीय भाषाओं में वेब डोमेन निर्माण और ई-मेल का निर्माण ने इसे और भी गति प्रदान की।

माइक्रोसॉफ्ट और भारतीय कंपनी डाटा इंफोसिस ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया हैं। भारतीय भाषाओं में ई-मेल तैयार करना अब सरल कार्य हो गया हैं। डाटा इंफोसिस कंपनी आपके भारतीय नाम के सामने डाटामेल। भारत इस प्रकार वेब प्रयोक्त का नाम मिलाकर सुविधा प्रदान करता हैं, जिससे न केवल कंप्युटिंग की दुनिया में भारतीय भाषाओं की पहचान बनी हैं, बल्कि इससे कंप्युटिंग की दुनिया में नई पहल हुई हैं। भारतीय भाषा-भाषियों के प्रयोगकर्ता भी बढ़े हैं। हिंदी, मराठी, कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगू, उड़िया, बंग्ला, गुजराती, पंजाबी और उर्दू आदि भारतीय भाषाओं में भी डाटामेल के माध्यम से संबंधित भाषाओं में भी डाटामेल के माध्यम से संबंधित भाषाओं की लिपियों में ई-मेल निर्माण से न केवल अपनी मातृभाषा के प्रति गौरव की भावना का अनुभव होता हैं, बल्कि इससे अपने अस्तित्व का प्रश्न भी जुड़ा रहता हैं।

तकनीकी क्षेत्र में अमूमन अंग्रजी का ही प्रयोग होता हैं। नांदेड़ स्थित भाषा अधिकारी राहुल खटे ने प्रधानमंत्री से उनकी मातृभाषा गुजराती में अपना ई-मेल आई डी बनाने का अनुरोध किया हैं। आपको अपना ईमेल आईडी देवनागरी में बनाना चाहिए। इसके लिए हम उच्च शिक्षा तक अंग्रेजी में ही शिक्षा प्रदान की जाती है।

आप राहुलखटे@डाटामेल.भारत; (rahulkhate@datamail.in) हिंदी में अपना ई-मेल सतत प्रयास कर रहे हैं और शिक्षा नहीं हैं कि तकनीक का उपयोग करते समय या तकनीकी आईडी बनाकर एक नई पहल में मेरे साथ शामिल होना चाहेंगे? आज के डिजिटल युग में भारतीय भाषाओं में संस्थाओं की ओर से भी प्रयास करें। शिक्षा के लिए भारतीय भाषाएं उपलब्ध नहीं हैं। कंप्यूटर पर या ई-मेल आई डी गुजराती ओड़िया, मराठी, पंजाबी, तमिल, तेलुगू मोबाइल पर काम करने के लिए सभी भारतीय भाषाएं उपलब्ध और उर्दू में भी बना सकते हैं।

क्या आप भी गुजराती में ईमेल बनाएंगे?

लेकिन अधिकांश लोगों को इसकी जानकारी नहीं होने से तकनीकी क्षेत्र की यह सभी सेवाएं धूल कहा रही हैं। शिक्षा विज्ञान की दुनिया में होने वाला हर बदलाव की जानकारी उपलब्ध हैं। किसानों को अंग्रेजी में कृषि की शिक्षा क्यों? ऐसे कई लोग हैं, जो तकनीकी का उपयोग करते समय अंग्रेजी में प्रयोग करते हैं। भारतीय तकनीकी क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के प्रयोग के संबंध में खटे को शुरू से ही विज्ञान में रुचि रही हैं। इसलिए वे तकनीक सीखना और इसके लिए अध्ययन करना उनकी आदत में हैं। वे कहते हैं कि जब तक हम भारत में तकनीक सीखने और सिखाने के लिए भारतीय भाषा को प्राधान्य देते हैं और उसका उपयोग करते हैं। राहुल खटे ने बताया कि जयपुर की कंपनी डाटामेल हैं।

हमारे देश में विज्ञान विषय अंग्रेजी में पढ़ाए जाते हैं। अनेक लोग अंग्रेजी नहीं जानते या कम जानते हैं। भारतीय भाषाओं को प्राथमिकता नहीं देंगे, तब तक किसी भी तकनीक का पूर्ण उपयोग न होगा। भारत में माइक्रोसॉफ्ट और डाटामेल यह दो कंपनियां और डाटा इंफोसिस कंपनी देवनागरी या अन्य भारतीय भाषाओं में ई-मेल उपलब्ध करवाती हैं।

भारतीय भाषाओं में विज्ञान विषय का ज्ञान काफी कम उपलब्ध होता हैं। इसे ध्यान में रखते हुए उन्होंने फेसबुक पर 'विज्ञानप्रचार- प्रसार' पेज शुरू किया। जिसमें विज्ञान की दुनिया में होने वाले हर बदलाव की जानकारी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराई जाती हैं। अनुचित प्रतीत होता हैं। जैसे कृषि संबंधी ज्ञान भारतीय भाषाओं में दिया जाना चाहिए। देवनागरी लिपि ई-मेल आई डी देवनागरी लिपि में बनाई हैं। तकनीकी क्षेत्र के बारे में क्षेत्रीय भाषाओं में जानकारी उपलब्ध हैं। उन्होंने बताया कि हमारी शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजी को अधिक प्राधान्य दिया जाता हैं। ग्रामीण जनता

को अंग्रेजी में सिखाया जाएगा, तो गांव का किसान उसे कैसे समझेगा।

हालांकि केंद्र और राज्य सरकार का प्रयोग अंग्रेजी में ही कंप्यूटर और मोबाइल पर करते हैं, बल्कि भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए फेसबुक पेज बनाया हैं। भाषा अंग्रेजी होने के कारण भारतीय भाषाओं की पूर्ण रूप से उपेक्षा हो रही हैं। इस कारण तकनीकी भाषाओं में उपलब्ध कराई गई हैं। लेकिन आम लोगों को उन स्काउद्व की जानकारी नहीं होने से वहां तक नहीं पहुंचा पाए आपने ई-मेल आई डी भी देवनागरी लिपि में ही बनाई जाती हैं। फेसबुक पर कंप्यूटर एजुकेशन इन हिंदी पेज बनाया हैं, जिस पर आम जनता की भाषा में जानकारी दी जाती हैं। एमएससीआईटी कोर्स प्रत्येक शासकीय कार्यालय के कर्मचारियों के लिए अंग्रेजी माध्यम होने के कारण अनेक लोग हिंदी और मराठी में कंप्यूटर सीख सकते हैं। इसे अनिवार्य किया गया हैं। लेकिन इस पाठ्यक्रम में भारतीय भाषाओं में काम कैसे किया जाए, इस संबंध में एक भी पाठ नहीं हैं। इस पाठ्यक्रम में कंप्यूटर में हिंदी / मराठी / क्षेत्रीय भाषाओं में काम करने का पाठ होना चाहिए।

भारत सरकार के डिजिटल इंडिया मिशन को भी इससे गति मिलेगी।

भारतीय भाषाओं में ई-मेल आईडी और वेब डोमेन

ई-मेल आईडी या ईमेल पता एक व्यक्ति के विशिष्ट ईमेल खाते को पहचानने के लिए उपयोग की जाती है। यह ईमेल भेजने और प्राप्त करने के लिए उपयोग होता है। भारतीय भाषाओं में ईमेल आईडी आमतौर पर अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते हुए लिखी जाती है, लेकिन कुछ भारतीय भाषाओं में भी ईमेल आईडी को उसी भाषा में लिखा जाता है। इसलिए, भारतीय भाषाओं में ईमेल आईडी भाषा के अनुसार भिन्न हो सकती हैं।

वेब डोमेन :

वेब डोमेन एक वेबसाइट का विशिष्ट इंटरनेट पता होता है। यह उपयोगकर्ताओं को वेबसाइट तक पहुंचने के लिए आवश्यक होता है। वेब डोमेनों का प्रमुख उदाहरण हैं। .com, .org., .in आदि। भारतीय भाषाओं में वेब डोमेन का उपयोग अधिकांशतः अंग्रेजी भाषा के एक्सटेंशन के रूप में ही होता है। भारतीय भाषाओं में वेब डोमेन को वही रखा जाता है जो अंग्रेजी में लिखा जाता है, उदाहरण के लिए, https://कंपनी.भारत एक भारतीय भाषा में वेब डोमेन है जो भारतीय संगठनों और व्यक्तियों के लिए उपलब्ध है।

भारतीय भाषाओं में ईमेल आईडी और वेब डोमेन की अधिक जानकारी निम्नलिखित रूप में है –

हिंदी

ईमेल आईडी	ईमेल पता
वेब डोमेन	वेब डोमेन

गुजराती

ईमेल आईडी	ઈમેલ આઈડી
वेब डोमेन	વેબ ડોમેન

बंगाली

ईमेल आईडी — ইমেইল আইডি

वेब डोमेन — ওয়েব ডোমেইন

मराठी

ईमेल आईडी — ई-मेल आयडी

वेब डोमेन — वेब डोमेन

तेलुगु

ईमेल आईडी — **ఇమెయిల్ ఐడి**

वेब डोमेन — **వెబ్ డొమైన్**

तमिल

ईमेल आईडी — *மின்னஞ்சல் முகவரி*

वेब डोमेन — *இணைய டொமைன்*

कन्नड़

ईमेल आईडी — **ಇಮೇಲ್ ಐಡಿ**

वेब डोमेन — **ವೆಬ್ ಡೊಮೇನ್**

मलयालम

ईमेल आईडी — **ഇ - മെയി ഐഡി**

वेब डोमेन — **വെബ് ഡൊമെയ്**

यह केवल कुछ उदाहरण हैं और इसके अलावा अन्य भारतीय भाषाओं में भी ईमेल आईडी और वेब डोमेन के लिए अपने-अपने नामकरण हो सकते हैं। भारतीय भाषाओं में ईमेल आईडी और वेब डोमेन के उदाहरण अंग्रेजी भाषा के उपयोग के साथ भी उपलब्ध हो सकते हैं, जैसे कि ईमेल आईडी और वेब डोमेन।

हिंदी

ईमेल आईडी या ईमेल पता उपयोग होता है। यह ईमेल खाते की पहचान होती है और इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति द्वारा ईमेल भेजने और प्राप्त करने के लिए इस्तेमाल

की जाती है।

वेब डोमेन या डोमेन एक वेबसाइट का विशिष्ट इंटरनेट पता होता है। यह उपयोगकर्ताओं को वेबसाइट तक पहुंचने के लिए आवश्यक होता है। हिंदी भाषा में वेब डोमेन को वही रखा जाता है जो अंग्रेजी में होता है, जैसे कि बवउ, पद, वतह, दमज आदि।

गुजराती

મેન ઇમેઇલ આઈડી અથવા ઇમેઇલ પત્ર વપરાય છે- આ ઇમેઇલ એકાઉન્ટની ઓળખપત્ર છે અને વપરાશકર્તા દ્વારા ઇમેઇલ મોકલવા અને પ્રાપ્ત કરવામાં આવે છે-

વેબ ડોમેન એક વેબસાઇટનો વિશિષ્ટ ઇંટરનેટ પતો હોય છે- આપને વેબસાઇટ પર પહોંચવા માટે આવશ્યક હોય છે- ગુજરાતી ભાષામાં વેબ ડોમેન પણ તેવી રીતે રાખી શકે છે જે અંગ્રેજીમાં હોય

बंगाली

ঈমেল-ডীরু ইমেল আইডি বা ইমেল ঠিকানা ব্যবহার করা হয়। এটি ইমেল অ্যাকাউন্টের পরিচয়পত্র হিসাবে ব্যবহৃত হয় এবং প্রেরণ এবং গ্রহণ করার জন্য ব্যবহার করা হয়।

वेब डोमेनरू ওয়েব ডোমেন বা ডোমেন হল একটি ওয়েবসাইটের নির্দিষ্ট ইন্টারনেট ঠিকানা। এটি ব্যবহারকারীদেরকে ওয়েবসাইটে পৌঁছাতে জন্য প্রয়োজন হয়। বাংলা ভাষায় ওয়েব ডোমেনও সাধারণত ইংরেজি ভাষায় থাকে] যেমন – बवउ, पद, वतह, दमज ইত্যাদি।

मराठी

ईमेल आयडी किंवा ईमेल पत्ता वापरला जातो। हा ईमेल खाता ओळखपत्र म्हणून वापरला जातो आणि वापरकर्त्यांनी ईमेल पाठविण्यासाठी आणि प्राप्त करण्यासाठी वापरला जातो. वेब डोमेन वेब डोमेन किंवा डोमेन हे वेबसाइटचा विशिष्ट इंटरनेट पत्ता आहे। हे वापरकर्त्यांना वेबसाइटला पोहोचण्यासाठी आवश्यक आहे. मराठी भाषेत वेब डोमेन ते ठेवले जाते ज्या अंग्रेजीत असतात, जसे बवउ, पद, वतह, दमज इत्यादि.

यह केवल कुछ उदाहरण हैं और अन्य भारतीय भाषाओं में भी अपने-अपने नामकरण हो सकते हैं। आपके पास विशेष भारतीय भाषा के लिए अधिक जानकारी चाहिए तो कृपया विशिष्ट भाषा का उल्लेख करें।

कौन से वेब डोमेन हिंदी में है?

हिंदी भाषा में वेब डोमेन के रूप में कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैः

.भारत	.gov	.com
.संगठन	.भारती	.in
.विद्या	.भारतम्	.एशिया
.नेट		

ये कुछ हिंदी भाषा के वेब डोमेन के उदाहरण हैं, जिनका उपयोग वेबसाइटों और ईमेल पतों में किया जाता है। कृपया ध्यान दें कि ये उदाहरण हैं और अतिरिक्त हिंदी भाषा में वेब डोमेन भी मौजूद हो सकते हैं।

हिंदी भाषा में वेब डोमेन के रूप में निम्नलिखित विकल्प मौजूद हैः

भारत यह भारतीय वेबसाइटों के लिए विशिष्ट वेब डोमेन है। इसका उपयोग भारत से संबंधित वेबसाइटों, सरकारी संस्थानों, निर्देशिकाओं आदि में किया जाता है। उदाहरण के विद्यालय.भारत, सरकार.भारत, खबरें.भारत इत्यादि। संगठन यह वेब डोमेन संगठनों के लिए उपयोगी होता है। इसका उपयोग गैर-लाभकारी संगठनों, सामाजिक संगठनों, नगर पालिकाओं, परिवारों, संघों, यूनिवर्सिटीज, शैक्षणिक संस्थानों आदि के लिए किया जाता है। उदाहरणर संगठन का नाम संगठन, यूनिवर्सिटी का नाम संगठन, नगरपालिका का - नाम संगठन इत्यादि।

विद्या यह वेब डोमेन शैक्षणिक संबंधित वेबसाइटों के लिए है। इसका उपयोग विश्वविद्यालयों, कॉलेजों, स्कूलों, शैक्षणिक संस्थानों, शिक्षकों, छात्रों आदि के लिए किया जाता है। उदाहरण विश्वविद्यालय का नाम विद्या, स्कूल का नाम विद्या, शिक्षक का-नाम विद्या इत्यादि।

नेट यह वेब डोमेन सामान्य उपयोग के लिए है। इसका उपयोग विभिन्न प्रकार की वेबसाइटों, व्यापारिक संगठनों, व्यक्तिगत ब्लॉग, पोर्टफोलियो, वेब आवेदनों आदि में किया जाता है। उदाहरण वेबसाइट का नाम नेट, व्यापार का नाम नेट,

ब्लॉगका - नाम नेट इत्यादि।

गोव यह वेब डोमेन गोवा से संबंधित वेबसाइटों के लिए है। इसका उपयोग गोवा सरकार, पर्यटन, स्थानीय संगठनों, हॉटल, रेस्टोरेंट्स, यात्रा आदि के लिए किया जाता है। उदाहरण गोव का नाम गोव, पर्यटन का नाम गोव, हॉटेल का - नाम गोव इत्यादि।

ये कुछ हिंदी भाषा में वेब डोमेन के उदाहरण हैं, जिनका उपयोग विभिन्न वेबसाइटों और ईमेल पतों में किया जाता है। ध्यान दें कि ये उदाहरण हैं और अतिरिक्त हिंदी भाषा में वेब डोमेन भी मौजूद हो सकते हैं।

इसके और उदाहरण इस प्रकार है : –

यहां कुछ और हिंदी वेब डोमेन के उदाहरण दिए जाते हैं रोजगार रोजगार से संबंधित वेबसाइटों के लिए, उदाहरणार्थ, नौकरी, रोजगार, सरकारीनौकरी, रोजगार, करियर रोजगार।

सरकार, सरकार से संबंधित वेबसाइटों के लिए, उदाहरणार्थ, वित्तमंत्रालय सरकार, पंचायती राज सरकार, केंद्रीय कर्मचारी चयन बोर्ड सरकार।

खबर समाचार या मीडिया से संबंधित वेबसाइटों के लिए, उदाहरणार्थ, न्यूज़ खबर, टाइम्स ऑफ इंडिया खबर, आजतक खबर।

संवाद, संवाद या सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के लिए, उदाहरणार्थ, फेसबुक संवाद, ट्विटर संवाद, इंस्टाग्राम संवाद।

स्वास्थ्य, स्वास्थ्य से संबंधित वेबसाइटों के लिए, उदाहरणार्थ, मेडिकल टाइम्स स्वास्थ्य, आरोग्य भारती स्वास्थ्य, दवाईयाँ, स्वास्थ्य।

वनिका वाणिज्यिक वेबसाइटों के लिए, उदाहरणार्थ, अमेजन वनिका, फ्लिपकार्ट वनिका, पेपैल वनिका।

ये केवल कुछ उदाहरण हैं और अन्य हिंदी वेब डोमेन भी मौजूद हो सकते हैं। वेब डोमेन नामों की विस्तारित सूची के लिए, आप भारतीय डोमेन नाम नियामक प्राधिकरण (छत्महपेजतल) की वेबसाइट पर जांच कर सकते हैं।

हिंदी में बनाये गये वेब डोमेन और ईमेल की सूची। यहां कुछ हिंदी भाषा में बनाए गए वेब डोमेन और ईमेल की सूची है : -

वेब डोमेन :

खबर भारत
सरकारी नौकरी भारत
यात्रा भारत
कृषि भारत
रोजगार भारत
बच्चे भारत
शिक्षा विद्या
विश्वविद्यालय का नाम – विद्या
व्यापार का नाम – नेट

ईमेल : –

नाम / खबर.भारत
नाम / सरकारी नौकरी भारत
नाम / विज्ञान भारत
नाम / यात्रा भारत
नाम /कृषि भारत
नाम / रोजगार भारत
नाम / बच्चे भारत
नाम / शिक्षा विद्या
नाम / विश्वविद्यालय का - नाम विद्या
नाम / व्यापार का-नाम नेट

ये सूची कुछ उदाहरण हैं और आप इसका उपयोग करके अन्य हिंदी वेब डोमेन और ईमेल भी बना सकते हैं।

हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की प्रगति में तकनीकी का योगदान

यु ग तकनीक का हैं, जिसे हम "टेक्नोयुग" भी कह सकते हैं, इसलिए आपने देखा होगा कि आजकल हम प्रत्येक काम में टेक्नोलॉजी का भरपूर प्रयोग करते हैं। उदाहरण के तौर पर अब भी पहले जैसा 25 पैसों वाला पोस्ट कार्ड या 75 पैसों वाला अंतर्देशीय पत्र खरीद कर चिठ्ठियां लिखना पसंद नहीं करता हैं। इसकी बजाय हम मोबाइल पर एसएमएस या ई-मेल टाइप कर चुटकियों में अपना काम निपटाने में माहिर हो गए है। बच्चें भी आजकल अपनी पढ़ाई ई-लर्निंग और ई-क्लासेज के माध्यम से पूरी करने लगे हैं। कुल मिला कर देखें तो हम अब टेक्निकली स्मार्ट बन गए हैं या स्मार्ट बनने के लिए कुछ-कुछ इस रास्ते पर चल पड़े हैं। खास बात यह हैं कि इन सब में हमारी नई पीढ़ी हमसे अधिक तेजी से दौड़ रही हैं।

आइए, अब इसी तकनीकी को थोड़ा भाषा के साथ जोड़कर भी देखते हैं। आज कल हम सभी कम्प्यूटर पर आसानी से टाइपिंग कर लेते हैं, जी ई-मेल भेजना, फेसबुक स्टेटस अपडेट करना, चैटिंग करना आदि। मुझे याद है जब सबसे पहले मैंने कंप्यूटर पर अपना नया टाइप करके देखा था तब मैंने अंग्रेजी में ही किया था क्योंकि, हिंदी या मराठी में यह सुविधा उपलब्ध होगी ही नहीं यह मानकर हमने कंप्यूटर और मोबाइल पर अंग्रेजी की-बोर्ड को देख कर अंग्रेजी में ही काम करना शुरू किया था। लेकिन जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए वैसे-वैसे तकनीकी की नई-नई बातें पता चलती गई। वर्ष 2007 में जब मैंने खादी और ग्रामोद्योग के चंडीगढ़ स्थित कार्यालय में कनिष्ठ हिंदी अनुवादक के रूप में काम करना शुरू किया तब सबसे पहले मैंने हिंदी कंप्यूटर पर काम करना आरंभ किया। आगे जब मुंबई कार्यालय में मेरा स्थानांतरण हुआ तब वर्ष 2010 में सबसे पहले पता चला कि हिंदी (देवनागरी) के फॉन्ट दो प्रकार के होते हैं - यूनिकोड फान्ट और नॉन-यूनिकोड फॉन्ट। इसके बाद मुझे "माइक्रोसॉफ्ट

इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल" के बारे में पता चला जो विंडोज एक्सपी और विंडोज-7 पर चलता था। बाद में बैंक में पोस्टिंग मिलने पर कंप्यूटर पर अनिवार्य तौर से यूनिकोड में काम करना शुरू किया। इसके बाद कंप्यूटर पर हिंदी और अन्य भाषीय भाषाओं में काम कैसे करें, इस पर मुझे अधिक जानकारी मिलनी शुरू हुई। इसके बाद कंप्यूटर पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में काम कैसे करें, इस पर मुझे अधिक जानकारी मिलनी शुरू हुई। माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल की सहायता से कोई भी व्यक्ति हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में आसानी से काम कर सकता हैं। यह टूल सभी एप्लिकेशनों पर सफलतापूर्वक कार्य करता हैं, और अंग्रेजी कीबोर्ड ले-आउट होने के कारण प्रयोग करने में भी सरल हैं। इसके बाद गूगल हिंदी इनपुट जो अंग्रेजी कीबोर्ड की सहायता से चलता है, के बारे में पता चला। फिर इनस्क्रिप्ट और वराह आदि की जानकारी से कंप्यूटर पर हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध विविध तकनीकी सुविधाओं के बारे में पता चला।

हिंदी भाषा की विशेषता यह हैं कि एक सर्वसमावेशी भाषा हैं, इसमें संस्कृत से लेकर भारत की प्रांतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी अपने अंदर समाहित करने की क्षमता हैं। तकनीकी के इस युग में हिंदी ने भी अपने परंपरागत स्वरूप को समय के अनुरूप ढाल लिया हैं। कंप्यूटर के साथ हिंदी भाषा ने अब चोली-दामन का साथ बना लिया हैं। आज तकनीक के प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी को अपनाना आसान हो गया है। आवश्यकता केवल हिंदी भाषा के उपयोगकर्ताओं द्वारा इन नवीनतम तकनीकी सुविधाओं को अपनाने भर की हैं। ओसीआर अर्थात् ऑप्टीकल करैक्टर रिकग्नीशन अर्थात् प्रकाश पुंज द्वारा वर्णों की पहचान कर पुराने देवनागरी हिंदी टेक्स्ट को यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित करने की सुविधा से पुरानी किताबों का डिजीटलाइजेशन करने में मदद मिल रही हैं। इससे संस्कृत भाषा में लिखे गए लेख सामग्री को आसानी से हिंदी के यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित किया जा सकता हैं। इस तकनीकी से पुराने शास्त्र ग्रंथों के डिजीटलाइजेशन से ज्ञान के नए डिजिटल स्रोत खुल रहे हैं। प्राचीन ग्रंथों की दुर्लभ प्रतियों का डिजीटलाइजेशन करने में उनमें उपलब्ध ज्ञान का फायदा सभी को होगा।

भारत सरकार ने हिंदी में विज्ञान तथा तकनीकी साहित्य और शब्दावलियों उपलब्ध कराने के उद्देश्य से वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावलियों आयोग (CSTT) की स्थापना की हैं। जिसका प्रमुख कार्य ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीकी के विभिन्न क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के हिंदी पर्याय उपलब्ध कराना और तत्संबंधी शब्दकोशों का

निर्माण करना हैं। यह आयोग हिंदी पर्याय उपलब्ध कराना और तत्संबंधी शब्दकोशों का निर्माण करना हैं। यह आयोग हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के विकास और समन्वय से संबंधित सिद्धांतों के वर्णन और कार्यान्वयन का कार्य भी करता हैं। आयोग द्वारा तैयार की गई शब्दावलियों को आधार मानकर विभिन्न विषयों की मानक पुस्तकों और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दाकोशों का निर्माण करने और उनके प्रकाशन कार्य भी किया जाता हैं। इसके साथ ही उत्कृष्ट गुणवत्ता की पुस्तकों का अनुवाद भी किया जाता हैं।

भारत की राजभाषा हिंदी को डिजिटल दुनिया में समृद्ध करने और बढ़ावा देने में ऑनलाइन हिंदी पुस्तकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका सामने आ रही हैं। गूगल बुक्स और किंडल बुक्स आदि ऑनलाइन सुविधाओं की सहायता से आप अपने कंप्यूटर या मोबाइल फोन पर हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं की हजारों पुस्तकों को मुफ्त में अथवा पैसों का भुगतान करके पढ़ सकते हैं। गूगल बुक्स पर उपलब्ध पुस्तकों को आप कंप्यूटर या अपने लैपटॉप पर गूगल डाउनलोड की सहायता से पीडीएफ फाइल में भी डाउनलोड करके रख सकते हैं। इस सुविधा से हिंदी टाइपिंग के लिए लगने वाले समय में काफी बचत हुई हैं। एंड्रॉइड मोबाइल पर हिंदी की ऑफलाइन शब्दावली सुविधा अंग्रेजी और अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों के हिंदी शब्दार्थ ढूंढने में सहायक हैं। भाषा प्रौद्योगिकी तथा नित नई विकसित होने वाली तकनीकों से हिंदी के विकास को भी और गति मिलेगी।

archive.org नामक वेबसाइट पर भी दुर्लभ और पुराने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ संपदा उपलब्ध हैं, जिसकी सहायता से प्राचीन एवं वैदिक साहित्य को पूर्ण प्राप्त किया जा सकता हैं। जिसमें वेद, उपनिषद, श्रुति-स्मृति, बौद्ध, जैन व छः दर्शन आदि से संबंधित साहित्य को प्राप्त किया हैं। प्राचीन ग्रंथ संपदा के माध्यम से वैदिक विज्ञान जैसे महत्त्वपूर्ण विषय पर अनुसंधान किया जा सकता हैं।

बैंकिंग क्षेत्र के शब्दों की व्युत्पत्ति और प्रयोग

आधुनिक बैंकिंग का क्षेत्र बहुत ही व्यापक और परिवर्तनशील हैं। बैंकिंग में आधुनिक रूप में कई सारे नवीनतम शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जिनका संबंध आधुनिक तकनीकी और तंत्रज्ञान से है। लेकिन बैंकिंग में प्रयोग में लाये जाने शब्दों का इतिहास उतना ही प्राचीन हैं। जैसे अकाउंट, कलदार, रूपया, नोट, कॉईन, दीनार, डॉलर, करेंसी, बैंक, स्टेट, लोन, बजट, रूपे कार्ड आदि शब्दों का प्रयोग धडल्ले से होता है। लेकिन बहुत कम लोग इन शब्दों की व्युत्पत्ति से परिचित होंगे।

प्रथम दृष्टया अंग्रेजी या लैटिन भाषा के प्रतीत होने वाले यह शब्द मूलतः भारतीय भाषाओं से व्युत्पन्न हुए हैं। इनमें स्टेट बैंक में प्रयोग होनेवाला 'स्टेट' शब्द का अर्थ यहां राज्य न होकर 'ईस्टेट' शब्द का परिवर्तित या अपभ्रंश रूप हैं- 'स्टेट' (state) जिसका शुरुआती शब्द 'इ' (स्टेट) जिसमें 'E' विलुप्त हो गया और केवल 'स्टेट' शब्द बच गया, जिसे शब्दकोश में देखने से भी सही पर्याय नहीं मिलता हैं।

Account में Ac+count अर्थात्, "गिनती, विशेष रूप से पुरानी फ्रांसीसी से 'प्राप्त किया और भुगतान, पैसे की धनराशि, बकाया या खर्च या संपत्ति के लिए प्रयोग किया जाता था, जिसका अर्थ बयान की गणना, विस्तृत था। account से 'वित्तीय खाते, गणना, टर्मिनल भुगतान, "एक" से + शेष भाग गिनती, पैसे की गणना, भुगतान करने के लिए किया जाना, पुरानी लैटिन से computers लैटिन से 'एक गणना', computare "गिनती करने के लिए, योग, एक साथ लगता हैं, "से कॉम" 'के साथ, एक साथ' यह अर्थ हैं। Com+putare लगता हैं मूल रूप से ''छंटाई करने के लिए'', होता था. लैटिन मूल धातु *pau- "कट, हड़ताल, टिकट के लिए" यह अर्थ हैं। बहुवचन रूप में पहली बार से; कभी-कभी देर से मध्य

अंग्रेजी में accompt (देखें खाता (वी)। मतलब “कारोबारी लेन-देन के लिए रेकॉर्ड की आवश्यकता हैं" 1640 के दशक से प्रयोग में हैं, इसलिए “किसी व्यवसाय, बैंक आदि में धन रखने की व्यवस्था" (1833), "ग्राहक या ग्राहक का खाता हैं" (1937)। खाते का पैसा (1690), जिसका उपयोग गणना में किया जाता हैं लेकिन सिक्के या कागज के रूप में प्रसारित नहीं होता हैं, शब्द की “गिनती” भावना को बरकरार रखता हैं।

मुंबई में एक प्रसिद्ध रोड हैं, जिसका नाम हैं, ईरला रोड। शब्दकोश में 'ईरला' इस प्रकार का कोई शब्द प्राप्त नहीं होता हैं। क्योंकि इस प्रकार का कोई भी शब्द अस्तित्व में नहीं हैं। मूल शब्द बिरला (Birla) यह था, जिसके प्रारंभ का बी/B शब्द नीचे गिर गया, जिसके कारण irla शब्द अस्तित्व में आया हैं। जैसा आज भी कुछ शब्दों के साथ कुछ वर्ण इधर-उधर होते हुए देखते हैं।

इसी प्रकार 'बैंक' शब्द पूर्णतः अंग्रेजी का प्रतीत होता हैं, जो भारतीय शब्द ‘बनिक' से बिगड़कर Bank (बैंक) शब्द बना हैं। मनुष्य के विकास की शुरुआती अवस्था में मनुष्य अधिकतर प्रकृति पर निर्भर था और वन (बन) और जंगल से प्राप्त होने वाली मूल्यवान वस्तुओं जैसे लकड़ी, पेड़ों की छाल, फल और पुष्प आदि वनों से ही प्राप्त होती थी और आज भी होती हैं। इससे आज वनों की उपयोगिता बनी हुई हैं, यह सिद्ध होता हैं। कहावत हैं कि हर चमकदार चीज सोना नहीं होती इसके बावजूद लोग चमक-दमक के पीछे भागते हैं। चेहरा यानी रूप की चमक लोगों को लुभाती हैं। इस रूप में चांदी की चमक जो छुपी हुई हैं। हिंदी-उर्दू में चेहरा, मुखड़ा, शक्ल के लिए प्रचलित रूप शब्द संस्कृत की ‘रूप’ धातु से आया हैं, जिसका मतलब होता हैं सुंदरता, चमक, कांति आदि। चांदी के लिए रुपं या ‘रौप्य’ शब्द प्रचलित हैं। अति शुद्ध स्वर्ण के लिए कभी 'रूप्य' शब्द प्रचलित हैं। रूप में निहित चमक या कांति का भाव किसी भी दृश्य पदार्थ या वस्तु को रूप बताता हैं। स्थिति या दशा भी रूप हैं और प्रतिबिंब या प्रति छाया भी रूप ही हैं। तुलना के संदर्भ में, रूप में जैसे प्रयोग वाला रूप भी यही हैं। रूप में निहित यमक और चांदी-सोना जैसे अर्थ यही बताते हैं कि रूप का प्रयोग पहले सुंदर के अर्थ में ही सीमित था। बाद में शक्ल और चेहरे के अर्थ में सामान्यतः रूप शब्द प्रचलित हुआ। सौंदर्य के प्रतीक चंद्रमा से ही हमेशा सुंदर रूप की तुलना होती हैं। रूप में 'सु' या 'कु' उपसर्ग जोड़कर कुरूप और सुरूप शब्द बने खूबसूरत मनुष्य के लिए इस शब्द से बने कई नाम हैं जैसे रूपाली जो बना हैं रूपवाली से एक चेहरे में कई चेहरों की चमक! रूपा, रूपिणी, स्वरूप, रूपल,

रूपन, रूपिन, रूपक आदि। स्वांग धेरने वाले कलाकार के बहरूपिया विशेषण में भी यही रूप झांक रहा हैं। गौरतलब हैं कि चांदी नाम के पीछे भी चंद्रमा की चमक ही छुपी हैं। सिनेमा के पर्दे के लिए अंग्रेजी में 'सिल्वर स्क्रीन' शब्द हैं। इसके दो हिंदी अनुवाद खूब चले थे एक या रजत-पट और दूसरा रूपहला-पर्दा हैं। इसके दो हिंदी अनुवाद खूब चले थे एक या रजत-पट और दूसरा रूपहला पर्दा हैं। इनमें दूसरा भी इसी कड़ी का शब्द हैं। संस्कृत धातु 'चंद' से बना हैं चंद्रमा जो निरंतर प्रकाशित रहता हैं। यही चंद्र धातु चांदी के नामकरण की वजह बनी हैं। 'रूपया' शब्द 'रूप' से बना हैं, जिसका अर्थ 'चमक' हैं। मराठी भाषा में प्राकृत से आगत शब्द 'रूप' से संबंधित हैं। शुरुआती दौर में सिक्के शुद्ध चांदी से बनाए जाते थे। कालांतर में सिक्कों में एलॉय अर्थात् मिश्र-धातु से सिक्के बनने लगे, लेकिन उनके नाम वही रहे। इसलिए आज का रूप्या चांदी, पीतल, तांबा आदि धातुओं का मिश्रित रूप हैं। मुद्रा के अर्थ में रुपया शब्द कई एशियाई देशों में प्रचलित हैं। भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव, मलेशिया का इनमें नाम लिया जा सकता हैं। रुपए में भी चांदी की चमक दिखाई दे रही हैं। संस्कृत शब्द रौप्य का अर्थ होता हैं चांदी। प्राचीन काल में चांदी के सिक्के को रौप्यमुद्रा कहा जाता था। रौप्य, रूप्य, रूपकः अथवा रूपकम् भी इसके रूप बनते हैं भारत के पाश्चिमोत्तर सीमा प्रांतों में ईस्वी पूर्व से रौप्य मुद्राएं मिली हैं। गौरतलब हैं कि भारत में मुद्राओं को सिक्के की शक्ल में ढालने की तकनीक यूनानी से लेकर आए थे। पश्चिमोत्तर भारत यूनानियों के द्वारा शासित था जाहिर हैं कि चांदी के सिक्कों के शुरुआती प्रमाण भी वहीं से मिले। यूं देश के हर हिस्से से चांदी के प्राचीन सिक्के मिलते रहे हैं। मौर्य काल से लेकर इस्लामी शासन और फिर अंग्रेजी दौर में भी रूप्या भारत की प्रमुख मुद्रा बना रहा। मुद्रा के बतौर रुपया शब्द शेरशाह सूरी 1540-1615, के वक्त में शुरू होने का हवाला मिलता हैं जिसने इसी नाम से चांदी का सिक्का चलाया था।

अंग्रेजों ने ही इस चांदी की खनखनाहट में कागज का करारापन पैदा किया। सत्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में वारेन हेस्टिंग्स के जमाने में बंगाल के कुछ बैंकों ने कागज के नोट छापने शुरू कर दिए थे। इसके बावजूद चांदी का सिक्का भी अंग्रेज चलाते रहे। जॉर्ज पंचम की तस्वीर वाला चांदी का सिक्का आज भी कई घरों में लक्ष्मीपूजन के दिन बुजुर्गों के बक्से से बाहर आता हैं। चांदी की शक्ल में रुपया 1946 तक बतौर मुद्रा डटा रहा, फिर इसमें चांदी की चमक सिर्फ नाम भर को रह गई और इसके निर्माण में निकेल का प्रयोग होने लगा जो चमक में चांदी से कमतर नहीं हैं। स्वर्णमुद्रा को

पीछे छोड़कर चांदी की मुद्रा यानी रुपया आज दुनिया के कई देशों की प्रमुख मुद्रा के रूप में डटा हुआ हैं। रुपया यानि धन-संपत्ति। दुनिया चांदी यानी रुपए के पीछे ही पागल हैं चाहे उसमें चांदी की चमक और खनक बाकी न रही हों। भारत में एक प्राचीन मुद्रा ढेला और अढेला का भी प्रचलन था, जिसका मूल्य एक पैसे की आधी कीमत वाला सिक्का जितना होता था। मराठी में इसे अदला कहते हैं।

हिंदी में 'बजट' शब्द अंग्रेजी से आया हैं और इसका अर्थ हैं: 'एक निर्धारित अवधि के दौरान होने वाली आय और उसके व्यय की ब्यौरेवार योजना'। इस प्रकार के अनुमान व्यापारिक प्रतिष्ठानों द्वारा अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने और सरकारों द्वारा अपने आय-व्यय को सुचारु रूप से चलाने के लिए तैयार किए जाते हैं। हिंदी में इसके लिए आय-व्यय का शब्द प्रयोग किया जाता हैं। साधारण भाषा में यह अनुमानित आय-व्यय का बोधक हैं।

अंग्रेजी के बजट / budget की कहानी लैटिन भाष के बुल्लग / bulga से शुरू होती हैं, जिसका अर्थ हैं बोरी या थैला। लैटिन का यह बुल्ग यहां से प्राचीन फ्रांसीसी ने ग्रहण कर लिया जहां 'ल' ध्वनि का लोप होने से, यह बॉज/bouge रूप में मिलता हैं जिसका लघुतावाचक रूप बजट/Boutette हैं और अर्थ हैं 'चमड़े का छोटा थैला'। प्राचीन फ्रांसीसी का यह बजट/ bowgette /मध्यकालीन अंग्रेजी में bowgette /बजेट बन गया और अर्थ वही रहा चमड़े की थैली। 18वीं शताब्दी ईस्वी में कभी ब्रिटेन के वित्त मंत्री को आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत करने के लिए कहा गया कि वे अब अपना बजट (अर्थात् थैला) खोलेंगे तो तभी से बजट शब्द में आर्थिक स्थिति से संबंधित अर्थ विकसित होना शुरू हो गया और थैले वाला अर्थ लुप्त हो गया। आजकल इसका प्रयोग, लेख के आरंभ में दिए गए अर्थों में ही होता हैं। यह दूसरी बात हैं कि आज वित्त मंत्री आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत करने के लिए अपने सबसे महत्त्वपूर्ण कागज के थैले से लेकर आते हैं।

कोशकारों का मानना हैं कि अंग्रेजी बजट का पूर्वज, लैटिन का बुलूगे/bulga भी मूलतः लैटिन का न होकर वहां केल्ट परिवार की भाषा गौलिश/gaulish से आया शब्द हैं और इसी परिवार की एक अन्य भाषा मध्यकालीन आइरिश में bolg/ बोल्ग (=थैला) के रूप में मिलता हैं। इस प्रकार, मूलतः यह केल्ट भाषा परिवार का शब्द हैं।

यहां यह जानना होगा कि अंग्रेजी के bag (=थैला, बोरी) baggage

(=सामान, असबाब), bellows (=थैला, धौंकनी), belly (=पेट) तथा अंग्रेजी के साथ-साथ जर्मन और फ्रांसीसी में भी प्रयुक्त bagatelle (=नगण्य या तुच्छ वस्तु) भी बजट के ही सगोत्री शब्द हैं। गोदाम के अर्थ में जिस शब्द का हिंदी में खूब इस्तेमाल होता हैं वह हैं डिपो (depot)। मूलतः यह शब्द अंग्रेजी से आया हैं जिसका मतलब हैं, जहां बहुत-सी वस्तुएं जमा की गई हों या एक साथ रखी गई हों। यह शब्द अंग्रेजी के ही डिपॉजिट (deposit) का संक्षिप्त रूप हैं। डिपॉजिट का अर्थ भी कतार में रखना, नीचे रखना, जमा करना, इकट्ठा करना, भंडार आदि हैं। डिपॉजिट लैटिन भाषा के डिपॉनेयर (deponere) के ही एक रूप डिपॉजिह्ग (depositus) से बना हैं। deponere बना हैं ponere से अर्थात् इसका मतलब होता हैं 'एक के बाद एक रखना' या 'आगे रखना'। जाहिर हैं, यह क्रिया माल के भंडारण के अर्थ में ही आगे चलकर रूढ़ हुईं। इस शब्द-श्रृंखला का रिश्ता अंग्रेजी के पोजीशन शब्द से हैं जिसका अर्थ हैं स्थान, जगह, अवस्था, स्थिति, दर्जा, हालत आदि। यह बना हैं लैटिन के पोज़ीशनेम से जिसमें दृढ़ता स्थिरता, स्थिति का भाव है। प्राचीन भारोपीय शब्द po-s(i) पशीश से बना हैं यह शब्द। इसमें जो सिनेयर हैं, उसकी मूल धातु हैं si अर्थात् सी जिसमें रुकना, अटकाना, ठहरना जैसे भाव हैं। इसका रिश्ता यूरोपीय धातु sed से भी हैं जिसमें अंग्रेजी में seat (कुर्सी), site (स्थल, जगह) जैसे शब्द बने हैं तो संस्कृत में सद जैसा शब्द भी बना हैं जिसका अर्थ हैं विराजना, बैठना। यहां भी पोजीशन या स्थिति का भाव ही हैं। अंग्रेजी के सीट से सद का समानता गौरतलब हैं। यह सद ही सभासद, सदस्य, संसद या सांसद में नजर आता है जिसमें स्थान, बैठक जैसे भाव हैं। साफ हैं कि गोदाम, संसद या डिपो में काफी समानता हैं संसद या लोकतांत्रिक संस्थाओं में सदस्य भी व्यापार-प्रक्रिया का हिस्सा हैं। वे खरीदे-बेचे जाते हैं। उन्हें जिन्सों की तरह इन संस्थाओं में भी भरा जाता हैं। अधिक जगह बनाने के लिए संख्या बढ़ाई जाती हैं। वर्ग विभाजन भी वैसा ही होता हैं, जैसा किसी गोदाम में होता हैं। कौन पहले आया, कितना पुराना, कितनी तादाद, कितना टिकाऊ हैं? वगैरह-वगैरह। जो टिकाऊ है सो टिकता हैं, जो पुराना हैं, सो आउट हो जाता हैं। कलदार शब्द का प्रयोग धड़ल्ले से एक रुपये के सिक्के के लिए प्रयोग होता हैं। कल का रिश्ता गणना करने हिंदी में रूपये के लिए कलदार शब्द प्रचलित हैं।

खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों में यह शब्द से भी हैं और दसका मतलब अंश भी होता हैं। कल में निहित गणना दरअसल युक्ति उस भुजा से हैं जो लीवर होता हैं।

यहां कल शब्द का अर्थ मशीन ही हैं। दरअसल इसी कड़ी का शब्द हैं। पूर्वी भारत में हैंडपंप को चौपाकल कहते हैं। चाँप से यही अभिप्राय हैं। हिंदी में 'कल' से अभिप्राय यंत्र, मशीन अथवा यांत्रिक कौशल से हैं। कल-पुर्जा में मशीन के जरिए सिक्कों का उत्पादन शुरू हुआ। लोगों ने जब सुना कि लॉर्ड कॉर्नवालिस (31 दिसंबर, 1738 - 5 अक्टूबर, 1805) के जमाने में भारत अंग्रेज कल यानि मशीन रुपया बनाते तो उसके लिए कलदार शब्द चल पड़ा। सोचे पंजाबी के गल जिसका मतलब भी कही गई बात तरह कल-कल या कलरव के मूल भी यही कल हैं। साफ हैं संस्कृत का कल और पंजाबी गल एक ही हैं। गौरतलब हैं कि यह कल यानि सुबह का शोर यानि मुर्गे की बांग। कल और गल के आधार पर आइरिश भाषा में बना cailech जिसका मतलब भी मुर्गा या शोर मचाना ही था।

स्लोवानिक और भाषाओं में यह शब्द 'मुर्गा या शोर मचाना' ही था। इस तरह देखें उषःकाल यानि मुर्गे दिन की शुरुआत का, योरप में सुबह के शोर यानि कल से फिर बना महीने का पहला दिन कैलेन्ड्स और फिर इसने 'कैलेंडर' का रूप ले लिया। अब बात कवर की, अंग्रेजी Cover लैटिन के Co+Operire (समान रूप से, भली भांति ढकना, छुपाना) से बना हैं। Operire के मूल में प्राचीन भारोपीय धातु वर् अर्थात् d ewr ही हैं। इस तरह कवर Cover का अर्थ हुआ 'अच्छी तरह से ढका हुआ', छिपाया हुआ- जिसमें सुरक्षा कवच या आवरण का भाव स्पष्ट हैं। हिंदी में कवर शब्द अपने सभी भावों के साथ इस्तेमाल होता हैं। जैसे 'कवर करना' यानि संपूर्णता में समेटना वगैरह-वगैरह। कवर का मतलब आमतौर पर किसी वस्तु के आवरण से ही होता हैं और इस अर्थ में कवर शब्द का इस्तेमाल बहुत आम हैं बुक कवर, सीट कवर, फाइल कवर जैसे शब्द इसे उजागर कर रहे हैं। कवर से कई शब्द बने हैं जिनमें आवृत्ति या लौटने का भाव साफ नजर आता हैं जैसे रिकवर अर्थात् पूर्ववत होना। 'किसी स्थाई परिस्थिति में बदलाव के बाद फिर अपनी पूर्वावस्था में लौटना' रिकवर कहलाता हैं। रिकवरी भी इसी मूल से उपजा शब्द हैं। अर्थ इसका भी वही हैं जो रिकवर का हैं, मगर उधार वसूली जैसे मामलों में इसका इस्तेमाल बड़ा सूझबूझ भरा हैं। उधार की वसूली में ऋणदाता की जेब से कर्जदाता के हाथों से होते हुए मुद्रा फिर ऋणदाता के पास पहुंचती हैं और इसका चक्र पूरा हो जाता हैं। यानि सब कुछ पूर्ववत हो जाता हैं। रि में निहित घूमने लौटने-पलटने की बात यहां साफ हो रही हैं। किसी वस्तु को चारों ओर जब आवरण में लपेटते हैं तब भी उसके दोनों सिरे चक्कर लगाते हुए एक साथ मिल जाते हैं। (क)वर और (आ)वरण

की समानता पर भी गौर करें। अंग्रेजी और हिंदी उपसर्गों के हटने पर जो ध्वनियां बचती हैं, वे स्पष्ट तौर पर एक ही मूल से निकली हुई दिखती हैं। भाषा विज्ञान के नजरिए से calare का जन्म संस्कृत के कल् या इंडो-यूरोपीय मूल के गल यानी gal से माना जाता हैं। इन दोनों ही शब्दों का मतलब होता हैं कहना या और मचाना, जानना-समझना या सोचना-विचारना। गिनना, गणना करना, युक्ति लगाना, संभालना, अंश आदि। कल् धातु की अर्थ वत्ता बहुत व्यापक हैं। नदी-झरने की कलकल और भीड़ के कोलाहल में इसी कल् धातु की ध्वनि सुनाई पड़ रही हैं। पक्षियों की चहचह और कुहुक के लिए प्रचलित कलरव भी इसी कड़ी में आता हैं। यही नहीं, हंस का एक नाम 'कलहंस' भी हैं। रोने-ठुनकने के लिए कल्पना क्रिया भी इसी धातुमूल से निकली हैं। कलू से बनी क्रिया कलन् के साथ जब संस्कृत का सम् उपसर्ग लगता हैं तो बनता हैं संकलन जो समष्टिवाचक शब्द है। वस्तुओं का ढेर, हैं चीजों को इकट्ठा करना, जोड़ना, एकत्रित करने की क्रियाएं ही संकलन में आती हैं। वि उपसर्ग में अलगाव का भाव हैं। कल से वि को युक्त करने से बनता हैं विकल जिसका मतलब हैं व्याकुलता, मन का टूटना आदि। कलनम् का अर्थ होता हैं धब्बा, दाग। इसीलिए बदनामी, अपमान, लांछन आदि के अर्थ में हिंदी का कलंक शब्द इसी कड़ी का हिस्सा हैं, इसलिए आलंकारिक रूप में कहा जाता हैं कि, काजल से काला कलंक होता हैं।

संदर्भ:

1. 'शब्दों का सफर'; अजित वडनेरकर
2. शब्दों का जीवन; डॉ. भोलानाथ तिवारी
3. Online Etymology Dictionary

हिंदी कहानियां सुनें
अपने मोबाइल पर

हम बचपन से कहानियॉ सुनकर बड़े होते हैं। हिंदी कहानियां किसे पसंद नहीं होती हैं? ऐसी कहानियां पढ़ने का मन करता हैं, लेकिन समय ना होने के कारण हम नहीं पढ़ पाते हैं, इसलिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की वेबसाइट https://राजभाषा.सरकार.भारत/कहानियां/प्रश्नोत्तरी

पर 'प्रसिद्ध लघु कहानियां' नाम का एक कॉलम बनाया गया हैं, जिसमें आप मात्र एक क्लिक से ही अपने कंप्यूटर और मोबाइल के माध्यम से हिंदी कहानियों को सुन सकते हैं। जिसमें हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध लेखकों की कहानियां और उपन्यासों को आप आसानी से सुन सकते हैं, जिसमें प्रेमचंद, नागार्जुन, जयशंकर प्रसाद और अन्य लेखक भी शामिल हैं। कृपया इस सुविधा का आनंद लीजिए।

इसमें प्रेमचंद की यही 'मेरा वतन', 'ठाकुर का कुआं', 'बड़े भाई साहब', 'ईदगाह', 'बूढ़ी काकी', 'कुसुम', 'हार की जीत', 'आहुति', 'मंत्र', 'मुक्तिधन', 'पंचपरमेश्वर', 'दो बैलों की कथा', 'पूस की रात', 'गिला', 'माता का हृदय', 'दुनिया का सबसे अनमोल रत्न', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'सुहाग की साड़ी', 'नमक का दरोगा', 'मुफ्त का यश', 'दो भाई', 'नशा', 'परीक्षा', 'विमाता', 'सभ्यता का रहस्य', 'स्त्री का पुरुष'। जयशंकर प्रसाद की 'गुदड़ी में लाल', 'चंद्रा', 'प्रतिध्वनि', 'बनजारा', 'रमला', 'शरणागत', 'हिमालय की पाथिक', 'गूदड़ साई', 'पंचायत', 'प्रलय', 'ममता', 'रुप की छाया', 'स्त्री और पुरुष', 'सिकंदर की शपथ' यशपाल की 'दुख का अधिकार', चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'घंटाघर' और 'पाठशाला', सआदत मंटो की 'टोगा टेक सिंह', फणीश्वरनाथ रेणु की टेक, निर्मल वर्मा की धूप का एक टुकड़ा, नागार्जुन की इनाम, जैनेंद्र कुमार की पत्नी, यशपाल की दुख का अधिकार, भीष्म साहनी की अमृतसर आ गया, चीफ की दावत, झूमर, वाडचू, ओ हरामजादे, चीलें, फैसला, महिप सिंह की पानी और पुल, सुदर्शन की हार की जीत, कृष्णा

सोबती की, सिक्का बदल गया, सुभद्रा कुमारी चौहान की हिंग वाला, पंचतंत्र की प्रसिद्ध कहानियां भी इससे सुन और पढ़ सकते हैं, जैसे रंगा सियार, खरगोश की चतुराई, घंटीधारी ऊंट, झूठी शान, दुश्मन का स्वार्थ, बंदर का कलेजा, बड़े नाम का चमत्कार, मित्र की सलाह, रंग में भंग, सच्चे मित्र, एक और ग्यारह, गजराज व मूषकराज, चापलूस मंडाली, ढोंगी सियार, दुष्ट सर्प, बगुला भगत, बिल्ली का न्याय, मूर्ख बातूनी कछुआ, संगठन की शक्ति, 'स्वजाति प्रेम' आदि। डॉ. दिनेश चमोला की नाग का उपकार, प्रेम का प्रतिदान, चोर की दाढ़ी में तिनका, उपकार का बदला, गोमती का उपकार, करनी का फल, बूढ़ा पीपल और मोहिनी, चूहे जी का चमत्कार, चंपा का राजकुमार, लालची नाई, लोमड़ी की चतुराई, चालाक कौवा, दयालु हंस, सहायक शत्रु, शक्तिशाली मेढ़ा, घमंडी मोर, बुद्धिमान मंत्री इत्यादि प्रसिद्ध कहानियों को शामिल किया गया हैं। जिससे पढ़ने के साथ-साथ सुनने का अनुभव भी किया जा सकता हैं। हिंदी साहित्य के अध्येताओं, वाचकों और शोधकर्ताओं तथा स्पर्धा परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। इन कहानियों को आप अपना कार्य करते हुए इयर फोन को मोबाइल से जोड़कर सुन भी सकते हैं। तकनीकी और साहित्य के समन्वय से आप के प्रयोग को सुनकर बना सकते हैं।

लिंक – https://bit.ly/3cth4u

'मूषक' गया 'कू' आया

ट्विटर इस सोशल मीडिया को सभी जानते हैं। लेकिन भारतीय पटल पर भारतीय विचारधारा और मानसिकता को प्रतिबिंब करने वाला एक सोशल मीडिया ऐप बनाया गया था, जिसका नाम 'मूषक' था। जिसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। आमतौर पर ऐसा ही होता हैं कि सबसे पहला प्रयोग , जब वह अधिक सफल नहीं होता तो लोग उसे भूल जाते हैं। लेकिन उसे हमें याद रखना चाहिए, क्योंकि वही प्रथम प्रयास ही होता है जो दूसरे को जन्म देता हैं और प्रेरणा देता हैं। 'मूषक' सबसे पहला सोशल मीडिया ऐप हैं, जो भारतीय मानसिकता, भारतीय विचारधारा और भारतीय अवधारणाओं को प्रस्तुत करता हैं। इसके बाद बंद होने के बाद 'कू' एप आया, जिसे सर्वोच्च भारतीय लोगों ने स्वीकार कर लिया, जिसे राजभाषा विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट पर भी प्रदर्शित किया जाता हैं, जो पूर्णता भारतीयता को प्रदर्शित करता हैं। यह भारतीय सोशल मीडिया ऐप हैं, जिसे अब सर्व मान्यता मिल रही हैं, लेकिन मूषक का क्या हुआ। मूषक कहां गया या वह मूषक कहीं छुपा हुआ हैं। आज इसकी जगह 'कू' ने ली हैं। को आपकी भी वहीं विशेषताएं हैं जो लगभग मूषक ऐप की थी। इसमें हजारों विषयों पर हिंदी में चर्चा कर सकते हैं। भारत में बना आत्मनिर्भर ऐप भारतीय तकनीकी उड़ान का एक बेहतरीन उदाहरण हैं।

'मूषक' अपनी निजी अपडेट और राय साझा करने के लिए माइक्रो-ब्लॉगिंग मंच था। यहां दिलचस्प विषयों पर चर्चाएं होती हैं जो लोगों को एक घनिष्ठ भारतीय कम्यूनिटी के साथ अपनी विचार साझा करने में सक्षम बनाता था।

'कू' को भारत का आत्मनिर्भर ऐप घोषित किया गया और अगस्त 2020 में आयोजित आत्मनिर्भर ऐप चेलेंज की विजेता भी घोषित किया गया था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी ने खुद 'मन की बात' कार्यक्रम 'कू' के बारे में बताया और लोगों को इसे इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित भी किया हैं।

चैट जीपीटी

चैट जीपीटी ओपन एआई द्वारा विकसित और नवंबर 2022 में शुरू किया गया एक चैटबॉट हैं। चैट जीपीटी का प्रोटोटाइप 30 नवंबर, 2022 को लांच किया गया इसी के साथ इसने ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया। हालांकि यह भी उल्लेखनीय हैं कि इसकी प्रमुख कमी आत्मविश्वास से गलत जानकारी प्रदान करने की प्रवृत्ति रही हैं। चैट जीपीटी की रिलीज के बाद, ओपन एआई का मूल्यांकन 29 बिलियन अमेरिकी डॉलर आंका गया था। चैट जीपीटी की शुरुआत ने इस क्षेत्र में अद्भुत प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया हैं, जिससे गूगल के चैटबॉट के विकास में बहुत तेजी आई। प्रारंभ में चैट जीपीटी 3.5 पर आधारित था। हालांकि, नवीनतम Open Al मॉडल 4 का उपयोग करने वाला एक संस्करण 14 मार्च, 2023 को जारी किया गया था और वर्तमान में सीमित आधार पर गुगल के सशुल्क ग्राहकों के लिए उपलब्ध हैं।

विशेषताएँ

यहां Chat GPT से एक सामान्य ज्ञान का प्रश्न पूछा गया हैं: क्या जिमी वेल्स नियानसेन स्कवायर विरोध प्रश्न में मारा गया था? Chat GPT सही उत्तर नहीं देता हैं, लेकिन गलत तरीके से वेल्स की उम्र को 22 के बजाय 23 बताता हैं।

चैटबॉट का मुख्य कार्य मानवी संवाद की नकल करना हैं, चैट जीपीटी बहुमुखी हैं। यह कंप्यूटर प्रोग्राम लिख और डिबग कर सकता हैं। सेलिब्रिटी सीईओ की कर सकता हैं और व्यावसायिक पिच लिख सकता हैं। गूगल सर्च की तुलना में, Chat GPT हानिकारक और कपटपूर्ण प्रतिक्रियाओं को कम करने का प्रयास करता हैं।

एक उदाहरण में, जबकि इंस्ट्रक्शन जीपीटी ने "क्रिस्टोफर कोलंबस 2015 में अमेरिका में कब आया था, इसके बारे में मुझे बताए" संकेत के आधार पर स्वीकार किया हैं, जबकि चैट जीपीटी प्रश्न की प्रतितथ्यात्मक प्रकृति को स्वीकार करता हैं और इसके उत्तर को एक काल्पनिक विचार के रूप में फ्रेम करता है। क्या हो सकता हैं अगर कोलंबस 2015 में क्रिस्टोफर कोलंबस की यात्राओं के बारे में जानकारी और आधुनिक दुनिया के बारे में तथ्यों का उपयोग करते हुए- कोलंबस के कार्यों की आधुनिक धारणाओं से सहित अमेरिका आए।

मार्च 2023 में, ओपन एआई ने घोषणा की कि चैट जीपीटी के लिए प्लगइन्स के लिए समर्थन जोड़ देगा। व्चमद द्वारा बनाए गए दोनों प्लगइन्स शामिल हैं, जैसे कि वेब ब्राउजिंग और कोड इंटरप्रिटेशन, साथ ही डेवलेपर्स के बाहरी प्लगइन्स जैसे Expedia, open Table, Zaiper, Shopify, clack और wolfram।

चैटबॉट की सीमाएं :

Open Ai स्वीकार करता हैं कि चैट जीटीपी कभी-कभी प्रशंसनीय ध्वनि लेकिन गलत या निरर्थक उत्तर लिखता हैं। यह व्यवहार बड़े भाषा मॉडल के लिए आम हैं और इसे भ्रम कहा जाता हैं। चैटजीपीटी का इनाम मॉडल, जिसे मानव निरीक्षण के आसपास डिजाइन किया गया हैं, को अति-अनिकूलित किया जा सकता हैं और इस प्रकार गुडहार्ट के कानून के रूप में जाने वाले अनुकूलन रोगविज्ञान के उदाहरण में प्रदर्शन में बाधा आती हैं।

मूल सेवा :

Chat GPT को 30 नवंबर, 2022 को सैन फ्रांसिस्को स्थित Open Al द्वारा लांच किया गया था, जो DALL.E2 और व्हिस्पर AI के निर्माता भी हैं। सेवा शुरू में जनता के लिए मुफ्त थी और कंपनी की बाद में सेवा का मुद्रीकरण करने की योजना थी। 4 दिसंबर, 2022 चैटजीपीटी के एक मिलियन से अधिक उपयोगकर्ता थे। जनवरी 2023 में चैट जीपीटी 100 मिलियन से अधिक उपयोगकर्ताओं तक पहुंच गया जिससे यह अब तक का सबसे तेजी से बढ़ता उपभोक्ता एप्लीकेशन बन गया।

सॉफ्टवेयर डेवलेपर समर्थन :

चैट जीपीटी प्रोफेशनल पैकेज के अतिरिक्त, ओपन ए आई ने अपने चैट जीपीटी और व्हिस्पर मॉडल एपी आई को मार्च 2023 से उपलब्ध कराया, जो डेवलपर्स

को सक्षम भाषा और स्पीच टू टेक्स्ट सुविधाओं के लिए एक एप्लिकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस प्रदान करता हैं। चैट जीपीटी एपीआई की कीमत $0.002 प्रति 1000 टोकन, जो इसे जीपीटी-3.5 मॉडल से दस गुना सस्ता बनाता हैं।

सुरक्षा उल्लंघन :

चीन के राज्य द्वारा संचालित मीडिया चाइना डेली ने दाव किया कि चैट जीपीटी "अमेरिकी सरकार को अपने स्वयं के भू-राजनैतिक हितों के लिए गलत सूचना फैलाने और वैश्विक आख्यानों में हेरफेर करने में मदद कर सकता हैं।" चीनी सरकार ने चीनी टेक कंपनियों को निर्देश दिया कि वे अपने प्लेटफॉर्म पर चैट जीपीटी सेवाओं तक पहुंच की पेशकश न करें।

चैट जीपीटी के उपयोग :

साइबर सुरक्षा में:- चेक प्वांइट रिसर्च और अन्य ने नोट किया कि चैट जीपीटी फिशिंग ईमेल और मैलवेयर लिखने में सक्षम था, खासकर जब ओपनएआई कोडेक्स के साथ संयुक्त हो। साइबर आर्क के शोधकर्ताओं ने प्रदर्शित किया कि चैट जीपीटी का उपयोग बहुरूपी मैलवेयर बनाने के लिए किया जा सकता हैं जो हमलावर द्वारा थोड़े प्रयास की आवश्यकता होने पर सुरक्षा उत्पादों से बच सकता हैं।

अकादमिया में :

Chat GPT वैज्ञानिक लेखों के परिचय और सार खंड लिख सकता हैं। कई पेपर पहले ही चैटजीपीटी को लेखक के रूप में सूचीबद्ध कर चुके हैं। वैज्ञानिक पत्रिकाओं की चैट जीपीटी अलग-अलग प्रतिक्रियाएं हैं, कुछ आवश्यक हैं कि लेखक टेक्स्ट-जेनरेटिंग टूल्स के उपयोग का खुलासा करें और एक बड़े भाषा मॉडल जैसे चैट जीपीटी को लेखक के रूप में सूचीबद्ध करने पर प्रतिबंध लगाएं। उदाहरण के लिए नेचर और जामा नेटवर्क। विज्ञान ने अपनी सभी पत्रिकाओं में एल. एल. एम से उत्पन्न पाठ के उपयोग "पूरी तरह से प्रतिबंध" लगा दिया हैं।

दशावतारों की वैज्ञानिकता

> हमारे 18 पुराणों में दशावतारों की कथा आती हैं। लेकिन बहुत सारे लोग इसे काल्पनिक मानते हैं। इसमें उनकी कोई गलती नहीं हैं, क्योंकि जो लोग इन दस अवतारों की महिमा मंडन करते हैं, तब यह नहीं बताते कि यह दस अवतार कब हुए और इसका वैज्ञानिक आधार क्या हैं। आइए, इसे वैज्ञानिक दृष्टि से समझने का प्रयास करते हैं। इसके लिए हमें पुराणों के साथ-साथ आधुनिक जीव-विज्ञान और भूगोल का भी सहारा लेना होगा।

विष्णु पुराण एवं अन्य पुराणों के अनुसार सबसे पहला दस अवतार हैं – मत्स्य अवतार। अब देखते हैं कि आधुनिक जीवविज्ञान और भूगोल का अध्ययन क्या कहता हैं, इसके बारे में। भूगोल/ जीवविज्ञान के अनुसार पृथ्वी सूर्य से आज से 4 अरब वर्षों पहले अलग हुई। प्रारंभ में यह पृथ्वी सूर्य के समान आग का एक गोला ही थी। धीरे-धीरे यह ठंडी होनी शुरू हुई और आज से तकरीबन 2 अरबों वर्षों पहले पृथ्वी पर जल की उत्पत्ति हुई। वैज्ञानिक दृष्टि से आग से ही पानी उत्पन्न होता है। पानी का रासायनिक सूत्र है – H2O अर्थात् पानी का एक अणु और हवा (ऑक्सीजन) के दो अणुओं से पानी तैयार होता हैं। आज भी हम जब पानी को गरम करते हैं तो उसमें से भाप अलग होती हैं और आग अलग होती हैं और वह नष्ट हो जाती है अर्थात् अपना रूप बदल लेता हैं। क्योंकि पृथ्वी पर पानी सबसे पहले बना इसलिए सबसे पहले पानी में जीवन जीने वाले जीव ही उत्पन्न हुए होगे अर्थात् मछली आदि जीव।

सबसे पहला अवतार जो वह हैं – मत्स्य अवतार। अर्थात् सबसे पहले मछली आदि जीवों की उत्पत्ति की बात पूर्णतः वैज्ञानिक धरातल पर सही बैठती हैं अर्थात् इसमें कोई भी अवैज्ञानिकता नहीं हैं।

दूसरा अवतार है – कच्छ अवतार। जैसे-जैसे पृथ्वी पर पानी की मात्रा कम होने लगी और उसमें से जमीन भी अलग होने लगी तो ऐसे जीवों की उत्पत्ति हुई होगी जो जल और जमीन दोनों पर जीवन की क्षमता वाले जीव/प्राणी है जो उभयचर है।

उभयचर अर्थात् वे जीव जो जल और थल दोनों पर जीवन जीने की क्षमता रखते हैं। कछुआ जल और जमीन दोनों पर जीवन पर जीवन जीने में सक्षम हैं। इसलिए दूसरा अवतार कच्छ पूरी तरह वैज्ञानिक धरातल पर सही बैठता हैं।

तीसरा अवतार है – वराह अवतार। जैसे-जैसे पानी और जमीन अलग होने लगे वैसे-वैसे जीवसृष्टि का भी विकास होने लगा और विशेष क्षमता के जीव जो केवल जमीन पर जीवन जी सकते थे, उनकी उत्पत्ति होने लगी। जैसे की वराह अर्थात्- सूअर प्रजाति के प्राणी। सूअर पूर्ण रूप से जमीन पर जीवन व्यतीत कर सकते हैं। इसलिए यह अवतार भी वैज्ञानिक दृष्टि से सही हैं और आगे जीवों के विकास की यात्रा भी जारी रही।

चौथा अवतार है – नृसिंह भगवान का। जो पशु (सिंह) और इंसान का मिश्रण हैं। भूगोल के अनुसार एक समय ऐसा था जब केवल मानव- सदृश प्राणी और प्राणी सदृश मानव हुआ करते थे। नृसिंह भी इसी श्रेणी के अवतार थे जो मानव के विकास यात्रा का महत्त्वपूर्ण पड़ाव थे। जब प्राणियों से मानव की विकास यात्रा का सफर तय कर रहें थे। तो यह अवतार भी बिल्कुल सही है और वैज्ञानिक धरातल पर पूरी तरह से सही बैठता हैं।

पांचवा अवतार है – बटु वामन का। इंसान का जन्म होता है तो वह बच्चा होता हैं बाद में धीरे-धीरे बढ़ते हुए छोटा बालक बनता है। उसका कद छोटा होता है अर्थात् वह बड़ों की तुलना में बटु (छोटा) ही होता हैं। बटु वामन ने दान में बली से सब कुछ दान में ले लिया था ताकि उसका अभिमान नष्ट हो। बाद में उसके विकास की यात्रा भी जारी रही।

छठवां अवतार है – परशुराम का। भारत में एक समय ऐसा था जब सभी लोग आपस में केवल लड़ने-भीड़ने का ही काम करते रहते थे। जैसे कि अन्य पशु। इसलिए परशुराम का स्वभाव भी हथियारों से लैस और आक्रामकता से परिपूर्ण है, जिसने कितनी ही बार पृथ्वी को निःक्षत्रिय किया था। यह आक्रामकता एवं मार-काट मनुष्य जीवन के विकास का अभिन्न अंग रही है। तो यह अवतार भी वैज्ञानिक दृष्टि से बिल्कुल सही लगता हैं। आगे विकास होता गया।

सातवां अवतार हैं – दशरथपुत्र श्रीराम का। राम को मानवीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव माना जाता हैं, क्योंकि राम ने बहुत से नीति मूल्यों की स्थापना में मानवता का अपना योगदान दिया हैं। आज तो रामसेतु और अन्य हजारों प्रमाणों

में यह सिद्ध भी हो रहा हैं कि राम भारत में आज से लगभग 91000 वर्षों पूर्व हो चुके हैं। अर्थात् ईसापूर्व 7100 वर्ष पूर्व। जिसके लाखों प्रमाण भी हैं। राम ने मानव जीवन के विकास के क्रम को और भी गति दी न केवल भौतिकता से ऊपर उठकर जीना सिखाया बल्कि मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हुए मानव के जीवन विकास को गति दी। जो पूर्णतः वैज्ञानिक धरातल पर सत्य प्रतीत हो रहा हैं।

आठवां अवतार हैं – श्रीकृष्ण का। कृष्ण आज से लगभग 5200 वर्षों पूर्व हुआ, जिन्होंने मानवीय मूल्यों की स्थापना के साथ-साथ राजनीतिक दावपेचों और नैतिकता की शिक्षा दी और दोनों की बीच तालमेल बिठाया। जिनकी द्वारका आज भी गुजरात (कच्छ) के पास के समुद्र में हैं। जो मानवीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं, जो विकासवाद की भी पुष्टि करता हैं।

नौवां अवतार हैं – भगवान गौतम बुद्ध। भगवान गौतम बुद्ध ने अहिंसा के माध्यम से संपूर्ण विश्व को शांति का संदेश दिया। विकासवाद में एक और महत्त्वपूर्ण पड़ाव हैं भगवान गौतम बुद्ध। यह वैचारिक विकास केवल भौतिकता के क्षेत्र में नहीं मानवता के इतिहास में भी मायने रखता हैं।

दसवां अवतार है – कल्कि अवतार। यह विकासवाद के अंतिम पड़ाव का अवतार हैं। जो समस्त मानव जीवन को एक साथ लाएगा और संपूर्ण मानव जाति के लिए कार्य करेगा और विकास की यात्रा को पूर्ण विराम लगाएगा। मनुष्य को उनके जीवन का वास्तविक उद्देश्य से परिचय करवाएगा।

डार्विन के विकासवाद को ठीक से पढ़े, तो उसमें बंदरों से मानव के विकास की जो बात कही है वह कुछ हद तक ठीक है क्योंकि बंदर और मनुष्य में काफी साम्यताएं दिखाई देती हैं। यदि हम यह माने कि मनुष्य के जन्म से ठीक पहले का यदि कोई जन्म होगा तो वह बंदर का ही हो सकता हैं। बंदरों की शारीरिक रचना और मनुष्य की शारीरिक रचना का थोड़ा विकास हो तो बंदर के बाद मनुष्य का शरीर उसके लिए उचित लगता हैं। मनुष्य के शरीर की रीढ़ की हड्डी में अभी भी वह निशान मिलता हैं जहां बंदरों को पूंछ होती है। विकास की इस यात्रा में मनुष्य से पूंछ पीछे छुट गई।

पुराणों के अनुसार 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य का जीवन प्राप्त होता हैं, इसको वैज्ञानिक दृष्टि से जांच कर देखें तो इसमें 21 लक्ष जारज, 21 लक्ष अंडज, 21 लक्ष उद्भीज और 21 लक्ष जलज जीव है, जिसे योनियां कहा गया हैं। यदि धरती

पर जीवशास्त्र की दृष्टि से देखें तो पाएंगे कि यह सभी प्रजातियां आज भी उपलब्ध हैं। कुछ की संख्याओं में कमी आयी होगी। लेकिन उनके जीवाश्म अभी भी जल और मिट्टी में मौजूद हैं। मनुष्य प्राणी मां के पेट में जितने दिन रहता हैं, जो उसे यदि सैकड़ों में भी विभाजित किया गया, तो वह लगभग 84,00,000 ही आता हैं। यदि हम यह माने के की प्रकृति हमें सभी फल, फूल और अन्य जीवों की सेवा इसलिए मिल रही हैं, क्योंकि हम भी कभी यह सब कुछ रह चुके हो, तभी तो हमें यह सब कुछ प्रकृति ने देखने का मौका दिया हैं। अपने विचार अवश्य बताए।

84 लाख योनियां या डार्विन का विकासवाद : क्या सही? क्या गलत?

> आज के वैज्ञानिक युग में सभी डार्विन के विकासवाद से परिचित हैं। डार्विन ने अपने विकासवादी विचारधारा से यह सिद्ध करने की कोशिश की हैं कि विकास की बहुत बड़ी यात्रा को तय करके ही आज हम वैज्ञानिक या कंप्यूटर के युग में पहुंचें हैं। विकासवाद के सभी लक्षण आधुनिक मनुष्य में दिखाई देते हैं।

इस अवधारणा के कारण ही सभी मानव अपने पूर्वजों को बंदर मानने के लिए मजबूर हो गए हैं, लेकिन यह सिद्धांत क्या पूरी तरह से सही सिद्ध हो पाया हैं? क्या इसे सभी विचारधाराओं ने स्वीकार किया हैं? खासकर हमारी वैदिक और पौराणिक विचारधारा में। उत्तर हैं - नहीं। खासकर धार्मिक विचारधारा को यह सिद्धांत एक चुनौती देती हैं क्योंकि हमारी भारतीय विचारधारा, जो अपने आप में एक वैज्ञानिक विचारधारा हैं, को यह विकासवाद का सिद्धांत चुनौती देता हैं। विचारों के इस वैषम्य के कारण न तो विकासवाद को पूरी तरह से मान्यता मिली हैं और न ही धार्मिक विश्वास को हम सिद्ध कर पाए हैं। धार्मिक मान्यता पर प्रश्न खड़ा करने के पक्ष में कुछ लोग दिखाई देते हैं। उनमें से कुछ 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य जीवन/जन्म प्राप्ति होने की मान्यता को पूरी तरह से अस्वीकार कर देते हैं। उनसे एक प्रश्न न करना चाहिए कि यह 84 लाख योनिया कौन सी हैं, जरा गिनकर तो बताए। जो लोग यह मानते हैं कि 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य का जन्म होता हैं उन्हें भी इस बात का पता नहीं होता कि 84 लाख योनियों में कौन-सी-कौन-सी योनियों का समावेश हैं। यहां पर जो 'योनियां' शब्द आया हैं, वह पूर्णतः वैज्ञानिक हैं। जैसा कि सभी को पता हैं सभी प्राणियों का जन्म सदा के जिस अंग से होता हैं उसे हम आमतौर पर 'योनि' कहते हैं। इसका मतलब 84 प्रकार की योनियां से हैं और प्रत्येक

जीव/प्राणी की योनि अलग-अलग होती हैं। इसका मतलब यह हैं कि 84 प्रकार के जीव-जंतु-प्राणियों-प्रजातियों में जीवन व्यतीत करने के बाद हमें मनुष्य जीवन प्राप्त हुआ हैं, यह विचार विकासवाद के सिद्धांत को पूर्णतः सिद्ध करता हैं।

84 लाख योनियों के बाद मनुष्य का जन्म हुआ हैं या नहीं या समझने के लिए सबसे पहले हमें यह जानना अथवा यह गिनना आवश्यक हैं कि 84 लाख योनियां आखिर हैं कौन-सी, जिनके बाद मनुष्य योनी प्राप्त होने की बात कही गई हैं। 84 लाख योनियों में 21 लाख योनियों में 21 लाख जारज (जरायुज), 21 लाख अंडज, 21 लाख स्वेदज और 21 लाख उद्धीज योनियां हैं।

जो लोग यह नहीं मानते कि 84 लाख योनियों में उपरोक्त चार प्रकार के जीवों/प्रजातियों का समावेश हैं, वे स्वाभाविक ही इस सिद्धांत का विरोध ही करेंगे लेकिन यदि हम चारों प्रकार की योनियों (प्रजातियों) को एक सूत्र के साथ जोड़ कर देखें तो एक विकासवादी कड़ी बनेगी जो दूसरा- तीसरा कुछ न होकर डार्विन के विकासवाद के सिद्धांत का ही रूप होगा।

दरअसल डार्विन का विकासवाद 84 लाख योनियों के सिद्धांत की ही पुष्टि करता हैं। यदि विकासवादी पूनर्जन्म और पूनर्जन्म के सिद्धांत को मान ले तो उन्हें 84 लाख योनियों के बाद मनुष्य योनि प्राप्त होने की बात अपने आप ही सिद्ध होती हैं।

गर्भविज्ञान के अनुसार गर्भविकास का क्रम देखने से पता चलता हैं कि मनुष्य जीव सबसे पहले एक बिंदुरूप होता हैं, जैसे कि समुद्र के एक कोशीय जीव। वही एक कोशीय जीव बाद में बहुकोशीय जीवों में परिवर्तित होते हैं अर्थात् उनका विकास होता हैं। स्त्री के गर्भावस्था का अध्ययन किया जाए तो जंतुरूप जीव ही स्वेदज, जरायुज, अंडज और उद्धीज जीवों में परिवर्तित होकर मनुष्य शरीर धारण करता हैं। इसमें स्पष्ट रूप से डार्विन का विकासवाद दिखाई देता हैं अर्थात् 84 लाख योनियों के सिद्धांत को स्वयं डार्विन का विकासवाद स्वयं ही सिद्ध कर रहा हैं। सामान्यतः 9 महीने और 9 दिनों के विकास के जन्म प्राप्त करने का बालक उन सभी शरीर के आकारों को ग्रहण करता हैं जो इस सृष्टि में पाए जाते हैं। सातवें माह में तो उसकी छोटी-सी पूंछ भी होती हैं, जो यह सिद्ध करती हैं कि, वह जीव (भ्रूण) कभी न कभी पूंछ रखने वाले बंदरों के जीवों से विकास होकर गुजर रहा हैं।

अब बात करते हैं, जन्म के बाद की अवस्थाओं की जन्म के बाद मानव का

बच्चा किसी पृष्ठवंशीय जीव की तरह अपने पीठ के बल पड़ा रहता हैं, बाद में छाती के बल सोता है, बाद में वह अपनी गर्दन वैसे ही ऊपर उठाने लगता हैं जैसे कि सरीसृप जीव और बाद की अवस्था में वह अपनी छाती के बल पर रेंगना शुरू करता हैं। बाद में वह घुटनों के बल चलता हैं जैसे कि अन्य जीव और बाद में विकास की यात्रा करते हुए उठने की कोशिश करता हैं, गिरता हैं, उठता है, और लड़खडातें हुए चलना शुरू करता हैं जैसे अन्य जीव और धीरे-धीरे कदम बढ़ाता हैं और बाद में दोनों पैरों पर संतुलन बनाते हुए चलना प्रारंभ करता हैं। बाद में तेज दौड़ता हैं और उसके बाद मैराथॉन की दौड़ में शामिल होता हैं। इन सभी क्रियाओं में स्पष्ट रूप से विकासवाद की छाया दिखाई देती हैं। यदि मनुष्य प्राणी का अन्य जीवों की प्रजातियों से संबंध नहीं होता तो वह जन्म से सीधे ही दौड़ना शुरू करता है लेकिन ऐसा नहीं होता सभी क्रियाएं में स्पष्ट रूप से विकासवाद की छाया दिखाई देती हैं। यदि मनुष्य प्राणी का अन्य जीवों की प्रजातियों से संबंध नहीं होता तो वह जन्म से सीधे ही दौड़ना शुरू करता है लेकिन ऐसा नहीं होता सभी क्रियाओं क्रमिक विकास के बाद दिखाई देती हैं। इन सभी क्रियाओं में उसके पूर्वजन्म दिखाई देते हैं। भय, आक्रामकता चिल्लाना, अपने नाखूनों से खरोंचना आदि क्रियाएं जानवरों की हैं, जो वह मनुष्य को जन्म से प्राप्त करता हैं।

समस्या केवल पूर्वजन्मों के संस्कारों को न मानने के कारण आती हैं। यदि विज्ञानवादी इस बात को मान लें और इस बात को सिद्ध कर दिया जाए कि आपको जो जन्म मिला हैं वह केवल आपके पूर्वजन्म के कर्मसंस्कारों और पात्रता मिला हैं तो यह समस्या का समाधान हो सकता हैं। किसी व्यक्ति को पूछा जाए कि उसका जन्म किसी विशेष घर में क्यों हुआ तो उसका कोई उत्तर नहीं दे पाएगा। मगर क्या ऐसा हो सकता हैं कि इतनी बड़ी क्रिया संयोग मात्र से हुई हैं। जी नहीं!

विज्ञान यह कहता है कि प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रया होती हैं और कारण भी। यदि हम दर्शनशास्त्र को आधार माने तो हमारे पूर्वजन्मों के संस्कार ही कैरी-फॉरवर्ड होते हैं। विज्ञानवादी यदि पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के सिद्धांत को मान ले तो यह प्रश्न मिट जाता हैं।

इसमें यह तर्क दिया जाता हैं कि यदि हमारा पूर्वजन्म रहा भी होगा तो वह हमें यह याद क्यों नहीं रहता हैं। इसके लिए हमें स्मरण मात्र को समझना होगा। हमारे दिमाग में स्मरण की कई सारी फाइल एकत्रित होती रहती है, जो आवश्यक

नहीं हैं वह फाइलें अपने आप ही मिटती चली जाती हैं। यदि आपको यह पूछा जाए कि पिछले सप्ताह के सोमवार को सुबह 11 बजे आपने कौन से रंग के कपड़े पहने थे, तो आप आसानी से नहीं बता पाएंगे। आपको उसे याद करने के लिए आपकी स्मरणशक्ति पर जोर देना पड़ेगा आपको यदि रचनाबद्ध तरीके से यह बताया गया कि आप कल कहां थे? परसों क्या पहना था? तो हो सकता है कि किसी विशेष क्रिया के द्वारा आप अपने पूर्वजन्म को भी याद कर ले और आपको अपने पूर्वजन्म की भी सभी बातें याद आ जाएं।

हमने यदि डार्विन के विकासवाद को भारतीय दर्शनशास्त्र की विचारधारा के साथ जोड़कर देखें ता हम पाएंगे कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं लेकिन विज्ञानवादी आध्यात्मवाद को नहीं मानते और अध्यात्मवादी विज्ञानवादियों को मूर्ख समझते हैं, इसलिए यह एक यक्ष प्रश्न बना हुआ हैं। इसका एक ही उपाय हैं, विज्ञानवादी अध्यात्मवादी सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं को एक साथ समझने की कोशिश करता हैं। दुनिया को केवल भौतिक शास्त्र के नजरिए से देखने से प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल पाएंगे। भारतीय दर्शन शास्त्र में भौतिक शास्त्र, रासायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, कृषि शास्त्र, पर्यावरण विज्ञान, जीव शास्त्र, भूगोल, इतिहास और अन्य विषयों को एक साथ पढ़ने की कोशिश की गई हैं, इसलिए वह परिपूर्ण शास्त्र हैं, एकांकी नहीं हैं।

यदि एक अंधेरे कमरे में एक हाथी को बांध कर रख दिया और उसमें ऐसे पांच लोगों को भेजा जिन्होंने अपने जीवन में कभी हाथी को देखा ही नहीं था। तो जिस व्यक्ति के हाथ में हाथी की पूंछ आ गई वह कहेगा कि हाथी तो रस्सी की तरह होता हैं, दूसरा व्यक्ति जिसके हाथ हाथी के पेट को लगा तो वह कहेगा हाथी तो किसी बड़े ढोल की तरह होता हैं, जिस व्यक्ति ने हाथी के पैरों को स्पर्श किया वह कहेगा कि हाथी तो किसी पेड़ के तने के जैसा होता हैं औश्र जिसने हाथी की सूंड को स्पर्श किया तो वह करेगा कि हाथी तो किसी पाईप की तरह होता हैं। इस प्रकार भिन्न-भिन्न विचार बनेंगे और वह आपकी बात तब तक नहीं मानेंगे जब तक आप उसे हाथी को उजाले में लाकर नहीं दिखाते हैं। पूरा हाथी अपनी आंखों से देखने के बाद ही उन्हें विश्वास होगा कि हाथी कितना बड़ा और विशाल होता है। ऐसी ही स्थिति हमारे ज्ञान-विज्ञान की शाखाओं की हो गई हैं। जो व्यक्ति केवल भौतिक शास्त्र में बी.एस. सी करता हैं, उसे पर्यावरण विज्ञान की जानकारी नहीं होती हैं। जो केवल गणित को

पढ़ता हैं वह जीव शास्त्र के सिद्धांत को भूल जाता हैं और जो केवल जीव शास्त्र में शोध करता हैं, अपने भूगोल से अनभिज्ञ रह जाता हैं।

प्राचीन अध्ययन पद्धति में यह सभी विषय एक साथ पढ़ाए जाते थे इसलिए वैदिक विचारधारा में पर्यावरण अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जाता था। जिससे ज्ञान महाविद्यालयीन और विश्वविद्यालयीन पढ़ाई की ओर बढ़ते हैं, हम इन सभी विषयों के तुलनात्मक और समग्र अध्ययन पर ध्यान नहीं देते हैं। इसलिए हमारी मान्यताएं अधूरी रह जाती हैं।

खैर, हमारी मूल बात पर आते हैं जिसमें हमने यह माना था, कि मनुष्य का जन्म 84 लाख योनियों के बाद होता हैं, जो पूर्णतः वैज्ञानिकता धारणा हैं। मेरे विचार से मनुष्य भी सभी जीव-जंतुओं, प्राणी-प्रजातियों के जीवन का सफर तय करने के बाद मनुष्य बना हैं यही विचार सर्वथा विज्ञानसम्मत हैं।

क्या हम अपने आप को सर्वश्रेष्ठ भारतीय समझते हैं?

– 'मस्तिष्क मंथन'

जब कभी हमें यह प्रश्न पूछा जाता हैं, क्या हम अपने आप को सर्वश्रेष्ठ भारतीय समझते हैं? या विदेशी चश्मे से जो दिखाई देता है, वही सर्वश्रेष्ठ समझते हैं! तब उसका उत्तर होता हैं – हां, क्योंकि हमें लॉर्ड मेकाले ने जो शिक्षा पद्धति दी हैं, वह हमें विदेशी चश्में से सोचना सिखाती हैं आज से ठीक 139 वर्ष और 5 माह पूर्व दिनांक 2 फरवरी, 1835 को ब्रिटिश संसद में ब्रिटेन के जुझारू, संघर्षशील, देश प्रेमी तथा ब्रिटेन को "सर्वोत्कृष्ट" मानने वाले एक इंसान लॉर्ड मेकाले ने निम्न वक्तव्य दिया था जो आपके समक्ष प्रस्तुत हैं।

"मैंने भारत की ओर-छोर का भ्रमण किया हैं और मुझे एक भी आदमी ऐसा नहीं मिला जो चोर हो। इस देश में मैंने ऐसी समृद्धि, ऐसे सक्षम व्यक्ति तथा ऐसी प्रतिभा देखी हैं कि मैं नहीं समझता कि इस देश को विजित कर लेंगे, जब तक कि हम इसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मेरुदंड को तोड़ न दें। इसीलिए मैं यह प्रस्तावित करता हूँ कि हम भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को बदल दें क्योंकि यदि भारतवासी यह सोचने लगे कि जो विदेशी एवं अंग्रेजी हैं, वह उनके आचार-विचार से अच्छा एवं बेहतर हैं, तो वे अपना आत्म–सम्मान एवं संस्कृति खो देंगे तथा वे एक पराधीन कौम बन जाएंगे, जो हमारी चाहत हैं।"

भारत पर विदेशी आक्रमण तो पहले भी होते रहे हैं, परंतु उनका प्रभाव इतना नहीं पड़ा क्योंकि तब भारतीयों ने अपनी भाषा, सभ्यता और संस्कृति को नहीं छोड़ा था। इसलिए लॉर्ड मैकाले इसकी जड़ तक गया कि पूर्ण रूप से भारतीयों पर कैसे शासन किया जा सकता हैं। वह भारतीयों को मानसिक रूप से भी गुलाम बनाना चाहता था। इसलिए उसने भारतीय संस्कृति और भाषाओं पर प्रहार किया। काफी हद तक सफल भी हुआ क्योंकि आज भले ही भारत गुलामी से आजाद हो गया

हैं, परंतु आज भी वह विदेशी भाषा का गुलाम बना हुआ हैं। आखिर हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान कहां चला गया हैं?

किसी भी देश के निवासी को उसकी भाषा, संस्कृति, शिक्षा, संस्कार, नैतिकता पर स्वाभिमान एवं सात्विक गर्व होना ही चाहिए। 139 वर्ष पूर्व भारत का प्रत्येक भारतीय ऐसे राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय गर्व से ओतप्रोत था। जिसकी पुष्टि स्वयं उपर्युक्त वक्तव्य के एक-एक शब्द में गूंज रही हैं। आज प्रश्न हैं कि जो प्रतिबद्धता, चाहत संघर्ष क्षमता ब्रिटिश कौम में थी क्या आज वो 125 करोड़ भारतीयों में हैं। कुछेक कह सकते हैं, परंतु कुछेक के पास इन प्रश्नों का उत्तर हैं या नहीं, यह वही जानते हैं। आखिर लॉर्ड मैकाले में ऐसा क्या था जो हम भारतीयों में नहीं हैं हमारे पास सब कुछ "सर्वोत्कृष्ट" हैं पर हम स्वयं से जान बूझकर अंजान बने हुए हैं।

आज के समय की आवश्यकता हैं कि हम सब लॉर्ड मैकाले द्वारा रोपित मानसिकता को जड़ो से उखाड़ फेंके और भारतीयता के महान आदर्शों को आत्मसात करते हुए स्वयं को विदेशी तत्वों के समक्ष दीन-हीन व्यक्ति न समझें और कहें कि "भारत वास्तव में विश्व में महानतम हैं।" यह कार्य तभी संभव हो पाएगा जब संपूर्ण राष्ट्र भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुरूप हिंदी व समस्त भारतीय भाषाओं में अपना दैनिक काम-काज, चिंतन, आपसी संवाद करेगा तथा उसे अपने कार्य व्यवहार में अपनाऐगा तभी हरेक भारतीय हीन भावना के दायरे से मुक्त हो पाएगा।

भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं। कई भारतीयों को केवल हिंदी या अंग्रेजी ही नहीं बल्कि कई भाषाएं आती हैं। विदेशी भाषा अर्थात् अंग्रेजी भाषा सीखना हमारी विलक्षण बौद्धिक क्षमता और विद्वत्ता का प्रतीक हैं। विदेशी भाषा सीखना अथवा उसका ज्ञान होना तो बहुत अच्छी बात हैं परंतु उसे अपने दैनिक कार्य व्यवहार में लाकर उसके अधीन हो जाना और अपनी मातृभाषा की उपेक्षा करना सर्वथा अनुचित हैं। मात्र 4 प्रतिशत भारतीय ही अंग्रेजी पढ़ सकते हैं, बोल सकते हैं, लिख सकते हैं। मात्र 2 प्रतिशत सरकारी कार्यालयों/उपक्रमों/ बैंक/ बीमा कंपनियों आदि में कार्यरत हैं। शेष 96 प्रतिशत भारत कश्मीर से कन्याकुमारी व द्वारका से ब्रह्मपुत्र तक हिंदी व भारतीय भाषाओं में ही संवाद करता हैं व अपने दैनंदिन कार्यकलापों को पूरा करता हैं। जब सरकारी क्षेत्र इस 96 प्रतिशत भारत से सीधे जुड़कर राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं को पूरा करेगा, तभी देश सही दिशा में अग्रसर होगा तभी सर्वांगीण

विकास संभव हो पाएगा, वरना संवाद हीनता की एक गहरी खाई प्रशासन व जनता के मध्य स्थापित रहेगी, दूरियां बढ़ती ही रहेगी।

उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर यदि आपके पास हैं और आप स्वयं को आज और अभी से "सर्वोत्कृष्ट" भारतीय मानते हैं, साथ ही भारत की प्रत्येक भाषा, वस्तु, कार्यप्रणाली को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं तो आज से ही संकल्प करें कि हमारे भीतर से लॉर्ड मैकाले और ब्रिटिश कौम की चाहत जड़ो से उखाड़ दी गई हैं और वह तार-तार होकर सुदूर विदेश चली गई हैं, अभी स्थिति इतनी जटिल नहीं हुई हैं कि इसको सुधारा न जा सके। बस आवश्यकता हैं, एक पहल की। अपनी मानसिक सोच को बदलने की। अब निर्णय आपको करना हैं कि विदेशी भाषा सर्वश्रेष्ठ हैं कि हिंदी व भारतीय भाषाएं सर्वश्रेष्ठ हैं या लॉर्ड मैकाले आज भी हमारी सोच में, भाषा में, अस्मिता में यह तथ्य मानने को विवश कर रहा हैं कि जो भी विदेशी है वही सर्वश्रेष्ठ हैं।

हमारे वेदों में ज्ञान-विज्ञान के सभी सूत्र मौजूद हैं लेकिन वे सभी सूत्र संस्कृत भाषा में होने के कारण हमें उसका ज्ञान नहीं हो पाता। विदेशी अनुसंधानकर्ता जो हमारे देश की संस्कृति व ज्ञान एवं विज्ञान का अध्ययन करने आए उन्होंने हमारे संस्कृत के सूत्रों का अपनी (अंग्रेजी) भाषा में अनुवाद किया और वही सूत्र हमें उनकी भाषा में बताएं। इससे हमें लगता हैं कि यह उन्होंने ढूंढे हैं, और हमें उन्हें विद्वान मानते हैं। जबकि हमारे भारत में आर्यभट्ट से लेकर भास्कराचार्य ऐसे कितने की संशोधन करने वाले वैज्ञानिक हो चुके हैं, जो यह आविष्कार पहले ही कर चुके हैं। लेकिन हमें यह सब पता नहीं होने के कारण हम विदेशी संशोधकों को मानते एवं जानते हैं।

गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सिद्धांत हमारे ऋग्वेद से पहले से संस्कृत सूत्रों के रूप में मौजूद हैं। ऐसे कई सारे उदाहरण हम बता सकते हैं। जिसकी खोज करने वाले सबसे पहले भारतीय ही थे। महर्षि कणाद ने सबसे पहले अणु की खोज की थी। अन्न के कणों को एकत्र करते हुए उन्हें पदार्थ सूक्ष्मतम इकाई अणु का विचार आया था। ग्रहों की संख्या एंव उनके गुण - विशेषताओं के बारे में ज्योतिष में पहले से ही वर्णन मिलता हैं। गणितीय सिद्धांतों में भी भारत अग्रगण्य हैं। 4 वेद और 6 शास्त्रों को रचने वाले महर्षि व्यास हमारे भारत में ही हुए हैं, जो कि संपूर्ण विश्व को देन हैं।

सुपर कंप्यूटर बनाने वाला हमारा भारत देश हैं। विदेशों के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वालो में भारतीयों की संख्या 35 से 40 प्रतिशत हैं। वैद्यकिय क्षेत्रों में

भी भारतीय आगे हैं। परमाणु एवं आण्विकी के क्षेत्र में भी भारतीय आगे हैं। कृषि की पैदावार में हमारे भारत की कोई तुलना नहीं हैं। विभिन्नता में एकता को पिरोने वाला भारत देश हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में साधना करने वाले कई भारतीयों के नाम गिनाए जा सकते हैं। जिसमें स्वामी विवेकानंद सर्वश्रेष्ठ हैं जिनके आध्यात्मिक ज्ञान का लोहा पूरा विश्व मानता हैं उन्हें नमन किया जाता हैं।

लेकिन 150 वर्षों की गुलामी के कारण हमारी शक्तिस्थानों को हमारे भारत देश के कुछ लोग भूल चुके हैं, इसलिए विदेश में बनने वाली वस्तुओं एवं अन्य को हम सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। लॉर्ड मैकाले की 'पेट भरन शिक्षा पद्धति' के कारण हमारे विद्या का हमें विस्मरण हो चुका हैं।

आज भी जब कभी कुछ नया स्वीकार करने की बारी आती हैं तो जब तक पश्चिम से उसका स्वीकार नहीं किया जाता तब तक हम उसे नहीं अपनाते हैं। परिवर्तन की धारा पश्चिम से पूरब की तरफ बहती हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सूर्य का अस्त भी पश्चिम में ही होता हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लिखे गए सूत्रों का ही प्रात्याक्षिक आज के आधुनिक विज्ञान में देखने को मिलते हैं। गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सिद्धांत हमारे ऋग्वेद में पहले से लिखा हुआ हैं। पायथागोरस के शोध के सिद्धांत भी वेदों में मौजूद हैं। आज भी कंप्यूटर के लिए यदि कोई भाषा सर्वश्रेष्ठ हैं तो वह संस्कृत ही हैं।

विदेशी चश्मे से क्या दिखाया गया हैं और क्या हैं यह सब हम देखेंगे।

हमारे सर्वश्रेष्ठ भारतीय होने का प्रमाण मनुष्य की उत्पत्तिः प्रायः विज्ञान की सभी शाखाओं में यह पढ़ाया जाता हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति अफ्रीका खंड में हुई।

वास्तविकता यह हैं कि पृथ्वी पर सबसे पहले मनुष्य की उत्पत्ति मानसरोवर क्षेत्र, अर्थात् हिमालयी क्षेत्र में सबसे पहले हुई हैं, और वही से वह पूरे विश्व में फैला हैं। इसका मतलब हैं कि पूरे विश्व के लोगों के आदि माता-पिता हमारे भारत के ही रहने वाले थे, जो प्राचीन काल में हिमालयी क्षेत्र में रहते थे। इस दृष्टि से देखें तो शिव और पार्वती ही आदिम मनुष्य हैं। मनुष्य शब्द से स्पष्ट होता हैं कि सभी मनुष्य मनु की संतान हैं, अर्थात् उन्हीं से उत्पन्न हुए हैं। संदर्भः सत्यार्थ प्रकाश, दयानंद सरस्वती, वैदिक विनय, आर्य समाज प्रकाशन देखें।

किसी भी विज्ञान की शाखा के व्यक्ति से आप जानने की कोशिश करें कि पृथ्वी की उत्पत्ति कैसे हुई। इसके लिए वह आपको तीन सिद्धांत बताएगा, जो केवल अनुमान मात्र हैं।

भारतीय वैदिक साहित्य में सूर्य, पृथ्वी, चंद्र, एवं अन्य ग्रहों की सटीक और स्पष्ट जानकारी मिलती हैं। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में मिलती हैं। आर्यभट्ट, वराहमिहीर ने अपने सूर्य सिद्धांत में स्पष्ट रूप से विश्व उत्पत्ति की वैज्ञानिक परिभाषा को स्पष्ट किया हैं।

पाश्चात्य देशों में पिछले तीन चार दशकों में वैज्ञानिकता जागरूकता के नाम पर नए-नए सिद्धांतों की रचना की गई। औद्योगिक क्रांति ने यंत्रो के निर्माण और स्पर्धा को जन्म दिया। भारत पहले से ही वैज्ञानिक सिद्धांतों के विद्वानों की भूमि कही जाती रही हैं, जिसमें भौतिकवाद के स्थान पर दार्शनिकता को प्रश्रय मिला और "जियो और जीने दो" के सिद्धांत का आदर्श माना गया।

प्रकृति का दोहन करने का संदेश पाश्चात्य दर्शन सिखाता हैं और प्रकृति को अपना गुलाम बनाने के सपने देखना ही विदेशी विचारधारा का मूल हैं।

भारतीय दर्शनशास्त्र कभी भी प्रकृति को अपना गुलाम नहीं बनाना चाहती, बल्कि प्रकृति की शक्ति को स्वीकार कर उसका संरक्षण करने की पहल ऋषि-मुनियों द्वारा की जाती हैं। भारत के सभी उत्सव और त्यौहार प्रकृति की पूजा के साथ-साथ विवेकपूर्ण उपयोग सिखाते हैं। प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप ही सभी त्यौहारों का क्रम दिखाई देता हैं।

विदेशी चश्मे से हमें बताया गया कि भारत अंग्रेज आने के पहले भारत में किसी भी प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था और राजकीय व्यवस्था और राजकीय व्यवस्था नहीं थी। अंग्रेजों ने हमें वैज्ञानिकता के साथ जीना सिखाया इत्यादि। अंग्रेज न आते तो भारत में न ही रेल आती और न ही हम विकास करते ऐसे विचार को पालने वाले लोग आपको मिलेंगे।

भारत में अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भी भारत में समृद्ध शैक्षिक व्यवस्था के प्रमाण मिलते हैं। राजकीय व्यवस्था के भी प्रमाण मिलते हैं। भारत के पृथ्वीराज चौहान और शिवाजी राजा जैसे शूरवीर राजाओं के शासन के किस्से सभी को पता हैं।

भारत में विज्ञान और तकनीकी का ज्ञान नहीं था ऐसा दुष्प्रचार बाकायदा शिक्षा संस्थानों के माध्यम से किया गया। जिसके कारण नई पीढ़ी के लोग आज भी अपने आप को असहाय मानते हैं और पाश्चात्य देशों में जाने के लिए मजबूर कर दिए जाते है। जिसके कारण भारत का प्रतिभा पलायन हो रहा हैं।

वास्तविकता यह हैं, कि हमारे देश में ज्ञान, विज्ञान और तकनीक और प्रौद्योगिकी के बहुतायत उदाहरण दिखाई देते हैं। यदि हमारे भारत में कुछ था ही नहीं तो बार-बार विदेशी आक्रमणकारियों ने हमारे देश पर आक्रमण क्यों किए। ऐसी कौन सी बात थी जो उन्हें आकर्षित करती थी।

आज भी विदेशों में हमारे देश के 35-40 प्रतिशत वैज्ञानिक, डॉक्टर, संशोधक और विद्वान मौजूद हैं। भारत में अंग्रेजों द्वारा आर्य और द्रविडों का भेद बनाया गया और बार-बार यह सिद्ध करने की कोशिश की गई कि, आर्य इस देश के मूल निवासी नहीं हैं।

जबकि अब यह सिद्ध होने लगा हैं कि, भारत में आर्य कहीं बाहर से नहीं आए, बल्कि आर्य लोग भारत से पूरे विश्व में फैले हैं। भाषा विज्ञान के माध्यम से इसे समझा जा सकता हैं। प्राचीन काल की संस्कृत भाषा के शब्द ही विदेशी, लैटिन, फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी भाषाओं में पाए जाते हैं। विश्व की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत ही हैं। आर्य कोई जाति वाचक शब्द न होकर, वह गुणवाचक हैं, जो श्रेष्ठ हैं, वहीं आर्य हैं।

इसके जैसे कई उदाहरण हैं, जिन्हें बताया जा सकता हैं। आप भी इस विषय पर 'मस्तिष्क-मंथन' करें।

भारतीय विज्ञान की परंपरा : राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के परिप्रेक्ष्य में

राष्ट्रवादी लेखक संघ के तत्वाधान में 'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' के शुभ अवसर पर एक ई - विमर्श में विशिष्ट वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए वैदिक शिल्प संशोधन मंडल नागपुर से जुड़े अभियंता विजय प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि भारत में जीवनचर्या का मूल आधार ही विज्ञान रहा हैं और यह विज्ञान शब्द वैदिक काल से निरंतर प्रचलन में हैं। अभियांत्रिकी महाविद्यालय पुणे में प्राध्यापक शांतनु कोकाटे ने अपने वक्तव्य में बताया इस संस्कृत के ग्रंथों में अद्भुत विज्ञान का भंडार भरा हैं, दुर्भाग्य से हम संस्कृत भाषा का संबंध केवल धर्म एवं अध्यात्म से जोड़ते हैं जबकि वास्तविकता ठीक इसके विपरीत हैं। कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन करते हुए राजा बलवंत सिंह अभियांत्रिकी महाविद्यालय, आगरा के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. धर्मेंद्र सिंह तोमर ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के परिप्रेक्ष्य में इस दिन का नोबेल पुरस्कार विजेता प्रथम वैज्ञानिक डॉ. चंद्रशेखर वेंकट रमण के तत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि प्राचीन काल से ही भारत के आर्यभट्ट, बौधायन आदि जैसे विज्ञानविदों ने विज्ञान के क्षेत्र में मील के पत्थर स्थापित किए हैं।

राष्ट्रीयवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय संयोजक यशभान सिंह तोमर ने कहा यह बड़ा भ्रम हैं, जो भारतीय सोचते हैं कि विज्ञान के लिए अंग्रेजी माध्यम अनिवार्य हैं। ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका, न्यूजीलैंड व आस्ट्रेलिया इन पांच देशों को छोड़कर सारे विकसित देश अपनी मातृ भाषा के आधार पर विज्ञान का अध्ययन अध्यापन करते हैं और विकसित हुए हैं। मद्रास संस्कृत कॉलेज में संस्कृत के आचार्य डॉ. अखलेश्वर मिश्र ने कहा कि भारत का खगोलीय विज्ञान व ज्योतिष का ज्ञान दुनिया का सर्वश्रेष्ठ

विज्ञान हैं। विमर्श की अध्यक्षता कर रहे नासिक से जुड़े सुविख्यात प्राच्य विद्याविद राहुल खटे ने बताया कि यदि पश्चिम की वैज्ञानिक शब्दावली का भाषा विज्ञान के आधार पर अध्ययन करें तो पाएंगे कि अनेक शब्दों की व्युत्पत्ति संस्कृत के मूल शब्दों से हुई हैं। उन्होंने भारतीय भाषाओं में उपलब्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के परिचय के साथ ही अंग्रेजी भाषा में प्रचलित शब्द किस प्रकार से संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं से व्युत्पन्न हुए हैं। इसका प्रस्तुतिकरण किया और आज के वैज्ञानिक युग हमारी भारतीय भाषाएं किस प्रकार अपनी वैज्ञानिक्ता को लेकर चलती हैं, इसे भाषा विज्ञान के सिद्धांतों का आधार देकर सिद्ध किया। सन 1298 से पूर्व यूरोप में विज्ञान जैसी अवधारणा का सर्वथा अभाव था। विमर्श का संचालन कर रही नैनीताल से जुड़ी राष्ट्रवादी लेखक संघ प्रकाशन प्रमुख हेमा जोशी ने कहा कि यूरोप में तो अंको तक में शून्य तथा दशमलव का सर्वथा अभाव रहा हैं। इस दृष्टि से भरत का वैज्ञानिक ज्ञान अप्रतिम हैं।

भारतीय भाषा में विज्ञान लेखन वेबिनार के समाचार को दी सभी राष्ट्रीय पत्रिकाओं ने स्थान भारत में इंजीनियरिंग में भाषाई परिवर्तन विषय पर – ई-विमर्श

27 जून रविवार को राष्ट्रवादी लेखक संघ के इक्यावनवें ऑनलाइन साप्ताहिक विमर्श भारत में अभियंत्रण शिक्षा में भाषाई परिवर्तन विषय पर मुख्य वक्ता के पद से बोलते हुए गोवा की विज्ञान लेखिका डॉ. शुभ्रता मिश्रा ने कहा कि अभियांत्रिकी का जन्म मूल रूप से भारत में ही हुआ था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ों की सभ्यता के दौरान बड़े ही व्यवस्थित लेआउट में नगर की बसावट और स्नानागार आदि का निर्माण हुआ था। तब दुनिया में कही भी इस तरह की अभियांत्रिकी का कोई नामोनिशान नहीं था। भारत में अभियांत्रिकी के जनक विश्वेश्वरैया ने अभियांत्रिकी शिक्षा में भारतीय तकनीक का समावेश करते हुए उसका इस्तेमाल किया। आज के दौर में भारतीय युवाओं के लिए अभियांत्रिकी क्षेत्र सफलता के झंडे गाड़ने में अंग्रेजी भाषा बाधक बनी हुई हैं। यही कारण हैं कि 4000 इंजीनियरिंग कॉलेजों में से निकलने वाले योग्य इंजीनियर ज्यादातर विदेश पलायन कर जाते हैं। शेष जो बचे, उनमें से 60 प्रतिशत को कोडिंग नहीं आती। 31 राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने को मजबूर हैं, इस नाते वे अपनी मौलिक प्रतिभा का सहज विकास नहीं कर पाते। इसलिए जरूरी हैं कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई बच्चों की मातृ भाषा में कराई जाए, ताकि देश में अभियांत्रिकी कौशलों का विकास किया

जा सके। एआई के सर्वेक्षण में 44 प्रतिशत छात्रों ने मातृ भाषा में इंजीनियरिंग की शिक्षा दी जाने की वकालत की। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत प्रो अनिल सहस्रबुद्धे के नेतृत्व में मातृ भाषा में अभियांत्रिकी की शिक्षा दिए जाने की व्यवस्था की जा रही हैं। 2021-22 में अंग्रेजी के अलावा हिंदी और अन्य 8 भारतीय भाषाओं में 7 आई आई टी और 50 प्रतिशत एन आई टी में मातृ भाषा में शिक्षा दिए जाने की शुरुआत हो रही हैं। 3 चरणों में 100 प्रतिशत एनआईटी में लगभग सभी प्रमुख विषयों में अभियांत्रिकी की शिक्षा शुरू की जानी हैं। उन्होंने कहा कि मातृ भाषा के माध्यम से अभियांत्रिकी की शिक्षा शुरू की जानी हैं। उन्होंने कहा कि मातृ भाषा के माध्यम से अभियांत्रिकी की शिक्षा वर्तमान की प्रणाली में कई गुना ज्यादा सार्थक सिद्ध होगी। बाशर्ते कि मातृ भाषा की शिक्षा को समाज स्वीकार कर ले, सरकार समस्त संसाधन मुहैया करा ले और औद्योगिक संस्थान किनारा कसी न करने लगे।

भाषा अधिकारी राहुल खटे ने इंजीनिरिंग शब्द को प्राचीन ग्रंथ निरुक्त के हवाले से भारतीय शब्द बताया। श्री विजय शंकर यादव ने भाषाई आंदोलन को सफल होते देख प्रसन्नता जताई और कहा 11 भाषाओं में 128 पाठ्यक्रम मातृ भाषा में इसी वर्ष से शुरू हो रहे हैं, जो प्रतिवर्ष बढ़कर मातृ भाषा में शिक्षण का पंथ प्रशस्त करेंगे। उन्होंने कहा कि भाषागत अवरोध भारत में अभियांत्रिकी ज्ञान को फलित नहीं होने दे रहा हैं। ज्ञान जुटाने से बेहतर होता हैं ज्ञानमय होना, जो अपनी भाषा में ही हो सकता हैं। अपने को पहचानने की जरूरत हैं।

डॉ. राजीव रावत ने कहा कि इंग्लश मीडियम में शिक्षा का छिपा एजेंडा शायद अंग्रेजी देशों और अंग्रेजीपरस्तों के हित के लिए रखा गया था, क्योंकि भारत की स्वतंत्रता का दस्तावेज तो वास्तव में ट्रांसफर ऑफ पावर ही हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वर्षों से चले आ रहे राजभाषा अधिनियम का पालन कराने के लिए उत्तरदाई संस्थाओं की जिम्मेदारी बढ़ गई हैं।

श्री रवि शुक्ला ने कहा कि भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए मातृ भाषा में इंजीनियरिंग की शिक्षा अनिवार्य हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय के डॉ. अंकित गौर दे ने कहा कि पाठ्यक्रम की उपलब्धता के साथ-साथ यह भी महत्त्वपूर्ण हैं कि भारत में शोध कार्य भी मातृ भाषा में हो और मातृभाषा के जर्नल में प्रकाशित हो।

श्री विमल जी ने कहा कि प्राप्त ज्ञान का अनुवाद मशीनी नहीं व्यावहारिक और प्रचलित शब्दावली में हो। अनुवाद करने वाले के लिए अनिवार्य हो कि वह हिंदी माध्यम से ही पढ़ा हो।

असम के श्री चिन्मय ने कहा कि ज्ञानकोष केवल अंग्रेजी में ही नहीं हैं। जर्मनी से 120 लोगों ने अब तक अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर नोबेल पुरस्कार जीते हैं। कहा कि मुरली मनोहर जोगी जी ने विज्ञान विषय का शोध कार्य हिंदी में किया था। सुझाव हैं कि हर राज्य में एक इंजीनियरिंग कॉलेज, एक मेडिकल कॉलेज, एक तकनीकी संस्थान में हिंदी और मातृ भाषा में शिक्षा उपलब्ध कराने की व्यवस्था होनी चाहिए।

श्री हरिराम पंसारी ने कहा कि हमें प्राइवेट सेक्टर और पार्टनरशिप से भी सहयोग लेना चाहिए ताकि मातृ भाषा में अध्ययन करने वालो को भी अच्छे वेतनमान वाली नौकरियां मिल सके, अन्यथा स्टेटस का अंतर रहने पर अंग्रेजी का वर्चस्व बरकरार रह जाएगा। उन्होंने सुझाव दिया कि अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी माध्यम की इंजीनियरिंग शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मानक संगठन बनाने और एजुकेशनल चैनल खोलकर कंपनियों को आमंत्रित किए जाने की जरूरत हैं।

श्री विजय कुमार मेहरोत्रा ने कहा कि अनुवाद कि बजाय अनुसृजन की पद्धति अपनानी होगी, तभी ज्ञान का सहज सरल और तरल प्रवाह होगा तभी तकनीकी शब्दावली आयोग के शब्दों को छात्र स्वीकार कर पाएगे। कहा कि श्री अटल बिहारी वाजपेई विश्वविद्यालय से सीख लेते हुए सारी व्यवस्थाएं मुकम्मल करनी होगी। प्रोफेसर से लेकर भाषा वैज्ञानिक और अनुवादकर्ता को मिलकर काम करना होगा। अंग्रेजी शब्दों का उच्चारण समरूप नहीं हैं। भारतीय भाषाओं में समरूपता बनाए रखना होगा। अनुवादक के स्तर पर भी मौलिकता जरूरी हैं।

समीक्षा करते हुए श्री धर्मेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि जो देश अपनी भाषा में शिक्षा नहीं दे सकता, वह देश एक कदम उन्नति नहीं कर सकता। इजरायल जैसे देशों ने निज भाषा में ज्ञान का संचय किया और शिक्षा व्यवस्था दी, तभी सफल हुआ हैं। निज भाषा में मौलिकता और विशषज्ञता अधिक होती हैं। भारत की खगोल विद्या आदि का प्राचीन ज्ञान इतना समृद्ध हैं कि हमें अनुवाद की बजाय अपनी परंपरागत ज्ञान-संपदा का अधिक इस्तेमाल करना चाहिए। आज तो ए आई सी टी ई ने ऐसा सॉफ्टवेयर विकसित कर लिया हैं कि दूसरी भाषा से अनुवाद आसान हो गया हैं। गोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों को धन्यवाद देते हुए श्री अनूप नवोदयन ने कहा कि

ग्रामीण परिवेश से मातृ भाषा उच्च शिक्षा में जाते ही छात्रों को अचानक भाषागत समस्याओं से जूझना पड़ता हैं, जिससे वह कुंठित हो जाता हैं। उन्होंने कहा कि सच तो यह हैं कि यूरोप में ज्यादातर आविष्कार 19वीं - 20वीं सदी में हुए हैं। इन सारे आविष्कारों के मूल उत्सव भारतीय ज्ञान संपदा में पहले से विद्यमान हैं वहीं से उठाए गए हैं। हम अपनी ज्ञान-संपदा को ग्रहण कर ले; तो हमें किसी दूसरे वाडमय से उधार लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी।

गोष्ठी का संचालन भाषा अधिकारी नासिक श्री राहुल खटे ने समालोचना श्री धर्मेंद्र सिंह तोमर और अतिथियों को स्वागत संस्थापक न्यासी हेमा जोगी जी ने किया। ई-विमर्श में राष्ट्रवादी लेखक संघ के डॉ. रमा सिंह, श्री अरविंद मौर्या, श्री रघुनाथ पांडेय, श्री संजय सिंह, श्री बृजेश सिंह, श्री अमन कुमार, श्री विनीत मराठे, रामचरण रुचिर आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम विवरण प्रस्तुति श्री रघुनाथ पांडेय के द्वारा की गई।

'रामचरितमानस' में साहित्य और विज्ञान का अंतर्संबंध

रामचरितमानस एक ऐसी साहित्यिक रचना हैं, जिसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास ने किया हैं और यह एक विश्वप्रसिद्ध साहित्यिक रचना हैं। इसमें गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम के चरित्र और उनके कार्य का विस्तार से वर्णन किया हैं। इस रचना के निर्माण में तुलसीदास ने चार वेद, छः शास्त्र, उपनिषदों और 18 पुराणों का आधार बनाया हैं। इसमें श्रीराम, सीता, लक्ष्मण, रावण तथा अन्य पात्रों के चरित्रों और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण सरल – सहज अवधी भाषा में निरूपण किया है।

श्रीरामचरितमानस की आरती में वर्णन आता हैं –

"गावत वेद पुराण, अश्टदस। छहो शास्त्र सब ग्रंथन को रस।
नना पुराण निगमागम सम्म्यद, रामायणे निगरितं क्वचिदन्यतोपि॥"

– बालकांड श्लोक 1:7

"सारद सेस महेस विधिआगम निगम पुराण।"

– बालकांड दोहा 12

"तेहि बल मैं रघुपतिगुण गाथा।"

– बालकांड चौपाई 5, दोहा 12

एम. ए. (हिंदी साहित्य) में सुंदरकांड और एम ए अनुवाद हिंदी के प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रम में किश्किंधाकांड के अध्ययन के दौरान मुझे रामचरितमानस को पढ़ने में रुचि उत्पन्न हुई और इसी समय मैंने यह निर्णय लिया कि, मैं जब कभी पी.एच. डी करूंगा तो इसी विषय पर करूंगा अन्यथा नहीं इसलिए मैंने रामचरितमानस का विस्तृत अध्ययन प्रारंभ किया। अध्ययन के दौरान बालकांड के उस दोहे पर मैं रुक

गया जिसमें लिखा था –

"वन्दे विशुद्ध विज्ञानौ कवीश्वर कपीश्वरौ।"

– बालकांड, श्लोक 4

इस श्लोक के 'विज्ञानौ' शब्द पर जब मेरी नजर पड़ी तो मैं सोच में पड़ गया कि यहां किस विज्ञान की बात हो रही हैं क्योंकि अब तक मैं स्कूल-कॉलेज में यही पढ़ता आया था कि रामायण महाभारत तो एक काल्पनिक काव्य हैं, जिनका इतिहास, भूगोल और विज्ञान से कोई संबंध नहीं हैं। आगे और शोध करने पर रामचरितमानस के उत्तरकांड के निम्नलिखित दोहे ने मेरी जिज्ञासा को और भी बढ़ा दिया जो इस प्रकार हैं

"ग्यानवंत कोटिक महं कोउ। जीवनमुक्त सुकृत जरा साउ।
तिन्ह सहस्त्र मह सुख स्वामी। दुर्लभ ब्रह्मलीन बिग्यानी॥"

– उत्तरकांड छंद-3, दोहा 53

उपरोक्त दोहे के आखिरी शब्द "बिग्यानी" पर मेरी आंखें गढ़ गई। मैंने और शोध करने की कोशिश कि, तो मुझे उत्तरकांड के इस दोहे तक पहुंचा दिया।

"तिन्ह मह प्रिय विरक्त पुनि ग्यानी। ग्यनिह ते अति प्रिय,
तिन्ह ते पुनि मोहि प्रिय निज दासा। जेहि गति मोरि न दूसरि आस॥"

– उतराखंड छंद 3-4, दोहा 85(क)

रामचरितमानस के विभिन्न कांडों, अध्यायों और दोहों में बार-बार आने वाले इन "विज्ञानों", विज्ञानी शब्दों ने मुझे सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि रामचरितमानस में इन शब्दों का होना केवल एक संयोग मात्र नहीं हो सकता।

इसी दौरान मेरा ध्यान रामचरितमानस की आरती पर गया, जिसमें लिखा था –

"चार वेद सब ग्रंथन को रस"

इसे पढ़कर मुझे पूरा विश्वास हो गया कि रामचरितमानस केवल धार्मिक ग्रंथ ही नहीं हैं, बल्कि यह **"वैदिक विज्ञान"** महाद्वार हैं।

मैंने रामचरितमानस को आदयोपान्त पढ़ना शुरू किया, इसी दौरान मेरे पैतृक निवास (अमरावती) के कुछ लोगों से मैंने संपर्क किया जो नियमित रूप से रामायण का पाठ करते थे। उनसे मुझे तुलसीदास की अन्य कृतियों और अन्य रामायणों के

बारे में भी पता चला। जैसे वाल्मिकी रामायण, भावार्थ रामायण, मूल रामायण, गीत रामायण आदि। इनको पढ़ने और समझने का क्रम लगभग तीन चार वर्ष चलता रहा। इसी दौरान मुझे वेदों से संबंधित कुछ पुस्तकों के बारे में पता चला। अमरावती विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के फिलॉसॉफी सेक्शन में मुझे आध्यात्म और विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन पर आधारित वैज्ञानिक आध्यात्म के आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा के साहित्य के बारे में पता चला, जिसके लगभग 80 खंड ग्रंथालय में उपलब्ध थे। मैंने अनुवाद हिंदी की पढ़ाई के साथ-साथ इन ग्रंथों को भी पढ़ना जारी रखा। इन ग्रंथो में अध्यात्म को जो वैज्ञानिक विश्लेषण दिया था, वह अद्भुत था।

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने चार वेद, छः शास्त्र, उपनिषदों और 18 पुराणों के ज्ञान को एक साथ एक जगह संग्रहित करने का सफल प्रयास किया हैं, जिसमें वेदों के गुढ़तम मंत्रों के सरल और बोधगम्य भाषा में भावानुवाद किया हैं। जिस "गॉड पार्टिकल" पर आज भी विज्ञानी शोध कर रहे हैं, उसका वर्णन भी वैदिक साहित्य और रामचरितमानस में आया हैं।

"नारद बचन सत्य सब करिहउ। परम साक्ति समेतु अवतरिहु

असन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउ दिनकर बसं उदारा।"

– उत्तरकांड चौपाई दोहा 5

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में विश्व के निर्माण की प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया हैं, जिसकी छाया उपरोक्त दोहों में प्रतीत होती हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के सारगर्भित मंत्रों का तुलसीदास ने अपनी रचना 'रामचरितमानस' में सरल भावानुवाद किया हैं। पुराणों में वर्णित कई श्लोकों का रामचरितमानस में यथावत अनुवाद दिखाई देता हैं। जैसे कि

"यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लार्निभवति भारत,

अभ्युत्थानम्, धर्मस्य, तदात्मानम्, सृजाम्यहयम॥"

संस्कृत के इस श्लोक का तुलसीदास ने अपने "रामचरितमानस" में इस प्रकार काव्यानुवाद किया हैं,

"जब-जब होइ धर्म की हानि, बड़ौ असुर अधम अभिमानी।

तब-तब प्रभु धरि विविध भारीरा, हरइ कृपा निधि सज्जन पीरा॥"

इन सभी दोहों और चौपाई को देखकर स्पष्ट हो जाता हैं कि, रामचरितमानस

में तुलसीदास ने तत्कालिक परिस्थितियों का ध्यान में रखकर श्रीराम को नायक के रूप में चित्रित किया हैं और साथ ही वेदों, उपनिषदों तथा शास्त्रों के ज्ञान को पुर्नरूज्जीवित किया हैं।

"जाकि रही भावना जैसी प्रभु मूरत तिन देखी तैसी।"

इस उक्ति के अनुसार शास्त्रों और पुराणों को पढ़ने से वही अर्थ निकल आते हैं, जो हमारे मन और बुद्धि ग्रहण करना चाहती हैं, शायद इसीलिए किसी को वेद, पुराण और उपनिषदों में ज्ञान और विज्ञान के सूत्र नजर आते हैं, तो किसी को वेद-पुराण केवल 'गड़रियों के गीत'।

मेरा यह प्रयास रहेगा कि भारत के स्वर्णिम इतिहास की वह चुनिंदा बातें मैं अपने शोध के माध्यम से जन मान्य के समक्ष ला सकूं जो काल की धूल जमने के कारण धुंधली पड़ गई हैं, आवश्यकता केवल उस धूल को हटाने की हैं, प्रतिकूल समय ने हमारे स्वर्णिम साहित्य और इतिहास पर एकत्रित कर दी हैं।

रामचरितमानस
में
मानव संसाधन के सूत्र

रामनवमी के अवसर पर मैं आप सभी का उस भूमि पर आपका स्वागत करता हूँ, जिस भूमि पर किसी समय साक्षात भगवान श्रीराम ने अपने चरण रखे थे। हम सभी सौभाग्यशाली हैं, कि हमें इस स्थान पर कार्य करने का मौका मिल रहा हैं। नासिक भारत की एकमात्र ऐसी जगह हैं, जिस प्रभु श्रीराम ने अयोध्या के बाद सार्वधिक अपना समय व्यतीत किया हैं, यह उनके त्याग, समर्पण और भूमि हैं। यहां की पृथ्वी जमीन, आकाश, वायु, और जल में आज भी प्रभु श्रीराम की यादें जीवित हैं।

आज इस स्थानों पर मैं आप सबका मैं हार्दिक स्वागत करता हूं। भारत के महान राष्ट्र (महाराष्ट्र) का नासिक जीवन संघर्ष की भूमि हैं। अच्छाई का बुराई के साथ असत्य का सत्य के साथ, प्रकाश का अंधकार के साथ और असफलता का सफलता के साथ का यह मूर्तिमान प्रतीक हैं। प्रभु श्रीराम का जीवन और नासिक की यह पतित पावन भूमि हमें कम से कम संसाधनों से अधिक से अधिक कार्य करने विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। रामचरितमानस में तुलसीदास ने कहा हैं –

"सकल सुमंगलदायक, रघुनायक गुण गाण।
सदर सुनही से तरही, भवसिंधु बिना जल जान॥"

अर्थात् श्रीराम के चरित्र का गुणगान करने से भवसिंधु अर्थात् संसार रूपी या सागर हम पार कर सकते हैं।

"तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिय तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिली जो सुख लव सतसंग॥

अच्छे लोगों का संग, उनका साथ स्वर्ग-तुला होता हैं आज हम भी आप लोगों का साथ पाकर प्रफुल्लित हुए हैं।

श्रीराम का चरित्र हमें जीवन निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता हैं, जो कि हमारे भारतीय स्टेट बैंक के विजन अग्रसर भारत का सर्वप्रिय बैंक बनने के लक्ष्य को प्राप्त करने में निरंतर सहायता करता रहेगा। ध्येय (मिशन) अर्थात् सरल उत्तरदायी और अभिनव वित्तीय समाधान देने के लिए प्रतिबद्धता के लक्ष्य को हासिल करने में सहायता करेगा भारतीय स्टेट बैंक का मूल सेवा पारदर्शित सदाचार, शिष्टता और निरंतरता के मूल को सदैव अपने हृदय में धारण करते हुए हमारे लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा यह नासिक की भूमि मुझे देती रहेगी।

श्रीराम ने अपने जीवन में सदैव अच्छाई और सत्यता का साथ दिया वहां आताताई, दुष्ट और अत्याचारियों के दमन की प्रेरणा भी दी, जो हमारे मानव-संसाधन विभाग को मार्गदर्शक तत्व की प्रेरणा देती हैं। प्रभु श्रीराम का जीवन हमें दूसरे के अधिकारियों के संरक्षण और उसके सम्मान की भी प्रेरणा देता हैं, जो मानव संसाधन विभाग के साथ-साथ सभी विभागों साथ-साथ सभी विभागों को अपने कार्यक्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ने में सहायता करता रहेगा।

सेवा, पारदर्शिता, सदाचार और निरंतरता के मूल्य के साक्षात प्रतिमान की इस भूमि को मैं अभिवादन करता हूं।

हमारे बैंकिंग परिवेश में नीति, मूल्यों और पारदर्शिता की परम आवश्यकता हैं। जिस प्रकार संविधान हमें अपने अधिकारों और कर्त्तव्यों की याद दिलाता हैं, उसी प्रकार श्री राम का चरित्र हमें हमारे जीवन लक्ष्यों को प्राप्त करने की ही नहीं बल्कि हमें हमारे बैंकिंग परिवेश में नीति मूल्य को पालन करते हुए दूसरे की अधिकारों की सम्मान के साथ उनके जीवन का आनंद प्राप्त करने के स्वतंत्रता का सदैव स्मरण रखने की सीख देता हैं।

मुझे ऐसा लगता हैं कि हमारे भारतीय स्टेट बैंक के विजन, मिशन और मूल्य अर्थात् भारतीय स्टेट बैंक के लक्ष्य, ध्येय और मूल्य को प्राप्त करने में हमारा सहायक हो सकता हैं।

भारतीय जीवन मूल्यों में धर्म, अर्थ, काम के संसाधनों की सहायता से मोक्ष

प्राप्ति की बात कही गई हैं। हमें भी हमारे व्यावहारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए धर्म अर्थात् कीर्तिमूल्यों और कर्तव्य परायणता का पालन करते हुए अर्थ प्राप्ति अर्थात् व्यवसाय को वृद्धिगत करना चाहिए।

भारतीय दर्शनशास्त्र से प्राप्त इन मार्गदशकों सिद्धांतों को अपनाकर हम हमारे व्यवसाय और परिचालन को और भी सफल तथा उत्तरदायी बना सकते हैं।

आज हमारे नासिक मोड्यूल के सभी अधिकारी और कर्मचारी को सम्मानित करते हुए अपने आप को भी गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूं और आप भविष्य में भी इसी प्रकार अपने-अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हुए सफलता प्राप्त करेंगे ऐसी आशा के साथ।

शुभकामनाओं के साथ।

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस

भारत सरकार ने समग्र और बहुविषयक शिक्षा के विकास हेतु भारत सरकार ने शिक्षा संस्थानों की महति भूमिका हैं। नई शिक्षा नीति-2020 बनाई हैं। जिसमें उच्च मुख्यतः सामान्य शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा के साथ तालमेल बिठाने के उद्देश्य से यह परम आवश्यक हैं। उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा से अन्य क्षेत्रों के विद्वान जिन्होंने अपने क्षेत्र में कौशल और प्रवीणता के आधार पर उपलब्धियां हासिल की हैं, उन्हें इस योजना का लाभ मिलेगा और वास्तविक अनुभव आधारित ज्ञान का लाभ शिक्षार्थियों को होगा।

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस को नियुक्त करने के लिए दिशा-निर्देश :

विश्वविद्यालय और कॉलेज राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में पर ध्यान केंद्रित करके उच्च शिक्षा को बदलने का प्रयास किया गया हैं। उद्योग और अर्थव्यवस्था की जरूरतों को पूरा करने के लिए कौशल आधारित शिक्षा इसके अलावा, नई शिक्षा नीति भी सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करने और मजबूत करने की अनुशंसा करता हैं।

उच्च शिक्षा संस्थान में उद्योग-अकादमिक सहयोग करना :

इष्टतम स्तर पर युवाओं के कौशल के लिए, शिक्षार्थी नियोक्ताओं की तरह सोचने की आवश्यकता हैं और नियोक्ताओं को शिक्षार्थियों की तरह सोचने की आवश्यकता हैं। इस ओर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उद्योग और अन्य व्यावसायिक विशेषज्ञता को बाजार में लाने के लिए एक नई पहल की हैं। शैक्षणिक संस्थानों को "प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस" नामक पदों की एक नई श्रेणी के माध्यम से यह वास्तविक दुनिया की प्रथाओं और अनुभवों को कक्षों में ले जाने में मदद करेगा और उच्च शिक्षा संस्थानों में संकाय संसाधनों में वृद्धि भी करेगा। इससे उद्योग और प्रासंगिक कौशल से लैस प्रशिक्षित स्नातकों से लाभान्वित होगा।

उद्देश्य :

उद्योग और सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम और अभ्यासक्रम विकसित करना और उच्च शिक्षा संस्थानों को संयुक्त अनुसंधान परियोजना पर उद्योग के विशेषज्ञों के साथ काम करने में सक्षम बनाना और परामर्श सेवाएं जो परस्पर लाभकारी होगी।

इंजीनियरिंग, विज्ञान जैसे विभिन्न क्षेत्रों से विशिष्ट विशेषज्ञों को लाने के लिए प्रौद्योगिकी, उद्यमिता, प्रबंधन, चार्टर्ड एकाउटेंसी (सी ए), वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, मीडिया, साहित्य, ललित कला, सिविल सेवा, सशस्त्र बल कानूनी शैक्षणिक संस्थानों में पेशा और लोक प्रशासन के व्यक्तियों के साथ औपचारिक रूप से संबद्ध करने के लिए उच्च शिक्षा संस्थानों को सक्षम रखने के लिए अनुभवात्मक अधिगम, अनुसंधान प्रशिक्षिण, कौशल विकास, उद्यमिता और विस्तार तथा परामर्श दाता की भूमिका निभाना।

पात्रता :

विशिष्ट विशेषज्ञ जिन्होंने अपने व्यवसायों में उल्लेखनीय योगदान दिया हैं जैसे इंजीनियरिंग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, उद्यमिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों से, वाणिज्य, सामाजिक विज्ञान, मीडिया, साहित्य, ललित कला, सिविल सेवा, सशास्त्र बल कानूनी पेशा, सामुदायिक विज्ञान, पंचायती राज, ग्रामीण विकास, वाटरशेड विकास, जल संचयन, जैविक खेती, लघु हरित ऊर्जा सिस्टम, नगरपालिका योजना, सामुदायिक भागीदारी, जेंडर बजटिंग/योजना, आदिवासियों का समावेशी विकास और दूसरों के बीच लोक प्रशासन। जिन्होंने कम से कम 15 वर्षों के अनुभव के साथ अपने विशिष्ट पेशे में विशेषज्ञता हासिल कर ली हो और वो प्रोफेसर जिन्होंने सेवा / अनुभव, सामान्यतः एक वरिष्ठ स्तर पर हैं, इसके लिए पात्र होंगे।

इस पद के लिए औपचरिक शैक्षणिक योग्यता को आवश्यक नहीं माना जाता हैं यदि वे बदले में अनुकरणीय पेशेवर प्रैक्टिस करें। इन विशेषज्ञों को भी मिलोगी छूट के लिए निर्धारित प्रकाशनों और अन्य पात्रता मानदंडो की आवश्यकता से प्राध्यापक स्तर पर संकाय सदस्यों की भर्ती। हालांकि, उनके पास निम्नलिखित में निर्दिष्ट कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करने का कौशल होना चाहिए।

किसी भी समय किसी उच्च शिक्षा संस्थानों में स्वीकृत पदों के 10 प्रतिशत से अधिक प्रैक्टिस ऑफ प्रोफेसरों की संख्या नहीं होनी चाहिए।

कर्तव्य और जिम्मेदारियां :

- पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम के विकास और डिजाइनिंग में शामिल हों। संस्थागत नीतियों के अनुसार नए पाठ्यक्रम शुरू करना और व्याख्यान देना।
- नवाचार और उद्यमिता परियोजनाओं में छात्रों को प्रोत्साहित करना और आवश्यक प्रदान करते हुए गतिविधियों के लिए मार्गदर्शन करना।
- उद्योग-अकादमिक सहयोग को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना।
- संस्था के लियमित संयकाय सदस्य के सहयोग से संयुक्त रूप से आचरण करना, कार्यशालाएं, सेमिनार, विशेष आख्यान और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते हैं।
- नियमित के सहयोग से संयुक्त अनुसंधान परियोजना या परामर्श सेवाएं संचलित करते हुए, संबंधित उच्च शिक्षा संस्थान के संकाय सदस्य।

सामान्य शर्तें :

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस की नियुक्ति एक निश्चित अवधि के लिए होगी।

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस की नियुक्ति (सीए) यूनिवर्सिटी/कॉलेज के स्वीकृत पदों से अतिरिक्त होगी। यह स्वीकृत पदों की संख्या और नियमित संकाय सदस्यों की भर्ती को प्रभावित नहीं करेगा।

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस उन लोगों के लिए खुला नहीं है जो सेवारत या सेवानिवृत्त जैसे शिक्षा के पेशे में हैं।

कार्य की श्रेणीयां :

यह कल्पना की हैं कि प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस को निम्नलिखित श्रेणियों में से एक में लगाया जा सकता हैं।

उद्योग द्वारा वित्त पोषित प्रैक्टिस के प्रोफेसर, उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा अपने स्वयं के संसाधनों से वित्तपोषित प्रैक्टिस के प्रोफेसर आज का उद्योग विशिष्ट कौशल वाले स्नातकों की तालाश करता हैं। लेकिन उच्च शिक्षा प्रणाली उन स्नातकों को बाहर कर रहा हैं जो आवश्यक कौशल से कम हैं। परिणामस्वरूप, कई उद्योग अब स्नातकों को नियुक्त करें और उन्हें नियोजित करने से पहले पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करें। विशेषज्ञों को शामिल करने से उद्योग से क्षण में, उद्योग और उच्च शिक्षा दोनों को लाभ होगा।

संस्थान :

इस श्रेणी में उद्योग के विशेषज्ञों और पेशेवरों को शामिल करने के लिए, उच्च शिक्षा संस्थान हो सकता हैं। प्रैक्टिस पदों के प्रोफेसर का समर्थन करने के लिए उद्योगों के साथ सहयोग कर सकते हैं।

उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा अपने स्वयं के संसाधनों से वित्त पोशित प्रैक्टिस के प्रोफेसर :

नई शिक्षा नीति 2020 के नीति निर्देशों के अनुसार, स्नातक कार्यक्रमों को समझता और बहुआयामी दृष्टिकोण के साथ संशोधित किया जाता हैं। उच्च शिक्षा संस्थान विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक अंतराल क्षेत्रों का आकलन कर सकते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व की स्थिति में काम करने वाले विशेषज्ञों को शामिल करना। इस श्रेणी में, प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के लिए पारिश्रमिक उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा अपने स्वयं के संसाधनों से नीचे इंगित किया जाता हैं:

पारिश्रमिक :

आंशकालिक/पूर्णकालिक कार्य; पारस्परिक रूप से सहमत संस्था और विशेषज्ञ के बीच मान्य राशि।

मानद आधार पर प्रैक्टिस के प्रोफेसर :

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के लिए पात्रता मानदंड को पूरा करने वाले विषज्ञ पसंद कर सकते हैं। छात्रों के साथ विशेषज्ञता और मानद आधार पर पढ़ाने के लिए आगे आ सकते हैं। ऐसे विशेषज्ञ हो सकते हैं जो प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के रूप में मानद आधार पर नियुक्त किया गया हैं और उनकी सेवाओं का छात्रों का लाभ उपयोग किया जा सकता हैं।

उच्च शिक्षा संस्थान प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस को इस श्रेणी को अपने संसाधनों से भुगतान की जाने वाली मानदेय की राशि के बारे में निर्णय ले सकते हैं।

प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस के चयन की प्रक्रिया :

प्रैक्टिस पदो के प्रोफेसर कुलपति / निर्देशक प्रतिष्ठित विशेषज्ञों से नामांकन आमंत्रित कर सकते हैं:

उच्च शिक्षा संस्थान में संभावित योगदान देने और सेवा करने के इच्छुक विशेषज्ञों को भी नामित किया जा सकता हैं या वे अपना नामांकन कुलपति / निर्देशक विस्तृत

बायोडाटा और उनके बारे में एक संक्षिप्त लेख के साथ भेज सकते हैं।

ऐसे नामांकनों पर दो वरिष्ठ के चयन पर समिति द्वारा विचार किया जाएगा। उच्च शिक्षा संस्थान के प्रोफेसर और एक प्रख्यात बाहरी सदस्य अकादमिक परिषद और कार्यकारी परिषद पर आधारित इस समिति की सिफारिशें या उच्च शिक्षा संस्थान के वैधानिक निकाय कार्य पर फैसला करेंगे।

कार्यकाल

शुरू में कार्यकाल एक साल तक हो सकता हैं। प्रारंभिक कार्य के अंत में या बाद में विस्तार, उच्च शिक्षा संस्थान मूल्यांकन करेगी और इसके विस्तार के बारे में निर्णय लेगी प्रैक्टिस ऑफ प्रोफेसर के रूप में लगे विशेषज्ञों का योगदान और आवश्यकता उच्च शिक्षा संस्थान निम्नलिखित के आधार पर विस्तार के लिए अपनी स्वयं की मूल्यांकन प्रक्रिया तैयार करेगा।

किसी भी संस्थान में प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस की सेवा की अधिकतम अवधि तीन वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए और असाधारण मामलों में इसे एक वर्ष के लिए बढ़ाया जा सकता हैं और कुल सेवा किसी भी परिस्थिति में चार वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।

समीक्षाएं

1

जब कोई लेखक हिंदी में लिखना चाहता हैं तो धरातल पर काम करने में बाधाएं बहुत हैं। टंकण से लेकर फॉण्ट और उपयुक्त सॉफ्टवेयर के चयन से जूझते-जूझते हिंदी लेखक कहां जाता हैं। सच्चाई यह हैं कि हिंदी की दिशा और दशा या उसके संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा न होने पर विलाप से आगे बढ़कर सचमुच हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने वाले कार्य करना समय की मांग हैं।

राहुल जी की यह पुस्तक हर उस व्यक्ति के लिए उपयोगी हैं जो अपनी भाषा प्रवीणता के बाद भी व्यावहारिक समस्याओं को नहीं सुलझा पाता। ऐसा नहीं कि हिंदी के उपयोग की लोकप्रियता बढ़ाने के प्रयास नहीं हुए। समस्या तो यह हैं कि आम हिंदी प्रेमी को उन उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी ही नहीं हैं।

आज के युग में डिजिटल साक्षरता अनिवार्य हो गई हैं। लेखक ने ई-मेल विभिन्न कुंजी पटलों का परिचय, अनुवाद के लिए उपलब्ध सॉफ्टवेयर आदि का परिचय देकर तथा उपयोग समझाकर हिंदी भाषियों के पथ को सुगम करने का उपयोगी प्रयास किया हैं। यह पुस्तक प्रौद्योगिकी प्रदत्त इन सुविधाओं का परिचय तो देती ही हैं एवं पुराणों के आख्यानों को वैज्ञानिक दृष्टि से परीक्षित करने का भी प्रयास करती हैं

इस प्रयास के लिए राहुल खटे जी को बहुत-बहुत बधाई।

मुझे विश्वास हैं कि इस अनुभव जनित पुस्तक को लोकप्रियता मिलेगा पूरी आशा हैं कि अगले संस्करणों में और भी वृद्धि होगी तथा सत्त उन्नत जानकारियां जुड़ती रहेगी।

डॉ. चंद्रमोहन नौटियाल

विज्ञानी एवं विज्ञान लेखक एवं संचारक

2.

श्री राहुल खटे एक बहुत ही विद्वान चिंतक और अन्वेषीय व्यक्ति हैं। आपसे मेरा परिचय वर्ष 2013 से हैं। जब मैं वित्तीय सेवाएं विभाग में संयुक्त निदेशक (Joint director) था और बैंकों और बीमा कंपनियों जैसी वित्तीय संस्थानों में राजभाषा का कार्य देखता था।

राहुल जी तब से राजभाषा के लिए बहुत ही कार्य और चिंतन करते रहें हैं। तब आप स्टेट बैंक ऑफ मैसूर में कार्यरत थे। आजकल भारतीय स्टेट बैंक में हैं, लेकिन एक राजभाषा अधिकारी के रूप में जो मेहनत की हैं। जो परिश्रम किया हैं, वह तो अद्भुत हैं। मैं इनको कहता था आप तो बहुत अच्छा लिख सकते हैं लिखिए और आज उन्होंने किताब लिख दी।

मुझे बहुत खुशी हुई जब किताब मिली।

पुस्तक में राजभाषा हिंदी और उस के तकनीकी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की हैं। भाषा संगम, भारत की शिक्षा नीति हिंदी में तकनीकी पहलुओं पर विस्तार से जानकारी दी हैं।

दशावतार, माइक्रोसॉफ्ट, रामचरितमानसहित और विज्ञान के कई अध्याय हैं, जो अपने आप में अच्छे हैं। तो आप पढ़ेंगे तो आपको बहुत अच्छा लगेगा। आप लोग भी अपने-अपने बैंक और बीमा कंपनी में मेहनत से काम कर रहे हैं। कुछ लिखिए, लोगों को बताइए कि वर्ष 2013 से 2016 तक बैंको और बीमा कंपनियों में हिंदी का जो स्वरूप था, अब वह कहां पहुंचा हैं, आप लोग बता पाएंगे।

राजभाषा हिंदी आप सब की ताकत से आगे बढ़ेगी, ऐसा मैं मानता हूं। "हिंदी हैं हम" और "राजभाषा परिवार" के सभी लोग बधाई के पात्र हैं। श्री राहुल जी को विशेष तौर हार्दिक बधाई।

वेद प्रकाश दुबे

भूतपूर्व संयुक्त निदेशक

(वित्तीय सेवाएं विभाग), भारत सरकार

3.

आज राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं प्रचार प्रसार हेतू सर्वाधिक आवश्यकता हैं हिंदी के तकनीकी पक्ष को समूह को समृद्ध करने की तथा आज की डिजिटल दुनिया में उपयोग के लिए सक्षम बनाने की राहुल खटे की पुस्तक "राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम" इस तथ्य पर पूर्णत खरी उतरती है।

पुस्तक व्यापक अध्ययन एवं शोध का परिणाम हैं एवं राजभाषा के व्यावहारिक पक्ष को संबल प्रदान करती हैं जिसकी सर्वाधिक आवश्यकता हैं। पुस्तक में वैज्ञानिक पक्ष के साथ-साथ राजभाषा के सांस्कृतिक पक्ष के साथ भी पूर्णतः न्याय किया गया हैं।

हिंदी को बदलते वैश्विक स्वरूप के अनुरूप स्वीकार्य एवं गाह्य बनाने में पुस्तक की निःसंदेह महत्वपूर्ण भूमिका होगी।

भारत की शिक्षा नीति में राजभाषा नीति को समाहित करने की आवश्यकता पर पुस्तक प्रकाश डालती हैं, जो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं। राजभाषा हिंदी में स्तरीय तकनीकी साहित्य दुर्लभ हैं एवं जो भी लिखा जा रहा हैं वह मात्र विषय का दुर्लभ होता हैं।

राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम पुस्तक ऐसी जानकारी उपलब्ध करती हैं जो नवीनतम है एवं अन्य दुर्लभ हैं। पुस्तक संग्रहणीय हैं एवं हर पुस्तकालय में इसकी उपलब्धता करती हैं जो नवीनतम हैं एवं अन्य दुर्लभ हैं।

पुस्तक संग्रहणीय हैं एवं हर पुस्तकालय में इसकी उपलब्धता के प्रयास किए जाने चाहिए।

पुस्तक का सर्वाधिक कम महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं यह तमाम वैज्ञानिकता को समेटे रहने बावजूद भारतीय का दामन नहीं छोड़ती हैं एवं हमें अपनी भाषा में अपनी भाषा पर गौरवान्वित होने का अहसास दिलाती हैं।

राहुल खटे जी को उनके अथक परिश्रम हेतु साधुवाद एवं हार्दिक शुभकामनाएं।

सादर,

अरुण कुमार मिश्रा

उप-प्रबंधक, राजभाषा

एनटीपीसी, खरगोन

4.

इस पुस्तक में राहुल खटे जी ने हिंदी को तकनीकी भाषा के रूप में विकसित करने के नए तरीके और उन तकनीकी दुष्प्रभावों के बारे में बताया हैं।

जो हमारी राष्ट्रीय भाषा को उन्नत बनाने में आ रहे हैं।

इस पुस्तक में उन्होंने इस समस्या के निवारण के लिए कुछ सुझाव भी दिए हैं।

यह पुस्तक राष्ट्रीय भाषा के विकास के बारे में जानने वाले लोगों, हिंदी भाषा के उत्साही शिक्षकों और छात्रों के लिए उपयोगी हो सकती हैं। इस पुस्तक में वर्णित किए गए विषय विशेषः अधिक से अधिक टेक्नोलॉजी एवं साइंस के विकास के साथ संबंधित होते हैं।

यदि आप इस पुस्तक को पढ़ना चाहते हैं, जो आप इसे ऑनलाइन या ऑफलाइन स्टोर से खरीद सकते हैं।

इस पुस्तक में राहुल खटे जी ने हिंदी भाषा के तकनीकी की उन्नयन के बारे में विस्तृत जानकारी दी हैं। यह पुस्तक उन लोगों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं जो हिंदी में तकनीकी जानकारी के स्रोत की तलाश में हैं।

इस पुस्तक में राहुल खटे जी ने हिंदी भाषा के तकनीकी पक्ष के नवीन आयाम के बारे में विस्तृत जानकारी दी हैं। यह पुस्तक विभिन्न विषयों पर आधारित हैं, जैसे कि संगणक विज्ञान, सॉफ्टवेयर डिजाइन, इलेक्ट्रॉनिक्स और इंटरनेट संबंधी तकनीकी शब्दों का उपयोग इत्यादि। इस पुस्तक में विभिन्न अध्यायों में विभिन्न विषयों के बारे में विस्तार में बताया गया हैं।

यह पुस्तक हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दों की अधिकतम संख्या को शामिल करती हैं जो कि आधुनिक तकनीकी जगत में उपयोग की जाने वाली हैं।

इस पुस्तक का मुख्य लक्ष्य हिंदी भाषा में तकनीकी पक्ष के संग्रह को उपलब्ध कराना हैं। इस पुस्तक को विभिन्न तकनीकी जगत में कार्य करने वाले लोगों, शिक्षकों और छात्रों के लिए उपयोगी माना जाता हैं।

इस पुस्तक में राहुल खटे ने हिंदी भाषा के तकनीकी पक्षों को दर्शाते हुए विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा की गई हैं।

हिंदी भाषा के तकनीकी पक्ष

हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दों की उत्पत्ति और विकास

हिंदी भाषा के तकनीकी शब्दों का व्याकरण

हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दों का उपयोग

हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दों का अनुवाद

हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दों का उच्चारण

इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा के तकनीकी पक्षों को समझना हैं। इसके अलावा, पुस्तक में हिंदी भाषा में तकनीकी शब्दों की उत्पत्ति और विकास के साथ-साथ हिंदी भाषा के संबंध में विभिन्न चुनौतियों का भी विस्तार से वर्णन किया गया हैं।

सत्यवान वर्मा

भौतिकी विज्ञानी

भादरा, हनुमानगढ़, राजस्थान

5

राहुल खटे जी की पुस्तक "राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम" व्यापक अध्ययन एवं शोध का परिणाम हैं, जिसमें राजभाषा हिंदी के व्यापारिक पक्ष को बहुत ही उत्कृष्ट तरीके से रखा गया हैं। जिससे आने वाली पीढियां न केवल लाभान्वित होंगी बल्कि राजभाषा को एक नया स्तर भी प्रदान करेगी। पुस्तक में राजभाषा के सांस्कृतिक पक्ष के अलावा वैज्ञानिक एवं तकनीकी पक्ष को भी उत्कृष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया हैं।

जिसे हिंदी सेवीकर्मियो को निश्चित रूप से लाभ प्राप्त होगा। इसके लिए श्री राहुल खटे जी को कोटि-कोटि साधुवाद।

डॉ. कुंवरपाल पुंडीर
उप निदेशक
रक्षामंत्रालय, मेरठ

6.

मेरे युवा मित्र राहुल खटे जी का हार्दिक अभिनंदन राहुल जी की राजभाषा प्रयोजन मूलक हिंदी और तकनीकी हिंदी के क्षेत्र में निरंतर अपनी लेखनी से योगदान दे रहे हैं।

साहित्यिक हिंदी के साथ मीडिया 'कंप्यूटर' मोबाइल की हिंदी का प्रचार-प्रसार में राहुल जी निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

हमारे कार्य की प्रशंसा तब होती हैं, जब हम सक्रिय कार्य करते हुए उस लेखा-जोखा लिखित पुस्तक द्वारा प्रस्तुत करते हैं। लेखक ने तकनीकी हिंदी के अनेक पहलुओं की चर्चा इस पुस्तक में प्रस्तुत की हैं।

आधुनिक तकनीकी युग में इस प्रकार के पुस्तक की शैक्षणिक 'राजभाषा' के क्षेत्र में आवश्यकता बढ़ी हैं।

हर कार्य पर टीका-टिप्पणी होती रहती हैं। तकनीकी हिंदी के क्षेत्र में विद्वान तकनीकी लेखकों की समीक्षा बहुत मायने रखती हैं। आजकल साहित्यिक लोग तकनीकी क्षेत्र पर समीक्षा लिख रहे हैं। तकनीकी हिंदी साहित्य में कार्यरत लेखकों को सही मार्गदर्शक और प्रोत्साहन की नितांत आवश्यकता महसूस की जा रही हैं।

राहुल खटे जो को हार्दिक बधाई,

विजय नगरकर

पूर्व राजभाषा अधिकारी
बी.एस.एन.एल,
अहमदनगर महाराष्ट्र

7

राजभाषा हिंदी के कार्यकारी आयामों पर लंबे समय से कार्यरत श्री राहुल खटे की हाल ही में प्रकाशित कृति हैं। "राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम" राजभाषा हिंदी के साथ ही हिंदी के प्रयोजन मूलक पक्षों पर विचार-विमर्श का आज एक नया दौर दिखाई देता हैं। हिंदी केवल साहित्य से संबंद्धन नहीं हैं। वरन् अनेक क्षेत्रों में हिंदी के प्रगामी और कार्यकारी उपयोग अस्तित्व में आए हैं।

हिंदी अध्ययन-अध्यापन में प्रयोजन मूलक हिंदी का नया क्षेत्र विकसित हुआ हैं। सूचना और संचार क्रांति के साथ इस क्षेत्र में नए आयाम सृजित हुए हैं। इन नवीन आयामों ने जिन अपेक्षाओं को कार्यकारी हिंदी व उसके नवोन्मेषी के संदर्भों में अनुभूत किया हैं, ऐसी अपेक्षाओं की पूर्ति के लिए यह कृति विशिष्ट हैं।

राहुल खटे जी राजभाषा हिंदी के कार्यालय क्षेत्र से संबंधित हैं। वरिष्ठ अधिकारी होने के साथ ही राजभाषा हिंदी से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों योजनाओं और प्रबंधन आदि में उनकी सक्रियता रहती हैं। इसका कारण उनके पास अनुभवों का विस्तार भी हैं, और जिज्ञासाओं का संसार भी हैं।

उनकी सद्यः प्रकाशित कृति उनके दैनंदिन अनुभवों के साथ ही जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं के समाधान के समेकित स्वरूप के तौर पर पाठकों के बीच आई हैं। चूंकि कृति व्यावहारिक हिंदी और हिंदी के नवोन्मेषी पक्ष पर केंद्रित हैं, इस कारण यह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें पाठ्यक्रम के अनुसार विषय मिल जाते हैं। लेकिन इस परिधि से बाहर निकल कर यदि कोई कृति हिंदी के नवोन्मेषी आयाम खोजनी हो तो प्रायः निराशा ही हाथ लगती रही हैं। राहुल जी इस पक्ष पर साधुवाद के साथ ही हिंदी की सेवा की दृष्टि से अभिनंदन के पात्र हैं, कि उन्होंने अत्यंत सार्थक, सबल, सशक्त और महत्त्वपूर्ण कृति हिंदी जगत को समर्पित की।

संसार साहित्य माला, मुंबई से प्रकाशित इस कृति में इक्कीस निबंध हैं। सभी निबंध वैचारिक गहनता के साथ ही तथ्य परक जानकारी से पूर्ण हैं।

समीक्षित कृति के सभी आलेख विविधत के साथ एकरसता का भान कराते हुए हिंदी के नवोन्मेषी आयामों पर गहन विश्लेषण करते हैं। अनेक नई जानकारियों, तकनीकी अनुप्रयोगों, सूचना संचार की बारीकियों, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के सॉफ्टवेयर और एप्लीकेशन्स की जानकारियों के साथ ही रुचिकर तथ्यों को जानने के लिए यह कृति महत्त्वपूर्ण हैं। समिक्षित कृति के कृतिकार श्री राहुल खटे ने अपने अनुभवों को बड़े रोचक ढंग से लिपिबद्ध किया हैं, एवं जानकारियों की साझेदारी की हैं

समिक्षित कृति : राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम

लेखक : **श्री राहुल खटे**

प्रकाशक : संस्कार साहित्य माला, मुंबई

8.

राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम

लेखकः श्री राहुल खटे

नई शिक्षा नीति 2020 जो भारतीय और स्थानिक भाषाओं पर जोर दे रही हैं क्योंकि स्थानिक भाषाओं से समग्र व्यक्तित्व विकाश और आर्थिक प्रगति बड़े पैमानें पर होती हैं। यह हमने अपने पुरातनकाल में देखा हैं और आज बहुत सारे विकसित देश का अध्ययन करने के बाद ही नजर आता हैं।

यदि सही ढंग से विश्लेषण किया जाए तो स्थानीय भाषाओं का बड़ा योगदान नजर आता हैं।

लेखक राहुल खटे जी की सुंदर प्रस्तुति जिसमें वे हिंदी भाषा जिसके साथ संस्कृत को जोड़कर और साथ में विज्ञान और तकनीकी, आय का उपयोग कर के कैसे हमारे आने वाली पीढ़ियों, समाज और देश का समग्र विकास कर सकते हैं। इस तरफ सबका ध्यान आकर्षित करना चाह रहे हैं, विकास, सामाजिक, आर्थिक और अध्यात्मिक स्तर पर होगा यदि हम इसे सही तरीके से नई शिक्षा नीति के साथ जोड़ते हैं।

हिंदी और संस्कृति भाषा में अपार ज्ञान और साहित्य हैं, जिसे पाश्चिमत्य बुद्धिजीवियों ने अपनाकर, अध्ययन कर मानसशास्त्र विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र में विकास किया, लेखक इसी ओर हम सबका ध्यान इंगित करना चाहते हैं, जिससे सब का भला हो और इसका सही माध्यम हैं उनकी दृष्टि से नई शिक्षा नीति, सरकार और समाज के हर एक वर्ग को यही दृष्टिकोण समझना होगा और इस दिशा में आगे बढ़ना होगा। किताब पढ़कर सारे बातें समझ में आती हैं, श्री राहुल जी का हृदय से धन्यवाद इन शानदार विचारों को उदधृत करने के लिए और बधाई।

पंकज जगन्नाथ जयस्वाल

पुणे

पुस्तक : राजभाषा हिंदी के नवोन्मेशी आयाम (लेखक : श्री राहुल खटे)

9.

नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में राहुल खटे की पुस्तक एक सुंदर प्रस्तुति हैं।

लेखक ने आरंभ एक दार्शनिक साहित्यकार के रूप में किया हैं। परंतु दार्शनिकता से विचार धरातल पर हिंदी की स्थिति और हिंदी भाषी की मनोदशा को भी इंगित करने लगते हैं। आधुनिक तकनीकी ज्ञान में हिंदी पिछड़ी नहीं हैं।

लेखक इस बात को तथ्यों सहित प्रस्तुत करता हैं। वास्तव में हिंदी को बल उसके उपभोगी वर्ग से मिलता हैं। हिंदी एक बड़े वर्ग में अपनी व्यापक पकड़ के साथ उपस्थित हैं। अनगिनत विरोधों के होते हुए भी हिंदी की संपूर्ण भारत स्वीकारिता जड़ जमाती जा रही हैं। इसी कारण हिंदी का बड़ा बाजार भी हैं। वह समाचार-पत्र हों या हिंदी चैनल या किसी भी प्रकार की प्रचार सामग्री। हिंदी पाठ का उपभोक्ता तक बाजार को पहुंच बनाने के लिए तकनीकी साधनों को किस प्रकार विकसित और अपडेट किया जा रहा हैं।

यह पुस्तक इसकी जानकारी प्रस्तुत करती हैं।

बहुत से सरकारी विज्ञापनों की तरह लगभग उसी शैली में भाषा से जुड़े कई कोर्स, विश्वविद्यालय इत्यादि की जानकारी दी गई हैं। इस प्रकार की जानकारी एक स्थान पर मिलना सुखद हैं, परंतु धरातलीय स्थिति तो इनका उपभोगी ही बता सकता हैं। क्योंकि कई संस्थान इस प्रकार के दावों में अपनी स्थिति बदलते रहते हैं। कई कोर्स विभिन्न कारणों से शुरू नहीं हो पाते तो कई बाद में बंद ही जाते हैं। तकनीक से जुड़े आयामों के उत्तम प्रस्तुति करण के बावजूद भी लेखक अपना विचारक और दार्शनिक भाव नहीं त्यागता। इसी कारण डार्विन सिद्धांत विष्णु अवतार की व्याख्या सहित कुछ अन्य विषय भी समाहित किए गए हैं। इनमें से बहुत सा ज्ञान गाहे-बगाहे सोशल मीडिया माध्यमों में चक्कर काटता प्राप्त हो जाता हैं।

हिंदी की विशेषता यह रही हैं कि इसने सहज ही बाह्य भाषाओं के शब्दों को अंगीकार किया गया हैं और आज भी कर रही हैं। बड़ा और मजबूत बाजार होने के कारण इससे जुड़े आयामों में निरंतर परिवर्तन हो रहा हैं। उर्दू इत्यादि के शब्दों के साथ आंख मिचोनी की निरंतरता बनी हुई हैं। पुस्तक हिंदी के अतिरिक्त भी बहुत कुछ बताती हैं। कुछ विषयों के पैठ में उतरती हैं तो कुछ को छूकर निकल जाती हैं। फिर भी हिंदी और भारतीय भाषाओं के पक्ष एवं स्थिति पर प्रकाश डालती हैं। बहुत से तथ्य जैसे हिंदी कहानी सुनने के माध्यम का विकसित होना जिसके बारे में लोगों को कम जानकारी हैं, पुस्तक बताती हैं। इसी प्रकार भारतीय भाषाओं में अनुवाद के उपकरण के विषय में जानकारी महत्त्वपूर्ण हैं। हिंदी पाठक भारी कलिष्ठ भाषा से बचता रहा हैं और इंग्लिश उर्दू इत्यादि के वाक्यों को हिंदी के साथ सहज ही स्वीकार करता रहा हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति में पढ़ा वर्ग तो इसमें दो कदम ओर आगे हैं। ये हिंदी के साथ समस्या हैं या हिंदी के लिए लाभकारी हैं।

इस विषय पर लेखक ने शायद अपने विचार अगले अंक के लिए सुरक्षित किए हैं। संदर्भ पुस्तकों एवं माध्यमों की जानकारी की कमी अखरती हैं।

प्रेमचंद अग्रवाल

पूर्व सहायक महाप्रबंधक

यूको बैंक

10.

समस्या में ज़्यादातर समाधान पर ध्यान देती पुस्तक 'राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम' मैंने राहुल खटे जी की राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम किताब पढ़ी औश्र इस से मैं बहुत ही प्रभावित हुई। विविध विषयों के यह शोध आलेख लेखक के गहन अध्ययन और के प्रखर बुद्धिमत्ता के परिचायक हैं।

"निज भाषा उन्नति है, सब उन्नति की मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय के शूल॥"

भारतेंदु हरिश्चंद्र के इसी वचन के अनुसार लेखक ने इस किताब में हमारी भाषा में ज्ञान प्राप्त करना कैसे महत्त्वपूर्ण हैं यह बताया। भारत की शिक्षा नीति और राजभाषा नीति लेख में यह स्पष्ट किया कि शिक्षा नीति में भाषा को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए, साथ ही हमें अपनी संस्कृति का महत्त्व भी समझना चाहिए। हिंदी में विज्ञान-तकनीकी साहित्य की उपलब्धता और पाठ्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए लेखक ने स्पष्ट कहा हैं हमारी मातृ भाषा या राष्ट्रभाषा में ज्ञान प्राप्त करना आसान हैं और हम हिंदी को रोजगार की भाषा बना सकते हैं। आज हिंदी रोजगार की दृष्टि से संपन्न हैं।

लेखक बैंक में राजभाषा अधिकारी के पद पर कार्यवत हैं और हिंदी भाषा में विशेष रुचि रखते हैं, अध्ययन करते मनन-चिंतन करते हैं। भारतीय भाषाओं में उपलब्ध वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दों के परिचय के साथ ही अंग्रेजी भाषा में प्रचलित शब्द किस प्रकार से संस्कृत एवं अन्य भाषाओं से व्युत्पन्न हुए हैं इसे भाषा विज्ञान के सिद्धांतों का आधार दे कर सिद्ध किया हैं। कई उदाहरणों के साथ यह स्पष्ट किया गया हैं कि कई शब्द प्रथम दृष्टया अंग्रेजी या लैटिन भाषा के पतित होते हैं, लेकिन मूलतः वह भारतीय भाषाओं के व्युत्पन्न हुए हैं। 'बैंक' शब्द भी भारतीय शब्द 'बनिक' से बिगड़कर बैंक बना हैं। लेखक के शब्दों की व्युत्पत्ति का गहरा ज्ञान हमें इस किताब से ज्ञात होता हैं।

आज का युग तकनीक का युग हैं। आज हम प्रत्येक काम में टेक्नोलॉजी का भरपूर प्रयोग करते हैं। यह पुस्तक भारतीय भाषाओं और तकनीक के बीच एक सामंजस्य बैठाने का कार्य और करता हैं। इसमें हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध तकनीकी सुविधाओं की विस्तार से जानकारी दी हैं जो शिक्षा और कार्यलयीन

कार्य देने में सहायक हो सकते हैं।

आज तकनीक के प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी को अपनाना आसान हो गया हैं। टाइपिंग की सुविधा से लेकर वॉइस टाइपिंग की सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। तकनीक, विज्ञान और भाषाएं इनका आपस में संबंध क्या हैं? हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में तकनीक का प्रयोग और उपयोग कैसा किया जा सकता हैं? ऐसे अनेक प्रश्नों के उत्तर इस पुस्तक में हमें मिलेंगे।

इसमें 'डाटामेल' भारतीय भाषाओं में ई-मेल सुविधा उपलब्ध कराने के ऐप के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई हैं। भारतीय भाषाओं में ई-मेल आई डी, निर्माण करने की विधि और प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया गया हैं। साथ ही माइक्रोसॉफ्ट-10 में भारतीय फोनेटिक की बोर्ड की जानकारी दी गई हैं जिससे भारतीय भाषाओं में काम करने की सुविधा होगी। इसके विज्ञान विशेष में भारतीय विज्ञान की परंपरा: राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के परिप्रेक्ष्य में आयोजित विशेष सेमिनार की जानकारी दी गई हैं जो छात्र-छात्राओं के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी।

'भाषा संगम' भारत सरकार द्वारा भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच एकात्मकता प्रस्थापित करने और विद्यार्थियों को मातृ भाषा के साथ अन्य प्रांतीय भाषाओं की मूलभूत जानकारी देने के उद्देश्य से बनाया गया एक कार्यक्रम हैं। इससे राष्ट्रीय एकात्मकता की भावना बढ़ने में सहायता होगी। अनेकता में एकता की भावना बढ़ेगी। लेखक ने हमें उदाहरण के साथ जानकारी दी हैं- भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के अधिकतर शब्द संस्कृत से बने हैं जिसके कारण इसमें प्रांतीय भिन्नता के साथ-साथ एक विशेष एकरूपता भी दिखती हैं। भाषा संगम कार्यक्रम से 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत’ के सपने को पूरा किया जा सकता हैं।

'स्वयंप्रभा' लेख में अपने घर ही टीवी का उपयोग शिक्षा क्षेत्र में कैसे किया जा सकता हैं इस विषय की विस्तृत जानकारी दी गई हैं जो विद्यार्थियों के लिए उपयोगी होगी। 'क्या हम सर्वश्रेष्ठ भारतीय हैं?' में भारतीय प्राचीन ज्ञान एवं विज्ञान की चर्चा की गई हैं। ‘रामचरितमानस’ जैसे विश्वप्रसिद्ध साहित्यिक रचना में साहित्य और विज्ञान अंतर्संबंध पर प्रकाश डाल हैं। हमारे देश में ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और प्रौद्योगिकी के बहुतायत उदाहरण दिखाई देते हैं। यह लेखक ने अपने पुस्तक में स्पष्ट किया हैं।

'इडियट बॉक्स और किसानों की आत्महत्याएं' लेख में यह समझाया हैं कि हमें जीवनदायी कृषि संस्कृति को समझना होगा और खेती को वैज्ञानिक तरीके से करना

होगा ताकि हमारा नाम देश ही नहीं विदेशों में भी चमकेगा चौरासी लाख योनियां या डार्विन के विकासवादी सिद्धांत और भारतीय दशावतार की मान्यताओं के बीच सामंजस्य बिठाने का प्रयास किया गया हैं।

यह पुस्तक अलग-अलग विषयों के ज्ञान का खजाना हैं। इसमें समस्याओं से ज़्यादा समाधान पर प्रकाश डाला गया हैं। ऐसा भूमिका में लेखक राहुल खटे जी ने लिखा हैं- इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के साहित्य, भाषा तकनीकी और वैज्ञानिक पहलुओं का समावेश करना हैं। लेखक अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल रहे हैं। यह पुस्तक भाषा, साहित्य, कला, शिक्षा, पत्रकारिता और अनुसंधान जैसे सभी क्षेत्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह पुस्तक भारतीय भाषाओं के प्रयोग को जन सामान्य के लिए उपयोगी बनाती हैं।

डॉ. कंचनमाला बाहेती (रांदड़)
एम.ए, बी.एड, पीएच. डी
निवृत्त प्रोफेसर,
प्रतिभा निकेतन महाविद्यालय, नांदेड़

11.

राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम के लेखक श्री राहुल खटे जी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं, उन्होनें इस पुस्तक की रचना के माध्यम से हम युवाओं को जगाने का प्रयास किया हैं। मेरे अनुसार यह पुस्तक एक झलक मात्र ही हैं, जिस पर हिंदी भाषी, अनुवादकों और हिंदी सेवियों को गहन अनुसंधान करने की आवश्यकता हैं। इन्होंने अपनी पुस्तक के द्वारा कुछ शब्दों की मूल पहचान कराने की भी कोशिश की है जो कि बड़ा सराहनीय प्रयास हैं। आज हमारे संविधान में प्रावधान होने के बावजूद हम हिंदी को वह सम्मान नहीं दे पा रहें हैं जो उसे वास्तव में मिलना चाहिए। हम कितने भी अमृत महोत्सव मनाएं, जब हम पंचमी चोले को छोड़कर खुद हिंदी बोलने का प्रयास नहीं करेंगे तब तक ऐसा ही होगा। आज हमारे प्रत्येक विभाग और मंत्रालयों में हिंदी प्रभाग हैं। इसके बावजूद अनुवादकों को राजभाषा अधिकारियों को हिंदी बोलने में शर्म महसूस होती हैं। बड़ा कटु सत्य हैं ये, यदि थोड़ी सी भी शुद्ध हिंदी बोल दे तो अधिकारियों के सिर से जाएगी। यह सब हमारे विभागों की दिशा और दशा हैं। यह सब कहीं न कहीं हमारी व्यवस्था की कमजोरी हैं कि हम शुरू से ही अपने बच्चों को विदेशी टट्टू पर बैठा देते हैं जो उसे उसकी ही संस्कृति से दूर ले जाता हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई भी भाषा मात्र भाषा ही नहीं होती अपितु वहां कि संस्कृति होती हैं और यदि हमें संस्कृति बचानी हैं तो भाषा संरक्षण बेहद आवश्यक हैं। मैं राहुल खटे जी की इस बात से पूर्णतः सहमत हूँ, जो धीरे-धीरे हमारे यहां नई पद्धति की शुरुआत हो रही हैं वो हमारी संस्कृति के लिए घातक हैं।

शत पकवान और 56 भोग जैसे व्यंजन होते हुए भी हम पिज्जे के पीछे भागते हैं जो कि सड़ी गली आटे से बनता हैं और यदि जितने मूल्य का पिज्जा हैं उतने मूल्य का यदि उसी व्यक्ति को घी खिलादे तो वह पचा नहीं सकता। यानि हम खुद बिमारियों को आमंत्रण करते हैं और पंचमी संस्कृति के सागर में इस कद्र डूबे कि अपने संस्कार, पकवान, और भाषा तक भूल गए। अमेरिका विमान शास्त्र पढ़कर इतने अच्छे हथियार बनाता हैं और यदि साधारण सा संस्कृत का श्लोक विद्यार्थियों के सामने बोल दिया जाए तो, वो मूक दर्शक बन जाते हैं जैसे मानो भूत देख लिया हो।

सच तो यह हैं कि न तो हमें भाषा की फिक्र हैं न अपनी संस्कृति की। आज

की शिक्षा सिर्फ नौकर बनाती हैं, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। एक चपरासी से लेकर राजपत्रित अधिकारी आज नौकर हैं; भले ही वो कितने बड़े ज्ञानी हो। कड़वा हैं अपितु सत्य हैं और राहुल जी में इतना तो साहस हैं जो शिक्षा पद्धति को चुनौती देकर सच कहने की हिम्मत जताई।

हिंदी दिवस के कितने भी पैंपलेट्स बनाइए कितनी भी प्रतियोगिता आयोजित करिए। जब तक आप सिर्फ पारितोषिक पर नजर रखेंगे तब तक हिंदी का विस्तार तो छोड़िए आप स्वयं भी हिंदी नहीं बोल पाएंगे। हर प्रभाग में हिंदी सेल का गठन हिंदी को बढ़ावा देने के लिए किया गया, किंतु मान्यवर जब तक मन से हिंदी बोलने की इच्छा नहीं होगी तब तक हम पिछड़े हुए ही रहेंगे। विदेशी पर्यटक 'नमस्ते' बोलते हैं लेकिन हमें शर्म आती हैं और जब आपको अपने संस्कारों और भाषा, संस्कृति पर शर्म आने लगे तब उसके पतन को कोई भी नहीं रोक सकता। ना हमें नाम पर गुमान हैं, न ही संस्कार पर बहुत से ज्ञानी ज्ञान देते हैं कि नाम बदलने से क्या होता हैं, नाम उस भाषा की पहचान बताते हैं कि आपको अपनी संस्कृति पर कितना गुमान हैं। नाम भाषा की पहचान होते हैं लेकिन हमने पश्चिमी संस्कारों की चपेट में आकर सभी गंवा दिया। दुख की बात तो यह हैं कि न तो हमने पढ़ा हैं, और न ही हमने पढ़ना हैं, आज के फोन जंजाल में हम इस कद्र उलझे कि इसने संस्कृति से तो दूर हमें अपने परिवार से भी दूर कर दिया। लेकिन यह भी सच हैं कि जो चीजें विदेशों में प्रतिबंधित होती हैं या उन पर रोक लगा दी जाती हैं वो हमारे महान भारत में लागू की जाती हैं। चाहे वो सीसीई पैटर्न हो या यातायात के साधन वहीं लेंगे और चारगुना दाम देकर लेंगे।

सरकार को चाहिए कि वो इस पर ठोस कदम उठाए। अकेले राहुल जी के द्वारा हिंदी भाषा का बिगुल फूंकने से कुछ नहीं होगा राहुल जी ने वैज्ञानिक शब्दों, एप तकनीकी अनुवाद और मशीनी अनुवाद को भी अपनी पुस्तक के माध्यम से बताया हैं। लेकिन मैं यही कहना चाहूंगा कि राहुल जी ने तो सिर्फ कुछ तार छेड़े हैं, अभी तो पूरा तराना बाकी हैं।

हमें भाषा पर काम करने की आवश्यकता हैं। सिर्फ हिंदी अधिकारी बनकर सेवानिवृत्त होना हमारा लक्ष्य नहीं हैं। हमारा लक्ष्य उस भाषा को संजोए रखना हैं। आज हर जगह उर्दू भाषा के शब्द आ रहें हैं, नाटक से लेकर गानों तक क्या जरूरत थी कि वो शब्द इस्तेमाल हो रहें हैं, हमारे पास उनके अलावा कोई शब्द ही नहीं हैं क्या। सच तो यह हैं कि हम सब आंखें और दिमाग खोलकर सो रहें हैं। हमें कोई

फर्क ही नहीं पड़ता कुछ भी हो, होता रहें।

राहुल जी इतने अच्छे पर हैं, लेकिन उनकी यह बात बड़ी अच्छी लगी कि उनमें सच बोलने की हिम्मत हैं और अनुसंधान करने की भी। आखिर में मैं सिर्फ राहुल जी से इतना ही कहना चाहूंगा कि आपने जो कार्य करने की इच्छा जाहिर की हैं, इसे अवश्य ही पूरा करें तथा राजभाषा से संबंधित और भी अंक निकालें।

राजभाषा हिंदी के नवोन्मेषी आयाम पुस्तक के लेखक राहुल खटे का हार्दिक अभिनंदन जिन्होंने इस पुस्तक के द्वारा हिंदी भाषा के प्रति अपना व्यावहारिक कर्तव्य निभाया हैं और हिंदी के व्यावहारिक और अनदेखे, अनछुए पक्षों पर अपनी बात कही हैं। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण बात जो हिंदी भाषियों तक पहुँचे वह यह हैं कि अब आप हिंदी अर्थात देवनागरी लिपि में अपना ई-मेल बना सकते हैं। यह क्षमता हिंदी में भी हैं किंतु इसके प्रचार-प्रसार के अभाव में लोगों तक बात नहीं पहुँच पाती जिसे राहुल जी ने उत्तम रीति से पहुँचाने का कार्य किया हैं। आज के इस आपाधापी वाले जीवन में और महंगाई की मार में बच्चे, बूढ़े, महिला आदि सभी घर बैठे ही अपनी रक्षा टीवी के माध्यम से कर सकते हैं। ऐसी सुविधा भारत सरकार ने MOOCS के द्वारा की हैं, जिसकी जानकारी जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया हैं, इस कारण से भी यह प्रयास अत्यंत सराहनीय हैं। भारत सरकार की अत्यंत सुंदर पहल हैं "भाषिणी" जिसमें भारत के प्रत्येक भाषा-भाषी, जन-जन अपने मन से अपनी मातृ भाषाओं के वाक्य और उनके अनुवाद का दान कर भारत सरकार की झोली में डाले, इस आहवान को भी इस पुस्तक में पुनः स्मरण कराया गया हैं। यदि वास्तव में देखा जाए तो हिंदी भाषा केवल साहित्य की भाषा ही नहीं वरन् धरती पर उपलब्ध समस्त ज्ञान विज्ञान की भाषा हैं। यह शब्दावली का विशाल सागर हैं लेकिन इस पर अभी लिखा नहीं जा रहा हैं। इस ओर भी लेखक ने ध्यान आकर्षित किया हैं जो कि वर्तमान में एक बेहतर कैरियर भी साबित हो सकता हैं। इस पुस्तक के सभी अध्याय एक नई बात संजोए हैं, इसलिए लेखक को हार्दिक साधुवाद।

विनय कुमार

अनुवादक, नई दिल्ली

सुविचार

"वास्तविक अध्यापक वह हैं,
जो पढ़ाए हुए विषय को प्रत्यक्ष प्रयोग से सिद्ध करें
और वास्तविक छात्र वह हैं जो उसे पुनः प्रयोग करें।
जो ऐसा करते हैं,
वे ही वास्तविक अध्यापक तथा छात्र हैं,
बाकी सब तो नाटक के पात्र के समान हैं।

– महान भारतीय रसायन शास्त्री रामचंद्र
(रसेंद्र चिंतामणि पुस्तक के अंश से)

'भारत उपासना पंथो की भूमि,
मानव जाति का पालना,
भाषा की जन्मभूमि
इतिहास की माता,
पुराणों की दादी एवं
परंपराओं की परदादी हैं'।